प्रथम संस्करण
अगस्त, १९६६

मूल्य : रु. ५.००

प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस,
'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली-७
विक्री केन्द्र : नई सड़क दिल्ली-६
मुद्रक : शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-३२

पुस्तक के बारे में

सन् १९२७ में पंडित जवाहरलाल नेहरू जब योरुप की सैर करने गये तो उनके मन में 'लोहे के पर्दे' के देश को जानने का कौतूहल हुआ। पेरिस के ब्रिटिश राजदूत से उन्होंने संपर्क स्थापित किया और राजदूत ने ब्रिटिश सरकार की अनुमति लिये बिना ही, उन्हें सोवियत रूस जाने की इजाज़त दे दी।

पंडित जी ने घूम-फिरकर रूस की खूब सैर की। स्वदेश लौटकर अपने लेखों में उन्होंने लिखा, "रूस हमारे लिये दिलचस्प है, क्योंकि जो बड़ी-बड़ी समस्यायें दुनिया के सामने हैं, उन्हें सुलझाने में यह हमारी मदद कर सकता है···यदि रूस इन समस्याओं को हल कर लेता है तो हिन्दुस्तान में हमारा काम आसान हो जायेगा।" आगे चलकर उन्होंने कहा, "भारत और रूस दोनों पड़ौसी हैं। रूस एक विशाल देश है जो आधे एशिया और आधे योरुप में फैला हुआ है। इस प्रकार के दो पड़ौसी देशों में या तो दोस्ती ही हो सकती है या दुश्मनी ही; एक दूसरे के प्रति उदासीनता नहीं रह सकती।"

सन् १९४७ में हिन्दुस्तान को आज़ादी मिलने के बाद पंडित नेहरू देश के कर्णधार बने। अब वे एक प्रधानमंत्री की हैसियत से सोवियत रूस की यात्रा पर चले। जून, १९५५ में यात्रा पर रवाना होने के पहले उन्होंने कहा, "मेरे ख्याल से हिन्दुस्तान रूस से बहुत कुछ सीख सकता है। दोनों देश परस्पर की मित्रता और आपसी सही संबंधों से एक-दूसरे से लाभ उठा सकते हैं···मैं केवल किसी पूर्वग्रह के बिना ही सोवियत संघ के लिये रवाना नहीं हो रहा हूं, बल्कि खुले दिमाग से मैं वहां जा रहा हूँ जिससे सोवियत जनता की भावनाओं को मैं समझ सकूं। सोवियत के लोगों से मिलने के लिये मैं बहुत व्याकुल हूं। मैं जानने के लिए उत्सुक

हूँ कि उन्होंने क्या-क्या किया है—वह सब मैं अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ। मैं वहाँ सीखने के लिये जा रहा हूँ।"

भारत और सोवियत रूस के संबंध लगभग दो हजार वर्षों से चले आते हैं। उजबेकिस्तान, ताजिकिस्तान और तुर्कमानिया की खुदाई में ब्राह्मी लिपि में भोजपत्र पर जो अभिलेख मिले हैं उनका संबंध बौद्ध ग्रंथों की मिश्र संस्कृत से बताया जाता है। इस खुदाई में कुछ मिट्टी के पात्र भी मिले हैं जिनमें बुद्ध की मूर्तियां और कुछ सिक्के हैं। इससे पता लगता है कि पुराने जमाने में भारतीय संस्कृति बौद्ध धर्म के रूप में यहाँ प्रविष्ट हुई थी।

अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी में भारत और सोवियत रूस के सांस्कृतिक संबंधों में अभिवृद्धि हुई। रूस के प्राच्यविद्याविशारद गेरासिम लेवेदेव १२ वर्ष भारत में रहे। पावेल पेत्रोव प्राच्यविद्याओं के एक-दूसरे विद्वान् हो गये हैं जिन्होंने अंग्रेजी कवि वायरन की अनेक कविताओं का संस्कृत में अनुवाद किया। इवान मिनेयेव ने भी भारतीय भाषाओं के अध्ययन को समुन्नत करने में विशेष योगदान दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी में मानवतावादी लेखक लियो तात्सताय का रूस में जन्म हुआ। तात्सताय ने १८५७ में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध झंडा उठाने वाले भारत के नौनिहालों के प्रति आदर की भावना व्यक्त की। उन्होंने शंकराचार्य, रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द जैसे मनीषियों की कृतियों का मनन किया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी पत्र-व्यवहार द्वारा तात्सताय के संपर्क में आये और उनके विचारों से प्रभावित हुए थे। मास्को के लियो तात्सताय संग्रहालय में भारत-संबंधी बहुत-सी सामग्री एकत्र है जिसमें सन् १९०९ का लिखा हुआ महात्मा गांधी का एक पत्र भी है।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर भी सोवियत संघ की यात्रा से कम प्रभावित नहीं हुए। अपनी 'रूस की चिट्ठी' ('रूशेर चिट्ठी') में उन्होंने विशेषकर शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में रूसी संपन्नताओं का उल्लेख

करते हुए लिखा है, "रूस में एक नये युग का आरंभ हो गया है जिसमें वहाँ की जनता ज्ञान की संरक्षक हो गई है···यह कितना बड़ा उदाहरण है कि उस देश की जनता सच्चे मायने में जनता बन गई है।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि आज भी रवीन्द्रनाथ सोवियत रूस में भारतीय लेखकों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। उनकी रचनाओं की लाखों प्रतियाँ प्रकाशित होती रहती हैं और अपने नाटकों से सोवियत जनता को उन्होंने मुग्ध किया है।

पूर्वकाल में सोवियत रूस में महाभारत, रामायण, पंचतंत्र तथा कालिदास आदि श्रेष्ठ कवियों की कृतियों का ही अध्ययन-अध्यापन होता था, लेकिन हिन्दुस्तान की आज़ादी के बाद, भारत के जनजीवन का अध्ययन करने के लिये, भारत की चौदह भाषाओं के तरुण लेखकों की समसामयिक रचनाओं के पढ़ने की अभिरुचि सोवियत जनता में जाग उठी है। परिणामस्वरूप, सोवियत संघ की शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी के साथ-साथ उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, मलयालम और पंजाबी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं और साहित्य की शिक्षा दी जाने लगी है। आजकल यदि हम अंग्रेजी और रूसी भाषाओं के सम्यक् ज्ञान के बिना ही सोवियत रूस में पहुँच जायें तो हमारी मातृ-भाषाओं के विशेषज्ञ रूसी दुभाषिए मिलने में जरा भी कठिनाई नहीं होगी।

हिन्दी के अध्ययन पर यहाँ विशेष जोर दिया जाता है। सोवियत संघ में कुछ ऐसे भी स्कूल हैं जहाँ शिक्षा का माध्यम हिन्दी है। भारत में स्थित सोवियत दूतावास का प्रत्येक कर्मचारी हिन्दी में बातचीत कर सकता है। इन कर्मचारियों की केवल एक ही ज़रा-सी शिकायत है कि उनके साथ बातचीत करनेवाले अधिकांश भारतीय अंग्रेजी में बोलते हैं और इसलिये अपने देश में सीखी हुई हिन्दी को वे भूल जाते हैं।

दिसंबर, १९६५ में सोवियत संघ की यात्रा से लौटकर आने के बाद, मुझे बंबई शहर और बंबई के बाहर भी विविध संस्थाओं की ओर

से भाषण देने के लिये निमंत्रित किया गया। ऐसा महसूस हुआ कि भारतीय जनता में सोवियत रूस के जीवन को जानने और समझने की खूब ही भूख है। दुर्भाग्य से, भारत में अंग्रेजी शासन के समय रूस के बारे में ऐसा प्रचार किया गया कि कुछ लोगों की शंकाओं ने तो पूर्वाग्रह का रूप ही धारण कर लिया।

कुछ प्रश्नों पर गौर कीजिये !

क्या सोवियत रूस में भिखमंगे हैं ? क्या वहाँ वेश्यावृत्ति का उन्मूलन किया जा चुका है ? क्या वहाँ बेकारी है ? कम से कम कितना वेतन वहाँ मिलता है ? क्या लोगों को पैसा बैंक में जमा करने की इजाज़त है ? क्या वृद्धों की देखभाल की जाती है ? क्या सरकारी मंत्रियों की आलोचना करने का अधिकार जनता को है ? क्या वहाँ की जनता सरकार से आतंकित नहीं है ? क्या वहाँ के लेखकों को लिखने और बोलने की आज़ादी है ? क्या विदेशों से निमंत्रित प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य वहाँ आज़ादी के साथ घूम-फिर सकते हैं ? क्या आपके साथ कोई रूसी दुभाषिया था ? क्या भारतीय भाषाओं के अध्ययन करने में सोवियत विद्वानों का कोई गूढ़ हेतु है ? क्या वहाँ भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी द्वारा समर्थित साहित्य का ही विशेषतः प्रचार किया जाता है ? आप अपने भाषणों में वहाँ की बुराइयों के बारे में क्यों कुछ नहीं कहते ? आदि।

यह कहना कठिन है कि इस छोटी-सी पुस्तक से इन सब प्रश्नों का 'संतोषजनक' समाधान हो सकेगा। फिर भी इन सब बातों की चर्चा यथास्थान की गई है।

कितनी ही बार दूरी के कारण हम अपने निकट पड़ोसी को भी समझने में ग़लती कर जाते हैं, और इस ग़लती को सुधारने का एकमात्र उपाय है पड़ोसी को निकट से देखना—उसके निकट संपर्क में आना।

संतोष की बात है कि इस दिशा में भारत और सोवियत दोनों ही सरकारें प्रयत्नशील हैं।

१४ नवंबर, १९६५ को नई दिल्ली में रूसी भाषा के अध्ययन के

लिये भारत सरकार के शिक्षामंत्री श्री एम० सी० चागला द्वारा एक शिक्षा-संस्था का उद्‌घाटन किया गया है। इससे रूसी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर हम अपने पड़ौसी मित्र देश को और अच्छी तरह समझ सकेंगे।

इसके अलावा, अभी हाल में, १२ मई, १९६६ को भारत सरकार के शिक्षामंत्री श्री चागला और विदेशों के साथ सांस्कृतिक संबंध रखने वाली सोवियत संघ की कमेटी के अध्यक्ष श्री एस० के० रोमानोव्स्की के बीच छठे कार्यक्रम को अमल में लाने के लिये एक समझौता हुआ है। यह कार्यक्रम १९६६-६७ के लिये निर्धारित किया गया है और इसके अन्तर्गत दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, शैक्षणिक और वैज्ञानिक आदान-प्रदान होगा, जिसमें दोनों देशों के शिक्षाशास्त्री, अध्यापक, विद्यार्थी, लेखक, कलाकार इंजीनियर, डाक्टर और खिलाड़ी आदि एक दूसरे के देश में जाकर वहां की संस्कृति और सामान्य जनता के जीवन का अध्ययन कर सकेंगे। ध्यान रखने की बात है कि इस योजना में एक दूसरे की राष्ट्रीय प्रभु-सत्ता का समादर करने, एक दूसरे के अन्तरंग मामलों में दखल न देने और एक दूसरे के प्रति समानता का भाव रखने का उल्लेख है।

इस पुस्तक के लिखे जाने में अनेक संस्थाओं और मित्रों की प्रेरणा रही है। मास्को के सोवियत-भारत संघ के जनरल सेक्रेटरी वी० पी० वैदाकोफ और उनके सुयोग्य सहायक जे० गोल्यूवेफ तथा वी० वी० वाय-कोफ की असीम सहायता के बिना सोवियत संघ का पर्यटन ही संभव न था। भारत और सोवियत जनता के बीच सहयोग और मित्रता की भावना में वृद्धि करने वाले बंबई के भारत-सोवियत संघ का नाम उल्लेख-नीय है, जिसके कारण यह यात्रा संभव हो सकी।

नई दिल्ली के सोवियत दूतावास के सूचना विभाग, बंबई के सोवियत कान्सुलेट जनरल की सूचना शाखा, तथा ताशकन्द की सोवियत-भारत सांस्कृतिक संघ की उजबेक शाखा और अश्काबाद की सोवियत-भारत सांस्कृतिक संघ की तुर्कमान शाखा के अधिकारियों के प्रति लेखक आभार

प्रदर्शित करना अपना कर्त्तव्य समझता है जिनसे इस पुस्तक में दिये हुए चित्र उपलब्ध हो सके।

इस पुस्तक की सामग्री समय-समय पर बंबई के 'धर्मयुग', 'नवभारत टाइम्स', 'पराग', 'नवनीत', 'टाइम्स आफ इंडिया', 'भारत ज्योति' आदि पत्रों में लेखों के रूप में प्रकाशित होती रही है।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस के अधिकारियों ने इस पुस्तक को बहुत थोड़े समय में प्रकाशित कर सकने की तत्परता दिखाई है, इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

२८, शिवाजी पार्क
बंबई-२८
१ अगस्त, १९६६

जगदीशचन्द्र जैन

क्रम

एयर इंडिया का यह विशालकाय यान अभी-अभी मास्को के हवाई अड्डे पर उतरा है।

२

बुडापेस्ट होटल,
मास्को
२६ अक्तूबर, १९६५

प्रिय कल्पना,

'एयर इंडिया' का बोइंग ७०७ एक शानदार हवाई-जहाज है। सौ से अधिक यात्री इसमें एक साथ आ सकते हैं। बैठने के लिए आरामदेह गद्देदार कुर्सियां लगी हैं और नयनाभिराम भारतीय चित्रकला से यह सुसज्जित है।

इसकी सर्विस भी इतनी ही शानदार है। भारत और इंगलैंड के बीच ४,८६२ मील का फासला है, जिसे यह [illegible] साढ़े ग्यारह घंटे में तय कर लेता है। इससे पहले मध्य-पूर्व होकर इंगलैंड पहुंचने में पौने पन्द्रह घंटे लगते थे। [illegible]

दौड़ते-भागते जमाने में सवा तीन घंटे की बचत मामूली बात नहीं है। और यह जहाज दिन-ही-दिन में अपनी यात्रा समाप्त कर लेता है, रात को परेशान होने कि जरूरत नहीं।

बम्बई से मास्को ३,६०० मील दूर है, और क्या यह अचरज की बात नहीं कि कुल साढ़े छह घंटे में हम बड़े-बड़े समुद्र और पर्वत शृंखलाओं को लांघते हुए मास्को पहुंच जाते हैं? यदि हम दुपहर का खाना खाकर वहां से सवार हों तो शाम को मास्को पहुंचकर रूसी चाय का स्वाद ले सकते हैं। ६०० मील (९३० किलोमिटर) फी घंटे की रफतार से उड़ता जो है यह!

हवाई-जहाज में प्रवेश करते ही भारतीय वेशभूषा से सुसज्जित विमान-परिचारिका (एयर होस्टेस) ने हाथ जोड़कर बड़ी विनम्रता से नमस्ते किया और हम लोग अपनी-अपनी जगह बैठ गये। चन्द मिनटों के बाद ही हवाई-जहाज के रवाना होने की घूं-घूं की आवाज सुनाई दी। वह जमीन पर चक्कर काटने लगा और देखते-देखते हवा में कुलांटे भरने लगा।

कुछ ही समय बाद हिन्दी, रूसी और अंग्रेजी में घोषणाएं सुनाई दीं। 'अपनी-अपनी बेल्ट बांध लीजिए; तेहरान होते हुए हम मास्को पहुंचेंगें; इस समय ठीक साढ़े बारह बजे हैं; साढ़े छह बजे हम मास्को पहुंच जायेंगे।'

तुम जानती हो कल्पना, हिन्दुस्तान में हम लोग कितना अनावश्यक सामान साथ लेकर सफर करते हैं। लेकिन हवाई-जहाज में ऐसा करें तो दिवाला निकल जाये। यात्रियों के सुभीते के लिए यहां दो श्रेणियां रहती है। एक फर्स्ट क्लास, दूसरी

टूरिस्ट क्लास। टूरिस्ट क्लास को 'इकोनोमी' या 'किफायत क्लास' भी कहते हैं। फर्स्ट क्लास के यात्री ३० किलो (६६ पौंड और टूरिस्ट क्लास के यात्री २० किलो (४४ पौंड) वजन ले जा सकते हैं। इसके अलावा, ओवरकोट, कंबल, छाता, छड़ी, दूरबीन, छोटा-मोटा कैमरा और पढ़ने के लिए दो-चार आवश्यक अखबार भी साथ रख सकते हैं। तुम्हें मालूम है कि चलने से पहले मैंने अपने सूटकेस का वजन करा लिया था, इसलिए मैं निश्चिंत था।

कल्पना, तुम्हें याद होगा कि तुम्हारी सहेली अनीता विमान-परिचारिका बनने के लिए कहा करती है। लेकिन यह इतना आसान नहीं जितना कि लोग समझते हैं। इन लोगों का जीवन बड़ा कठोर और संयमित होता है और इन्हें बड़े धीरज से काम करना पड़ता है। विमान-परिचारिका बनने के पहले इंटरव्यू लिया जाता है और जो लड़की खूबसूरत हो, होशियार हो, असर पैदा करने वाली हो, मुस्करा कर जवाब देने वाली हो और एक से अधिक भाषाओं की जानकार हो, उसे ट्रेनिंग के लिए चुना जाता है। उसे तीन महीने ट्रेनिंग दी जाती है, जिसमें यात्रियों के खानपान, उनकी सुख-सुविधा और स्वास्थ्य आदि सम्बन्धी बातें सिखायी जाती हैं। उसे हवाई-जहाज के मार्गों का ज्ञान होना आवश्यक है। यदि कोई यात्री या कोई शिशु रास्ते में अस्वस्थ हो जाये तो उसकी देखभाल रखना जरूरी है। और तुम्हें शायद नहीं मालूम कि यदि जहाज भरा हुआ जा रहा हो तो उसे एक मिनट की भी फुर्सत नहीं मिलती—भोजन करने तक की भी नहीं।

बम्बई से दिल्ली पहुंचने में डेढ़ घंटा लगता है। और यदि जहाज में १२० यात्री सफर कर रहे हों तो इसका मतलब हुआ कि लगभग एक घंटे के अन्दर-अन्दर विमान-परिचारिका को यात्रियों की आवश्यकताएं पूरी करनी होंगी। इस हिसाब से वह फी यात्री कुल तीस सेकिंड दे सकती है। कितने ही यात्री ऐसे होते हैं कि उनकी फर्माइश फौरन ही पूरी होनी चाहिए, नहीं तो वे गुस्से से भर जाते हैं। ऐसी हालत में विमान-परिचारिका को कितनी तकलीफ हो सकती है, इसका केवल अन्दाजा ही लगाया जा सकता है।

एक बार की बात है, किसी यात्री ने विमान-परिचारिका से पीने के लिए पानी मांगा। पानी का गिलास लेकर वह फौरन ही उपस्थित हो गयी। लेकिन यात्री को लगा कि पानी कुछ गंदा है। उसने दूसरा गिलास लाने को कहा। परिचारिका चुपचाप फिर से पानी लेकर आ गयी। संयोगवश, अब की बार पास में बैठी हुई यात्री की लड़की का हाथ गिलास को लगा और पानी बिखर गया। लेकिन तिस पर भी परिचारिका के चेहरे पर कोई शिकन दिखायी नहीं दी और उसने फिर से मुस्कराते हुए पानी का गिलास लाकर पेश किया।

मेरी विमान-परिचारिका एक पारसी युवती है। गुजराती उसकी मातृभाषा है। पूर्वी-तट के नगर कोकनद के किसी स्कूल में उसने शिक्षा पाई है। वह टूटी-फूटी फ्रेंच बोल लेती है। बहुत चाहने पर भी हिन्दी का जैसा चाहिए वैसा अभ्यास नहीं कर सकी। उसकी वेशभूषा और बोलचाल से वह बड़ी शिष्ट और सुसंस्कृत घराने की मालूम होती है। कभी वह जल्दी-जल्दी

भोजन की ट्रे लेकर आत्मविश्वासपूर्वक कदम रखती हुई चलती है। कभी यात्रियों के लिए चाकलेट, फलों का रस और ह्विस्की लेकर आती है। कभी मुस्कराती हुई उनके जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों का उत्तर देती हुई नजर पड़ती है।

यहाँ की भोजन-व्यवस्था मुझे बहुत पसन्द आयी। थोड़े में ही कितनी साफ और सुन्दर व्यवस्था है। सामने की कुर्सी के पिछले भाग में खुसी हुई प्लास्टिक की एक फोल्डिंग कुर्सी को खोल देने से छोटी-सी मेज बन जाती है। इस प्रकार परिचारिका अपने नाजुक हाथों से प्लास्टिक की बनी, खाने-पीने की छोटी-छोटी तश्तरियां और प्यालियां रख देती है। चाय और काफी में से आप जो चाहें मंगवा सकते है। ट्रे में छुरी-कांटे के साथ चाय में डालने के लिए शक्कर की एक पुड़िया भी रहती है। और हां, भोजन कर लेने के बाद मुंह-हाथ धोने की जरूरत नहीं पड़ती। इतना पानी गिराने के लिए जगह भी कहां है? इसके लिए एक छोटासा तय किया हुआ गीला रूमाल एक थैलीनुमा लिफाफे में बन्द रहता है। इसके ऊपर तस्वीरें छपी हैं जिनसे पता लगता है कि लिफाफे को फाड़कर हाथ-मुंह पोंछने के लिए किस तरह रूमाल का इस्तेमाल किया जाये। ऐसे स्थानों में जगह का कितना मूल्य है! कहां हम लोग, कि जगह की कोई कीमत ही नहीं समझते।

हवाई-जहाज के ऊपर उठते समय या नीचे उतरने के पहले सिगरेट पीने की सख्त मनाही है। यात्रियों को इस बात की सूचना बिजली के प्रकाश के संकेत द्वारा दी जाती है।

आसमान में ऊंचाई पर पहुंच कर, बाहर और भीतर का

दबाव एक जैसा बनाये रखने के लिए कानों में रूई लगाने की आवश्यकता होती है। यदि ऐसा न करें तो ऊपर जाकर दबाव कम हो जाने पर कानों में दर्द होने लगे और कभी कान का पर्दा फट जाने से खून बहने की नौबत आ सकती है। यहां रूई का भी इतना महत्व, कि वह छोटे से बन्द लिफाफे में रखकर पेश की जाती है।

बहुत से यात्री अपनी सीट पर बैठने के पश्चात् बेल्ट बांधने में बेपरवाही करते हैं, लेकिन ऐसी हालत में कभी जहाज को जरा सा धक्का लगने से अपनी सीट पर से उछलकर मुंह के बल गिर पड़ने का अंदेशा रहता है।

आपद्काल में रक्षा के लिए 'लाइफ जेकेट' भी हमारी कुर्सी के नीचे लगी रहती है। यदि दुर्भाग्यवश कभी हवाई-जहाज के इंजन में कोई खरावी पैदा हो जाये, या कोहरे आदि के कारण चालक को दिशा भ्रम हो जाये और वह मशीन पर से अपना काबू खो बैठे तो हमें घबराने या डरकर चीखने-चिल्लाने की जरूरत नहीं। ऐसे संकट के समय एकमात्र धीरज ही हमारी रक्षा कर सकता है। उस समय हमें चाहिए कि हम अपने कालर और टाई को ढीला कर लें, और यदि किसी ने ऊंची एड़ी के जूते पहने हों तो वह उन्हें निकाल दे, और लाइफ-जेकेट को पहन, वेल्ट बांधकर कुर्सी पर बैठ जाये। फिर, जहाज के चालक द्वारा दिये हुए तकिये या तह किये हुए कंबल को गोद में रखकर, उसके ऊपर अपना सिर टिका ले। उसके बाद, जहाज के ठहर जाने पर, बेल्ट खोलकर, चालक के आदेशानुसार आहिस्ता से जहाज से उतर जाये।

संकटकाल में काम आनेवाली छोटी-छोटी डोंगियों की व्यवस्था भी यहां रहती है। खुदा न ख्वास्ता, यदि जहाज किसी समुद्र या नदी में गिर पड़े तो यात्रीगण इन डोंगियों के सहारे अपनी रक्षा कर सकते हैं। इसके अलावा, अन्तर्राष्ट्रीय सहायता प्राप्त करने के लिए एक 'एमर्जेन्सी रेडियो ट्रांसमीटर' भी हवाई-जहाज में लगा रहता है, जिससे दूसरे लोग भी आपद्-ग्रस्त यात्रियों की रक्षा में सहायक हो सकें।

लाउडस्पीकर पर घोषणा हो रही है। हम ३,३०० फुट ऊंचे उड़ रहे हैं; तेहरान पार करके काकेशस पर्वत शृंखला की की ओर बढ़ रहे हैं, अब हम ,६००० फुट की ऊंचाई पर पहुंच गये हैं। मैं विचार-सागर में गोते लगा रहा हूं कि क्या मैं सचमुच इतने ऊंचे पहुंच गया हूं ? यह तो अच्छी बात है कि हवाई-जहाज एयर कण्डीशंड है, इसलिए यात्रियों को सांस लेने आदि की तकलीफ नहीं होती।

और मेरी आखें हवाई-जहाज के भांति-भांति के नयनाभिराम कलात्मक चित्रों की ओर धंसी चली जा रही हैं। ऐलीफेंटा के ब्रह्मा, विष्णु और महेश की त्रिमूर्ती का जगत् प्रसिद्ध चित्र तुमने देखा होगा। पिछले दिनों मेरे साथ तुमने अजंता एलोरा की सैर की थी। अजंता के अनेक चित्र यहां दिखायी दे रहे हैं, जो भारतोय चित्रकला का अनुपम नमूना हैं। नृत्य-मुद्रा के सुन्दर चित्र यहां अंकित हैं। सामन्त लोग हाथी, घोड़े और पालकियों में सवार होकर गमन कर रहे हैं। ऊंट पर बैठे हुए नायक और नायिका रेगिस्तान को पार कर रहे हैं। नायिका पर्दे के अन्दर रथ में सवार है और हृष्ट-पुष्ट सुन्दर बैल रथ

को खींच रहे हैं। नावों को खेते हुए मल्लाहों का दृश्य बड़ा भव्य जान पड़ता है। कहीं हरिण चौकड़ी भर रहे हैं, शेर जंगल में भाग रहे हैं, गर्दन मोड़कर शुक वार्तालाप में तल्लीन जान पड़ते हैं और मयूर अपने सुन्दर पंख फैलाये आनन्द-विभोर होकर नृत्य कर रहे हैं।

और मैं बियावान जंगलों तथा हिम से आच्छादित पर्वत-श्रृंखलाओं को पार करके उड़ा जा रहा हूं, अनन्त की ओर—तुम सबसे दूर, बहुत दूर। अरब सागर को पार करके हम शीराज़ पहुंच गये हैं, और वहां से ईरान की सीमा में दाखिल हो रहे हैं। हम ईरान की राजधानी तेहरान के ऊपर से उड़ रहे हैं, और बिना कहीं रुके, आगे बढ़े चले जा रहे हैं। अरे—यह तो काकेशस पर्वत श्रृंखला शुरू हो गयी और हम सोवियत संघ की सीमा में आ गये हैं! तुमने भूगोल में पढ़ा होगा कि हिन्दुकुश पर्वत पश्चिम की ओर फारस के उत्तर में एलवर्ज पर्वत-श्रृंखला में से होकर गुजरता है, और उसी की एक शाखा काकेशस है।

हवाई-जहाज में बैठकर नीचे देखने से सारी चीजें छोटी-छोटी दिखायी पड़ती हैं। यह भी कुदरत का एक करिश्मा है कि भीमकाय तरंगों से उद्वेलित सागर एक सरोवर बन गया है और अपने उत्तुंग शिखरों से आकाश को स्पर्श करने वाली पर्वत-श्रृंखलाएं एक टेकड़ी जैसी दिखायी देने लगी हैं। सीट के पास कांच की छोटी-सी खिड़की में से झांककर देखने से पहाड़ों की चोटियों पर जमे हुए बर्फ और भगदड़ मचाते हुए मेघ-पुंजों के सिवाय और कुछ भी दृष्टीगोचर नहीं होता। लगता है

चन्द्रमा ने अपनी शुभ्र ज्योत्स्ना से सारी पृथ्वी को वाहुपाश में आबद्ध कर लिया है। बादल बहुत दूर नीचे रह गये हैं और हम बादलों के ऊपर उड़ रहे हैं।

काकेशस पर्वत के पश्चिम की ओर कास्पियन सागर दिखायी दें रहा है, जो दक्षिण और पूर्व की ओर पहाड़ों से घिरा है। नीचे की ओर मरकत मणि जैसे हरे-भरे एल्पाइन के चरागाह और अखंड वन-राशि दिखायी दे रही है। तुमने पढ़ा होगा कि वास्तव में यह सागर एक भील है, और वड़ी भील होने के कारण इसे सागर कहने लगे हैं।

साढ़े छह वजने का समय हो रहा है। मास्को टाइम हमारे टाइम से अढ़ाई घंटे पीछे है, इसलिए घड़ी की सुई पीछे कर दी गयी है। तुम जानती हो कि दुनिया में ग्रीनविच टाइम स्टैंडर्ड टाइम माना जाता है। विज्ञान के अनुसार हमारी गोलाकार पृथ्वी सूर्य के इर्द-गिर्द चक्कर काटा करती है। और अपनी कीली के चारों ओर घूमने में इसे लगभग चौबीस घंटे लग जाते हैं। इस हिसाब से दुनिया के जो-जो देश जब-जब सूर्य के सामने पड़ते हैं, उस हिसाव से घड़ी के घंटों का समय मापा जाता है। इस क्रम में पहले ग्रीनविच ध्रुव-वृत्त के सामने सूर्य आता है, इसलिए ग्रीनविच का समय दुनिया का स्टैंडर्ड समय माना गया है। उसके वाद, जैसे-जैसे पृथ्वी परिक्रमा करती है, वैसे-वैसे प्राग, लेनिनग्राड, वगदाद, अश्काबाद, आदि नगर सूर्य के सामने आते हैं। ग्रीनविच लंदन के नजदीक है, इसलिए जब लंदन में दोपहर के बारह बजते हैं तो प्राग में दोपहर का एक, लेनिनग्राड में दो, बगदाद में तीन, अश्काबाद में चार,

दिल्ली में पांच, ल्हासा में छह, हनोई में सात, पीकिंग में आठ, क्वेटा में नौ, मेलवोर्न में दस, कामेनस्कोवा में ग्यारह और न्यूजीलैंड में रात के बारह बजते हैं। एक जगह लोग दफ्तरों में काम करते रहते हैं और दूसरी जगह गाढ़ निद्रा में सोये रहते हैं।

हिन्दुस्तान का टाइम ग्रीनविच के टाइम से साढ़े पाँच घंटे आगे है। मास्को में जब सुबह के साढ़े नौ, चेकोस्लोवाकिया और जर्मन में सुबह के साढ़े सात, बेल्जियम और फ्रांस में साढ़े छह, और अमरीका में रात के साढ़े ग्यारह बजे होते हैं तो हमारे देश में दोपहर के बारह बजते हैं। इसका मतलब हुआ कि जब अमरीका वाले सोये रहते हैं तो हम अपने काम में मशगूल रहते हैं। इससे मास्को पहुंच कर घड़ी को अढ़ाई घंटे पीछे करने का कारण तुम्हारी समझ में आ गया होगा।

लाउडस्पीकर की वही परिचित ध्वनि—हम मास्को पहुंच रहे हैं; बेल्ट बाँध लीजिए ; सिगरेट मत पीजिए ; यहाँ का तापमान शून्य से तीन डिग्री कम है ; कल छह डिग्री कम था; पासपोर्ट तैयार रखिए; अगर कोई तकलीफ हुइ हो तो क्षमा कीजिए ।

सूर्यदेव अपनी लालिमा बिखेरते हुए अस्ताचल की ओर प्रयाण कर रहे हैं। क्षितिज गहरी लाली से रक्तिम हो गया है; धरती लाल हो उठी है। हम नीचे की ओर सरक रहे हैं। नगर की गगनचुम्बी अट्टालिकाओं की धुंधली रेखा दूर से दिखायी दे रही है। आसपास की इमारतें विद्युत-प्रकाश से जगमगा उठी हैं।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

●

पुश्किन मार्ग पर पुश्किन की मूर्ति

२

बुडापेस्ट होटल,
मास्को
२६ अक्तूबर, १९६५

प्रिय कल्पना,

विमान-परिचारिका को धन्यवाद देकर अपने जहाज से हमने विदा ली। नीचे उतरे तो हवाई-अड्डे पर पानी नजर आ

रहा था। मैंने समझा, शायद वर्षा हुई हो। जहाज के यात्रियों की इन्तजार में खड़ी हुई बस में हम सवार हो गये। शून्य से तीन डिग्री कम तापमान होने से, ओवरकोट पहन लेने पर भी कंपकपी छूटने लगी। वास्तव में वह वर्षा का पानी नहीं था, एक-दो दिन पहले गिरने वाले बर्फ का ही पानी बन गया था।

बस से उतरते ही हमारी प्रतीक्षा में खड़े हुए सोवियत-भारतीय सांस्कृतिक संघ के दो रूसी मित्रों ने हमारा स्वागत किया। हम लोगों के पहुंचने की खबर उन्हें उसी दिन दोपहर को मिली थी, और खबर पाते ही वे फौरन चल पड़े।

मास्को में हवाई-जहाज के आवागमन के चार अड्डे हैं। यह अड्डा शेरेमेत्योवो नाम का अन्तर्राष्ट्रीय अड्डा है। जहां से विदेशों के लिए हवाई-जहाज छूटते हैं और जहाँ विदेशी यात्री आकर उतरते हैं। यह अड्डा १९६१ में बनाया गया था। इस विशाल हवाई-अड्डे का टर्मिनस अल्युमिनियम, शीशा और कंक्रीट का बना हुआ है। टर्मिनस के दोनों ओर बड़े-बड़े मैदान हैं, जहाँ ध्वजदंड लगे हुए हैं; किनारों पर वृक्ष-पंक्ति दिखायी दे रही है।

शहर यहाँ से लगभग बीस मील की दूरी पर होगा। हम लोग मोटर में सवार हो गये। मास्को शहर बहुत सुन्दर है और बहुत दूर तक लम्बा चला गया है। सड़क के दोनों ओर बड़ी-बड़ी इमारतें दिखायी दे रही हैं; दूकानें सामानों से भरी हुई हैं, ट्राम-गाड़ियाँ आ-जा रही हैं, बसें दौड़ रही हैं, सड़क के किनारे या पार्कों में राष्ट्र के उन्नायकों की मूर्तियां बनी हुई हैं और यह सब बिजली के तेज प्रकाश में कितना भव्य लग रहा

है ! सड़कों पर जनसमूह उमड़ा पड़ रहा है, नर और नारियां हाथ में हाथ डाले कुछ फुसफुसाते हुए बढ़े चले जा रहे हैं, इस घोर सर्दी में भी ।

मुझे एकदम शान्त और विचारमग्न देखकर मिस्टर 'जी' से न रहा गया । वे पूछ बैठे-क्यों प्रोफेसर साहब, चुप क्यों हैं ? क्या उनकी याद सता रही है, जिन्हें हिन्दुस्तान छोड़ आये हैं ? उत्तर में मैंने कहा -'मेरे अजीज, शायद आप नहीं जानते कि आज मेरी जिन्दगी के एक बड़े स्वप्न का साक्षात्कार हो रहा है, उसका मौन भाव से रसास्वादन करने का मैं प्रयत्न कर रहा हूं । मिस्टर जी० मेरे उत्तर से शायद कुछ प्रसन्न हुए और खुशी-खुशी में उन्होंने एक शेर कह डाला । मेरे डेलीगेशन के दूसरे सदस्य डाक्टर मुकर्जी उर्दू नहीं जानते थे, इसलिए मिस्टर जी० ने शेर का अर्थ उन्हें अंग्रेजी में समझा दिया ।

मिस्टर जी० ने पाँच वर्ष तक उर्दू का अभ्यास किया है; अढ़ाई वर्ष वे पाकिस्तान में रह चुके हैं । उर्दू बहुत साफ और सुथरी बोल लेते हैं । बड़े खुशमिजाज और मजाकिया भी हैं । तुम्हें यदि लतीफे सुनने का शौक हो तो कुछ दिन यहां आ कर इनकी सोहबत में रहो ।

बहुत अरसे तक अपने बीबी-बच्चों के साथ वे करांची रहे हैं । शहर के अड़ौस-पड़ौस के बच्चों को विदेशी लोग प्रायः अपने बच्चों के साथ नहीं खेलने देते थे । लेकिन मिस्टर जी० बच्चों में कोई भेदभाव नहीं रखते थे । वे उन्हें शायद अन्तर्राष्ट्रीय सम्पत्ति मानते थे ।

मिस्टर जी० पाकिस्तान में तेल सर्वेक्षण विभाग के [illegible]

स्कूल, सिनेमा और नाट्यगृह आदि की भी व्यवस्था की गयी है। एक इमारत की ओर इशारा करते हुए उन्होंने बताया कि यह एक बहुत खूबसूरत इमारत है और यहां रहने के लिए उन्होंने भी अर्जी दी थी, लेकिन पता चला कि हाल ही में जिन्होंने शादी की है, ऐसे लोगों को यहां जगह दी जाती है। यह भी पता चला कि तनख्वाह का लगभग पांच फी-सदी ही मकान के किराये में देना पड़ता है। ट्रामगाड़ियां कम की जा रही हैं, और धीरे-धीरे बसों के आवागमन की व्यवस्था भी जमीन के नीचे से होकर ही की जाने वाली है।

डा० मुकर्जी विज्ञान के प्रोफेसर हैं और मैं साहित्य का। साहित्य और विज्ञान के सम्बन्ध में चर्चा छिड़ गयी। मिस्टर जी० का कहना था कि साहित्य से जीवन का घनिष्ठ सम्बन्ध है, इसलिए साहित्य के बिना केवल विज्ञान उपयोगी नहीं हो सकता। दुर्भाग्य से हमारे देश में साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की अभिरुचि कम होती जा रही है।

लगता है, मिस्टर जी० अपने नवागन्तुक भारतीय मित्रों के समक्ष पहली मुलाकात में ही सब-कुछ कह देना चाहते हैं। वे कह रहे हैं—"आप जानते हैं कि पिछले ४७-४८ वर्षों में सोवियत रूस को कितना संघर्ष करना पड़ा है? सबसे पहले उसने जारशाही से मोर्चा लिया, जापान के साथ लड़ाई लड़ी और फिर हिटलर के खूंखार सैनिकों के छक्के छुड़ाकर हिटलर-शाही का खात्मा किया। हमारे देश में बहुत कम परिवार ऐसे मिलेंगे, जिन्होंने इस संघर्ष में सक्रिय भाग न लिया हो। यही कारण है कि हमारे देश के वासियों में भावना की तीव्रता

देखने में आती है। जिन देशों ने कभी युद्ध देखा नहीं और जो अपने अस्त्र-शस्त्र और गोला-बारूद खपाने के लिए दूसरे देशों को युद्ध के लिए उकसाते रहे हैं, उनके मन में क्या कभी सहानुभूति जाग सकती है? आप तो जानते हैं, वियतनाम में क्या हो रहा है? वहां न्यूक्लर बम क्यों बरसाये जा रहे हैं?"

बातचीत के दौरान मिस्टर जी० के मुंह पर भावावेश की रेखा खिंच आयी थी। विषयान्तर करते हुए मैंने प्रश्न किया—लोग कहते हैं कि सोवियत संघ में विदेशी टूरिस्टों पर पाबन्दी है, क्या यह सच है? उन्होंने उत्तर दिया—विदेशी यात्रियों के ठहरने के लिए यहां कितने ही होटल हैं। और यदि वे लोग सोवियत की बनी कोई चीज खरीदना चाहते हों तो होटलों में इस बात की व्यवस्था है कि वे अपनी मुद्रा देकर, कुछ सस्ते में ही, चीज खरीद सकते हैं। उन पर किसी तरह की पाबन्दी नहीं है। हमारे हवाई-अड्डे, सैनिकों की बैरक और कुछ खास कारखानों को छोड़कर, अन्य स्थानों की फोटो खींचने की भी उन्हें इजाजत है।

फिर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बारे में चर्चा छिड़ गयी। 'हिन्दुस्तान में लड़ाई का क्या हाल है?' इस प्रश्न के उत्तर में मैंने कहा—हिंदुस्तान एक शान्तिप्रिय देश है और किसी देश पर आक्रमण कर बैठना उसकी परम्परागत नीति के विरुद्ध है। इस सम्बन्ध में सोवियत संघ की नीति का खुलासा करते हुए उन्होंने बताया कि सोवियत संघ की सरकार ने इस बारे में जो बयान दिया है, उसका यही मतलब है कि वह लड़ाई को दोनों देशों के लिए हानिकारक समझती है।

आप लोगों ने जो थोड़ा-बहुत निर्माण-कार्य किया है, इस जंग से उसकी बर्बादी हो जायेगी। आप दोनों भाई-भाई हैं, कारण कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान का ही एक टुकड़ा है। फिर भाई-भाई में लड़ाई कैसी? यदि इस संघर्ष से किसी को लाभ हो सकता हो तो मुट्ठी-भर विदेशियों को जो आप दोनों की लड़ाई को ललचायी हुई आंखों से बड़ी दिलचस्पी के साथ निहार रहे हैं।

चीन के बारे में बोले—चीनी लोग बड़े अजीब हैं; उन्हें समझना टेढ़ी खीर है। मन-ही-मन मैं सोच रहा था कि चीन हिन्दुस्तान के साथ ही नहीं, सोवियत संघ के साथ भी उलझ बैठा है और क्या यह गुरु-शिष्य का संघर्ष नहीं है?

बातों-बातों में ही न जाने कब और कैसे इतना लम्बा रास्ता कट गया। हमारी मोटर एक गली की ओर मुड़ी और एक बड़ी-सी इमारत के सामने रुक गयी।

यही बुडापेस्ट होटल है, जहां हम लोगों के ठहरने का इन्तजाम किया गया है। तुम जानती हो कल्पना, बुडापेस्ट हंगेरी की राजधानी है और अवश्य ही उस देश की लज्जतदार तश्तरियों के आस्वादन करने का सौभाग्य यहां प्राप्त होता होगा।

होटल बहुत साफ-सुथरा और व्यवस्थित है। लिफ्ट चलाने से लेकर बड़े-से-बड़े प्रबन्ध करने तक सब काम महिलाओं के सुपुर्द है। लिफ्ट में बैठकर हम लोग अपने कमरे में पहुँचे। हाथ-मुंह धोने से कुछ ताजगी आयी और भोजन के लिए हम भोजनगृह में उपस्थित हो गये।

भोजनगृह का हाल काफी बड़ा है। छुरी-कांटों तथा प्याले

और तश्तरियों आदि से सजी हुई कितनी मेजें और कुर्सियां लगी हुई हैं। कितने ही स्त्री-पुरुष भोजन करने आये हैं। बिजली के जगमगाते हुए प्रकाश से उनके मुख आलोकित हो रहे हैं। भोजन का 'मेनू' पेश किया गया है और 'वेटर' युवतियाँ ग्राहकों की फर्माइश अपनी छोटी-सी डायरी में लिखती जा रही हैं। मेरे शाकाहारी होने के कारण मेरा दुभाषिया 'वेटर' युवती से मेरे भोजन के सम्बन्ध में गंभीरतापूर्वक बातचीत कर रहा है।

हम लोगों को मेज पर हिन्दुस्तान की एक छोटी-सी तिरंगी झंडी लगी है जो शायद हमारे देश का जयघोष करती हुई हम लोगों के आगमन की सूचना दे रही है। भोजन का पहला 'कोर्स' आ चुका है। मेरा दुभाषिया बड़े प्रेमपूर्वक कह रहा है—भूखे मत रहिए, तकल्लुफ करने की जरूरत नहीं। देखिए, यह लखनऊ नहीं है, पेट-भरकर खाइये। सर्दी का मौसम है। खायेंगे नहीं तो घूमे-फिरेंगे कैसे ?

भोजनगृह भोजन करनेवालों से भरा है; एक भी सीट खाली दिखायी नहीं देती। भोजन के बाद या बीच-बीच में लोग 'डांस' (नृत्य) कर रहे हैं। कोई किसी के भी साथ 'डांस' में भाग ले सकता है। स्त्री और पुरुष एक-दूसरे के मुंह को पास-पास लाकर कुछ कानाफूसी-सी करते हुए प्रेम की मुद्रा में नृत्य कर रहे हैं। सब अपने-अपने में व्यस्त हैं, इसलिए नृत्य करते हुए जोड़ों की ओर देखने की भी किसी को फुर्सत नहीं। एक कोने में दो अधेड़ पुरुष एक-दूसरे को थामे नृत्य करने में मशगूल हैं।

भोजन करते-करते यहां के नृत्य को मैं बड़े गौर से देख रहा हूं और पता नहीं क्यों, मुझे बड़ा अजीब-सा लग रहा है। क्या इन नृत्यों को लोक-नृत्य का ही एक प्रकार कहा जा सकता है ? क्या ये नृत्य किंचित् अंश तक दमित भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान कर, मनुष्य को स्वस्थता की ओर ले जाने में सहायक नहीं होते ? और दूसरी ओर हमारे देश में दिखायी जाने वाली हिन्दुस्तानी फिल्मों की ओर मेरा ध्यान बरबस खिच जाता है, जहां कि स्त्री और पुरुष बिना एक-दूसरे को स्पर्श किये, दूर खड़े-खड़े ही प्यार किया करते हैं। भोजनगृह में उपस्थित कतिपय युवतियों को देखकर लगा कि पश्चिम की फैशनपरस्ती यहाँ नहीं है।

मास्को में मेरा यह पहला दिन है—या कहो कि पहली रात है। सब जगह नयापन दिखायी दे रहा है। इतनी नयी चीजें देख रहा हूँ कि सबकी नूतनता को ग्रहण कर लेना संभव नहीं लगता।

रात के दस बज चुके हैं—यानी हिन्दुस्तान के साढ़े बारह बजे, जबकि तुम गाढ़ निद्रा में सोई पड़ी होंगी, और यह समय मैंने तुम्हें पत्र लिखने के लिए चुना है।

मेरे दुभाषिए को घर से चले सारा दिन हो गया है। उन्हें अपने घर पहुँचना है—उनके बीबी-बच्चे उनकी इन्तजारी में होंगे। उन्होंने घर पहुँचने की सूचना टेलीफोन से दे दी है। वे जाने की तैयारी में हैं। जाने के पहले उन्होंने फैज अहमद

'फैज़' का एक शेर सुनाया—

रात यूं दिल में तेरी खोई हुई याद आई ।
जैसे वीराने में चुपके से वहार आ जाये ।
जैसे सहराओं (जंगलों) में हौले से चले वादे नसीम (हवा) ।
जैसे बीमार को वेवजह करार आ जाये ।

और 'दास्तवदानिया' (खुदा हाफिज) कहकर वे चले गये, कल सुवह फिर से मिलने के लिये ।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

क्रेमलिन के प्रभावोत्पादक दृश्यों में से एक जार के जमाने की तोप। तोप के गोले भी रखे हुए हैं।

३
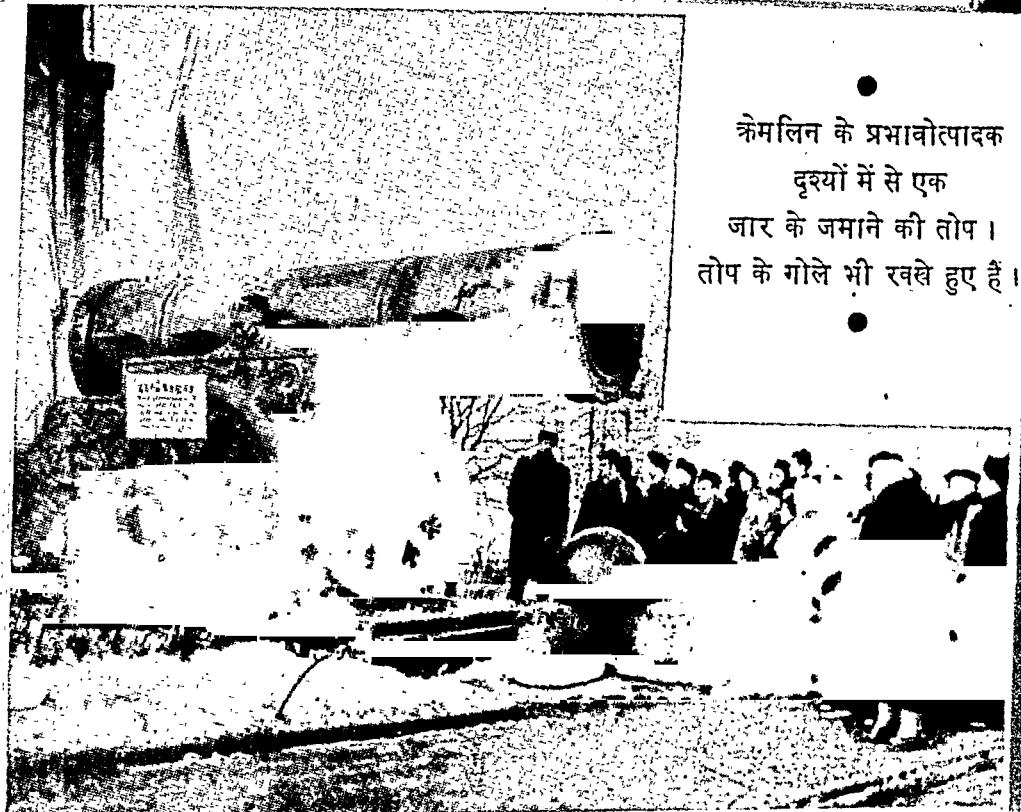
बुडापेस्ट होटल
मास्को
२८ अक्तूबर, १९६५

प्रिय कल्पना,

सोवियत संघ दुनिया की एक बड़ी शक्ति है, जिसके पास शक्तिशाली उद्योग और अत्यन्त विकसित कृषि व्यवस्था है। इसका क्षेत्रफल दो करोड़ चौबीस लाख वर्ग-किलोमीटर है और यह यूरोप के पूर्वी भाग तथा एशिया के उत्तरी और मध्य भाग में फैला हुआ है। यों कहो कि सारी पृथ्वी के जितने क्षेत्र में लोग आबाद हैं, उसके लगभग छठे हिस्से में यहां के लोग बसते हैं। अमरीका की अपेक्षा यह ग्रढ़ाई गुना,

हिन्दुस्तान की अपेक्षा सात गुना, जापान की अपेक्षा साठ गुना और इंग्लैंड की अपेक्षा यह नव्वे गुना बड़ा है।

सोवियत संघ इतना विस्तृत देश है कि व्लैदीवोस्तोक (प्रशान्त महासागर का एक बन्दरगाह) में जब सूर्यास्त होता तो मास्को में प्रातःकालीन सूर्य अपनी किरणों को विखेरता हुआ उदित होता है। इस प्रदेश के उत्तरी भाग में जो हवा बहती है, वह ग्रीष्म ऋतु में भी बर्फ की चट्टानों को धकेलकर आर्कटिक सागर के तटों पर फेंक देती है। यहां के दक्षिणी प्रदेश इतने उष्ण हैं कि पेड़ों पर लगी हुई खजूर आपसे-आप पक जाती हैं। मध्य-एशिया के क्षेत्र भूमध्यरेखा से भी अधिक उष्ण हैं—इतने उष्ण कि कराकुम (काली रेत) के झुलसते हुए रेगिस्तान में यदि अण्डा रख दिया जाये तो वह स्वयमेव पक जाता है। और यदि हम उत्तरी प्रदेशों की यात्रा करते हुए कहीं साइबेरिया पहुँच गये तो उत्तरी ध्रुव से भी अधिक सर्दी यहां महसूस होगी। सर्दी के मारे यहां के थर्मामीटर का पारा और भाप तक जम जाती है। हवा के सर्द और पतली होने के कारण सांस लेना कठिन होता है।

यहां की प्राकृतिक शोभा भी निराली है। बाल्टिक सागर का तट सदाहरित सरपत के वृक्षों से शोभायमान रहता है। प्रशान्त महासागर दूर तक फैला हुआ है, तथा नक्शे में उसके अन्तर्गत कितने ही द्वीप और समुद्र दिखायी दे रहे हैं। कास्पियन सागर दुनिया का सबसे बड़ा सागर कहा जाता है, जो अनेक द्वीपों से घिरा है। पामीर, त्येनशान, अल्ताई और काकेशस पर्वतों की हिमाच्छादित चोटियां कितनी ऊंची चली गयी हैं।

पीक कम्युनिज्म, जो पहले माउण्ट स्टालिन के नाम से प्रसिद्ध था, २४,३६० फुट ऊंचा है। बैकाल दुनिया की सबसे गहरी झील मानी जाती है।

यहां की आबादी २२ करोड़ से अधिक है। आबादी के मामले में चीन सबसे आगे है। दूसरा नम्बर हिन्दुस्तान का है और सोवियत संघ तीसरे नंबर पर आता है। १९५९ की जनगणना के अनुसार, यहां १०९ मुख्य जातियों की गिनती की गयी थी। यहां हर प्रकार की कच्ची धातुएं, कोयला, और तेल पाया जाता है। मिट्टी यहां की बहुत उपजाऊ है, जिससे गेहूं, चावल जौ तथा कपास और सन काफी मात्रा में पैदा होते हैं। यहां के समुद्रों, झीलों और नदियों में भांति-भांति की मछलियां भरी पड़ी हैं; तथा जंगलों में तरह-तरह के उपयोगी पेड़ और समूरवाले जानवर पाये जाते हैं।

तुम जानती हो पहले रूस में जारशाही चलती थी, लेकिन सन् १९१७ में लेनिन के नेतृत्व में जो अक्तूबर-क्रांति हुई, उससे देश की कायापलट हो गयी और पिछले ४७ वर्षों में उद्योग-धंधों और कृषि के क्षेत्र में यहां की जनता ने आशातीत उन्नति की है।

अस्तु, आज 'फ्रैंडशिप हाउस' (मित्रतागृह) जाने का कार्यक्रम है। नाश्ता करने के बाद अपने दुभाषिए के साथ हम लोग चल पड़े। 'फ्रैंडशिप हाउस' ६ उलित्सा, कल्वानिन रोड पर अवस्थित है। इस संस्था का काम है, विदेशों के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बढ़ाने के लिए यहां के लोगों को आमंत्रित करना और सोवियत संघ के जन-जीवन से उन्हें परिचित

कराना।

'फ्रैंडशिप हाउस' की इमारत में पहले कोई व्यापारी रहा करता था। यहां गिरजाघर के कुछ चिह्न नजर आ रहे हैं जिससे पता लगता है कि घर के अन्दर ही पूजा-पाठ की व्यवस्था थी। अन्य अनेक कलापूर्ण वस्तुओं से यह घर सज्जित है।

पहली मंजिल पर कोई कांफ्रेंस चल रही है। वक्ता महोदय रूसी में भाषण दे रहे हैं और श्रोताओं के कानों में एक ध्वनियंत्र लगा हुआ है, जिससे वे अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच और स्पेनिक भाषाओं में उसे समझते जाते हैं। पास ही एक छोटी-सी लाइब्रेरी है, जहां अनेक भाषाओं की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं रक्खी हुई हैं। लाइब्रेरी की देखरेख करने वाली महिला बड़ी क्रियाशील मालूम हुई। वह बहुत अच्छी अंग्रेजी बोलती है। उसने कुछ पुस्तकें हम लोगों को भेंट कीं।

कल यहां उन रूसी मित्रों की मीटिंग होने वाली है, जो भारत में रह चुके हैं। वे श्रोताओं को भारत सम्बन्धी अपने अनुभव सुनायेंगे। भारतीय दूतावास के लोगों को भी आमंत्रित किया गया है। भारतीय नृत्य और संगीत आदि मनोरंजक कार्यक्रम की व्यवस्था है। लेकिन हम लोगों का तो कार्यक्रम बन चुका है, इसलिए इस कार्यक्रम में सम्मिलित होना संभव नहीं।

प्रोफेसर अलेक्ज़ेंड्र बाकोव सोवियत-भारतीय सांस्कृतिक संघ के अध्यक्ष हैं। उनकी क्रियाशीलता को देखकर कोई नहीं कह सकता कि वे सत्तर पार कर चुके हैं। डील-डौल में लम्बे और

पूरे हैं । अनेक बार भारत की यात्रा कर चुके है; अंतिम बार १९६३ में गये थे । फिर से जाने की अभिलाषा है, लेकिन डाक्टर का परवाना मिले तब न ? प्रोफेसर द्याकोव सोवियत संघ के जाने-माने विद्वानों में माने जाते हैं । उनके अनेक शिष्य यहां के विश्वविद्यालयों में अध्यापन का कार्य करते हैं । भारत की राष्ट्रीय समस्यओं का आपने अध्ययन किया है । विशेष करके— साम्प्रदायिक और भाषा सम्बन्धी समस्याओं का । भाषा सम्बन्धी आपके कुछ लेखों का अंग्रेजी अनुवाद भारत-सोवियत सांस्कृतिक संघ की 'ऐमिटी' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है । सम-सामायिक भारतीय इतिहास के बारे में लिखी हुई आपकी पुस्तक पाठयक्रम के रूप में पढ़ायी जाती है । प्रोफेसर द्याकोव साफ उर्दू बोलते हैं । पंजाबी भाषा पर भी आपका अधिकार है ।

क्रेमलिन का दृश्य बड़ा प्रभावोत्पादक लग रहा है । इसकी प्रत्येक मीनार, प्रत्येक भवन सोवियत राज्य के शानदार इतिहास का प्रमाण है । स्वच्छ और साफ-सुथरी सड़क दूर तक चली गयी है । एक ओर क्रेमलिन की ऊंची दीवारों के ऊपर जारकालीन गिरजों के गुंबज हैं, और दूसरी ओर मास्को-निवासियों की गृह-पंक्तियां दिखायी दे रही हैं । जार के जमाने की एक तोप रक्खी हुई है जिसे मास्को के आसपास से आनेवाले दर्शक बड़ी उत्सुकता से देख रहे हैं । उनकी वेशभूषा से लगता है कि वे लोग कहीं दूर देहात के रहने वाले है । इसे आन्द्रेय चोखोव ने १८५६ में बनाया था । वह तोप कभी काम में नहीं आयी, केवल देखने की चीज बनी रही ।

इसका वजन ४० टन है। तोप के गोले भी पास में रक्खे हुए हैं और तुम जानती हो एक गोले का कितना वजन है ? एक टन ! यहां एक घंटा भी है, जो ऊपर बुर्जी में लटका हुआ था। यह रूस का सबसे बड़ा घंटा है। इसका निर्माण १७३० में हुआ था; इसका वजन है २०० टन। क्रेमलिन में आजकल सोवियत संघ की सर्वोच्च एवं रूसी संघ की सर्वोच्च सोवियत के दफ्तर हैं।

लेनिन की समाधि के दर्शन करने के लिए हजारों नर-नारियों की भीड़ दिखायी दे रही है। दूर तक नजर डालने पर अपार जनसमूह दीख पड़ रहा है। पता नहीं चलता कि कतार कहां से शुरू होती है। कतार में स्त्रियाँ, बच्चे और सैनिक सभी शामिल हैं। कहते हैं कि प्रायः रोज ही ऐसी भीड़ यहाँ लगी रहती है।

अतिथि होने के कारण हम लोगों को कतार के आखिर में खड़े होने की नौबत नहीं आयी। हमारे दुभाषिए ने वहाँ उपस्थित एक सैनिक अधिकारी से इजाजत लेकर हमें कतार के बीच में ही खड़ाकर दिया। और कतार के साथ-साथ हम लोग सरकने लगे।

समाधि के द्वार पर दो नौजवान संतरी बड़े निश्चल भाव से बुत जैसे खड़े हुए हैं—केवल उनके पलकों की झपक दिखायी पड़ रही है। द्वार के एक तरफ दीवाल से लगी हुई वर्तुलाकार पुष्पमालाएं रक्खी हुई हैं, समाधि पर चढ़ाने के लिए।

सीढ़ियों से नीचे उतरने पर, संगमर्मर की वेदी पर कांच के अंडाकार आवरण में कृत्रिम पीली रोशनी के नीचे लेनिन

का शव दिखायी दे रहा है, जिसे कोई रासायनिक मसाला लगाकर उनकी मृत्यु के बाद सन् १६२४ से ही सुरक्षित रक्खा गया है। लेनिन शान्त मुद्रा में लेटे हुए हैं, मानो किसी गम्भीर विचारधारा में मग्न हों! प्रशस्त ललाट, मौन ओठ; उनकी कुछ-कुछ भूरे रंग की कैंची से कतरी और संवारी हुई नोकदार पतली दाढ़ी बड़ी भव्य जान पड़ती है। उनके चेहरे और हाथों पर बिजली की रोशनी पड़ रही है, जिससे उनका अंग सजीव हो उठा है। लगता है सचमुच के लेनिन आ गये हैं।

समाधि के आसपास के क्षेत्र में और भी अनेक शहीदों की कब्रें बनी हुई हैं, जिन्होंने अपने देश के क्रांतिकारी आंदोलनों और शत्रु के आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिए युद्ध में हिस्सा लिया है। गोर्की, पुश्किन आदि रूस के महान् कलाकारों की और स्टालिन की कब्र दिखायी दे रही हैं। कुछ लोकप्रिय पुरुषों के बुत भी बने हुए हैं। इस कब्रिस्तान का निरीक्षण कर मन में अनेक प्रकार के विचार आन्दोलित हो रहे हैं। काश, हम अपने गणमान्य कलाकारों तथा देशभक्तों की स्मृति में कोई स्फूर्तिदायक भव्य स्मारक बना सकते!

कतार लगी हुई है। लिफ्ट में जाना हो तो कतार लगाइए ; कोई चीज खरीदनी हो तो कतार में खड़े होइये। दूकानों का सारा काम महिलाओं के सुपुर्द है। स्टोर के निचले हिस्से में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए भांति-भांति के फैशनेबल वस्त्र और स्त्रियों के पांवों के पूरे मौजे टंगे हुए हैं। सुव्यवस्थित रूप से खाने-पीने की सामग्री रक्खी हुई है; किताबें बिक रही हैं, लोग आइसक्रीम का स्वाद लेते हुए जा रहे हैं। सोवियत संघ में संतरे पैदा नहीं होते, वे बाहर से मंगाये जाते हैं। मालूम होता है कि सन्तरे इस मौसम में पहली बार बाजार में आये हैं, इसलिए सन्तरों की दूकान पर भीड़ लगी हुई है।

आज का कार्यक्रम बड़ा व्यस्त था, इसलिए भोजन करते ही हम शिक्षा मंत्रालय में पहुँच गये। शिक्षण अधिकारी ने कहा कि अक्तूबर-क्रांति के बाद से शिक्षा की सारी व्यवस्था सोवियत सरकार ने अपने हाथ में ले ली है।

सोवियत संघ में प्राइवेट स्कूल नहीं हैं। सोवियत के जनतांत्रिक देशों में विद्यार्थियों के माता-पिता की इच्छानुसार विद्यार्थियों को उनकी मातृ-भाषा (जनतांत्रिक देशों में बोली जाने वाली ६६ भाषाएं) में अथवा रूसी में शिक्षा दी जाती है। माध्यमिक स्कूल की शिक्षा पूरी करने में दस साल लगते हैं। १६७० से सामान्य तथा तकनीकी माध्यमिक शिक्षा सब विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य कर दी जायेगी। क्योंकि बिना तकनीकी ज्ञान के शिक्षा एकांगी रह जाती है। जब तक हमारे ज्ञान में श्रमजनित शिक्षा का समावेश न हो, तब तक दिमागी और शारीरिक श्रम का भेद दूर नहीं हो सकता। तकनीकी

का शव दिखायी दे रहा है, जिसे कोई रासायनिक मसाला लगाकर उनकी मृत्यु के बाद सन् १९२४ से ही सुरक्षित रक्खा गया है। लेनिन शान्त मुद्रा में लेटे हुए हैं, मानो किसी गम्भीर विचारधारा में मग्न हों। प्रशस्त ललाट, मौन ओठ ; उनकी कुछ-कुछ भूरे रंग की कैंची से कतरी और संवारी हुई नोकदार पतली दाढ़ी बड़ी भव्य जान पड़ती है। उनके चेहरे और हाथों पर बिजली की रोशनी पड़ रही है, जिससे उनका अंग सजीव हो उठा है। लगता है सचमुच के लेनिन आ गये हैं।

समाधि के आसपास के क्षेत्र में और भी अनेक शहीदों की कब्रें बनी हुई हैं, जिन्होंने अपने देश के क्रांतिकारी आंदोलनों और शत्रु के आक्रमण से देश की रक्षा करने के लिए युद्ध में हिस्सा लिया है। गोर्की, पुश्किन आदि रूस के महान् कलाकारों की और स्टालिन की कब्र दिखायी दे रही हैं। कुछ लोकप्रिय पुरुषों के बुत भी बने हुए हैं। इस कब्रिस्तान का निरीक्षण कर मन में अनेक प्रकार के विचार आन्दोलित हो रहे हैं। काश, हम अपने गणमान्य कलाकारों तथा देशभक्तों की स्मृति में कोई स्फूर्तिदायक भव्य स्मारक बना सकते !

डिपार्टमेंटल स्टोर यहां की विशेषता है। इन्हें सरकारी दूकान ही कहना चाहिए। ग्राहकों के लिए आवश्यक बिक्री की सभी चीजें यहां मिलती हैं और खास बात यह कि सब चीजों पर दाम टंके हुए हैं, इसलिए मोल-तोल की जरूरत नहीं। कभी ये दूकानें कई मंजिलों की होती हैं। लिफ्ट के पास लगे हुए बोर्ड पर लिखा है कि कौनसी मंजिल पर क्या चीज मिलती है। ग्राहकों की भीड़ इतनी है कि सब जगह

कतार लगी हुई है। लिफ्ट में जाना हो तो कतार लगाइए; कोई चीज खरीदनी हो तो कतार में खड़े होइये। दूकानों का सारा काम महिलाओं के सुपुर्द है। स्टोर के निचले हिस्से में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए भांति-भांति के फैशनेवल वस्त्र और स्त्रियों के पांवों के पूरे मौजे टंगे हुए हैं। सुव्यवस्थित रूप से खाने-पीने की सामग्री रक्खी हुई है; किताबें बिक रही हैं, लोग आइसक्रीम का स्वाद लेते हुए जा रहे हैं। सोवियत संघ में संतरे पैदा नहीं होते, वे बाहर से मंगाये जाते हैं। मालूम होता है कि सन्तरे इस मौसम में पहली वार बाजार में आये हैं, इसलिए सन्तरों की दूकान पर भीड़ लगी हुई है।

आज का कार्यक्रम बड़ा व्यस्त था, इसलिए भोजन करते ही हम शिक्षा मंत्रालय में पहुँच गये। शिक्षण अधिकारी ने कहा कि अक्तूबर-क्रांति के वाद से शिक्षा की सारी व्यवस्था सोवियत सरकार ने अपने हाथ में ले ली है।

सोवियत संघ में प्राइवेट स्कूल नहीं हैं। सोवियत के जन-तांत्रिक देशों में विद्यार्थियों के माता-पिता की इच्छानुसार विद्यार्थियों को उनकी मातृ-भाषा (जनतांत्रिक देशों में वोली जाने वाली ६६ भाषाएं) में अथवा रूसी में शिक्षा दी जाती है। माध्यमिक स्कूल की शिक्षा पूरी करने में दस साल लगते हैं। १९७० से सामान्य तथा तकनीकी माध्यमिक शिक्षा सब विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य कर दी जायेगी। क्योंकि बिना तकनीकी ज्ञान के शिक्षा एकांगी रह जाती है। जब तक हमारे ज्ञान में श्रमजनित शिक्षा का समावेश न हो, तब तक दिमागी और शारीरिक श्रम का भेद दूर नहीं हो सकता। तकनीकी

शिक्षा में आधुनिक उत्पादन का परिचय तथा औजार आदि की सहायता से काम करने की योग्यता शामिल है। विदेशी भाषाओं के अध्ययन पर स्कूलों में विशेष जोर दिया जाता है। यह अध्ययन पांचवीं कक्षा से आरम्भ होता है, और प्रति सप्ताह चार घंटे इसके लिए सुरक्षित रहते हैं। स्कूल की आखिरी क्लास में एक सप्ताह में केवल दो घंटे विदेशी भाषा पढ़ायी जाती है। माध्यमिक स्कूल की शिक्षा समाप्त कर विद्यार्थी विश्वविद्यालय में प्रवेश करता है। यहां उसे विज्ञान, भाषा-विज्ञान, टैकनोलाजी, कृषि, डाक्टरी, इतिहास, कला और संस्कृति आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है।

यह शिक्षा तीन प्रकार से होती है—कुछ विद्यार्थी पूरे समय विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हैं, कुछ दिन में नौकरी करते हैं और शाम को कालेज में पढ़ते हैं, तथा कुछ पत्र व्यवहार द्वारा शिक्षा पाते हैं (स्वयं शिक्षण अधिकारी ने पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा प्राप्त की है)। विश्वविद्यालय की शिक्षा समाप्त करने में विद्यार्थी को चार या पांच वर्ष लगते हैं। किसी प्रकार की फीस विद्यार्थियों से नहीं ली जाती, बल्कि अध्ययनशील विद्यार्थियों को सरकार की ओर से छात्रवृत्ति देकर प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसे विद्यार्थियों की संख्या लगभग ७५ प्रतिशत होती है। यहां की शिक्षा सुनियोजित समाजवादी अर्थ-व्यवस्था और संस्कृति पर आधारित है, इसलिए विद्यार्थियों को शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् नौकरी मिलने में परेशानी नहीं होती।

अधिकारी महोदय धाराप्रवाह रूसी में बोलते जाते थे

और मेरा दुभाषिया धाराप्रवाह अंग्रेजी में। यदि हम भी इसी तरह अपनी राष्ट्रभाषा को गौरव प्रदान करें तो निश्चय ही हम दूसरों की नजरों में ऊंचे उठ सकते हैं।

इन दिनों इतनी व्यस्तता रही कि बहुत चाहने पर भी भारतीय दूतावास में जाने का समय नहीं मिल सका। आज समय मिलने पर टैक्सी करके दूतावास पहुँचा। श्री त्रिलोकीनाथ कौल आजकल भारतीय राजदूत के पद पर कार्य कर रहे हैं। मैं इन्हें १९५२ से जानता हूं, जबकि ये चीन के भारतीय दूतावास में सेक्रेटरी थे। वर्षों बाद उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। सोवियत संघ में भारतीय राजदूत का पद कितनी जिम्मेदारी का है, यह लिखने की आवश्यकता नहीं है। सन्तोष की बात है कि कौल साहब अपने कार्य को योग्यता-पूर्वक निबाह रहे हैं।

मास्को का क्रांतिकारी संग्रहालय एक अत्यन्त शिक्षाप्रद स्फूर्तिदायक संग्रहालय है। पहली क्रांति असफल होने पर किन परिस्थितियों में लेनिन ने १९१७ में दूसरी क्रांति का सफल नेतृत्व किया, इसके चित्र यहां देखे जा सकते हैं। लेनिन के बाल्यकाल से लेकर मृत्यु तक की स्मृतियों के चिह्न दिखायी पड़ रहे हैं। रूस के जार ने अपने नृशंस अत्याचारों से सारे देश को तबाह कर रूसी जनता को किस प्रकार आतंकित कर दिया था, इसके प्रभावोत्पादक चित्र स्क्रीन पर दिखाये गये हैं। ऐसे संकट के समय देश के कोने-कोने से राष्ट्राभिमानी कारीगरों द्वारा बनाकर भेजे हुए अस्त्र-शस्त्रों का प्रदर्शन यहां किया गया है। सोवियत जनता के अतीत इतिहास की बेमिसाल

४०० मील दूर है। इस लाइन पर चलने वाली रेलगाड़ी सोवियत संघ की सबसे तेज चलने वाली गाड़ी मानी जाती है। यहां की रेलगाड़ियां बड़ी व्यवस्थित हैं। समय से छूटती हैं और समय से निर्दिष्ट स्थान पर पहुंच जाती हैं। स्टेशनों पर सामान बेचने वालों का भीड़-भड़क्का नहीं, कुलियों का शोरगुल नहीं और रेल में सवार होने के लिए मुसाफिरों की धक्का-मुक्की नहीं। रेलों में मुसाफिरों के खाने-पीने के लिए एक अलग डिब्बा रहता है, जहां बिना प्लेटफार्म पर नीचे उतरे, अन्दर-अन्दर से ही पहुंच सकते हैं। लोग प्रायः इतना ही सामान लेकर चलते हैं, जिसे वे स्वयं उठा सकें।

रेल को साढ़े आठ बजे सुबह लेनिनग्राड पहुंच जाना चाहिए था, पर पता नहीं आज वह क्यों सवा दस बजे पहुंची—पौने दो घंटे लेट !

स्टेशन पर प्रोफेसर प्योत्र बारान्निकोव एक महिला के साथ हम लोगों की इन्तजार कर रहे थे। रेल से उतरते ही उन्होंने हिन्दी में मेरा परिचय पूछा। और जब मुझे पता चला कि स्वयं बारान्निकोव हम लोगों के स्वागत के लिये आये हैं तो मेरी खुशी का ठिकाना न रहा।

बारान्निकोव अपनी पत्नी के साथ कई वर्ष हिन्दुस्तान में रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्यवश मैं उनके दर्शन से वंचित ही रहा। उनके पिताजी अकादेमीशियन एलेक्ज़ेइ पेत्रोविच बारान्निकोव (१८९०-१९५२) हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान थे और उन्होंने तुलसीदास के रामचरित-मानस का विशेष अध्ययन किया था। इस लोकप्रिय महाकाव्य की उन्होंने रूसी भाषा में विस्तृत

भूमिका लिखी है, जिसका अनुवाद डाक्टर केसरीनारायण शुक्ल ने हिन्दी में किया है।

एक बार कालिदास-जयन्ती के अवसर पर प्रोफेसर वारान्निकोव को उज्जैन में आमंत्रित किया गया। हमारे देश के विद्वानों के अंग्रेजी में भाषण हुए। जब वारान्निकोव वक्तृता देने खड़े हुए तो उन्होंने निवेदन किया कि यदि भारतीय विद्वान् हिन्दी अथवा संस्कृत में भाषण दें तो यह शोभनीय होगा।

जयन्ती-समारोह समाप्त हो जाने पर वारान्निकोव दिल्ली लौट आये।

लेकिन दिल्ली पहुंचकर जब उन्होंने समाचारपत्रों में अपने भाषण की रिपोर्ट पढ़ी तो उन्हें आश्चर्य हुआ। रिपोर्ट में कहा गया था कि वारान्निकोव ने उज्जैन में उपस्थित भारतीय विद्वानों की अंग्रेजी वक्तृताएं सुनकर कहा कि लगता है वे इंग्लिस्तान में पहुंच गये हैं। पत्रकार यह भी कहने से न चूके कि वारान्निकोव इसी कारण रुष्ट होकर उज्जैन से चले गये !

वारान्निकोव आजकल यहां की साइन्स अकादमी में शब्दार्थ-विज्ञान (सिमेंटिक्स) पर शोध-कार्य कर रहे हैं। आपको हिन्दी में पर्यायवाची शब्द, भारत के हिन्दी आन्दोलन, भारत और रूस के पारस्परिक मित्रतापूर्ण सम्बन्ध तथा रूसी साहित्य में भारत आदि विषयों में गहरी दिलचस्पी है। पिछले कई वर्षों से आप 'आधुनिक भारत की भाषा-समस्या' पर एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखने में व्यस्त हैं। आपका मत है कि यदि हिन्दुस्तान में अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को प्रतिष्ठित करना है तो समस्त हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेशों में अंग्रेजी के बजाय हिन्दी

के प्रयोग तथा अहिन्दी क्षेत्रों में प्रादेशिक भाषा और हिन्दी के प्रयोग करने की नीति अपनानी होगी। आपने बताया कि सोवियत संघ की भाषा-समस्या को इसी तरह हल किया गया है। इसके लिए न तो रूसी भाषा को सोवियत संघ की 'राज्य' भाषा घोषित किया गया और न सरकारी भाषा ही। परिणाम यह हुआ कि रूसी भाषा ने सोवियत संघ की तमाम जातियों का स्नेह प्राप्त कर लिया। प्रोफेसर महोदय का मत है कि इस नीति के अपनाने से भारत की सभी प्रमुख भाषाओं को समान अधिकार प्राप्त होंगे और सबको अपनी-अपनी भाषा के विकास के लिए अवसर मिल सकेगा।

बारान्निकोव से मिलकर सचमुच बहुत प्रसन्नता हुई। मुझे उनके जीवन के बहुमूल्य अनुभव सुनने को मिले। वे गंभीर प्रकृति के विचारक और विवेकशील विद्वान् मालूम हुए। वे सोच-सोचकर बोलते हैं और भारत तथा सोवियत संघ के मित्रतापूर्ण सम्बन्धों को बढ़ाने में दिलचस्पी लेते हैं। मैंने देखा कि प्रोफेसर महोदय केवल विद्वान् ही नहीं, एक सुलझे हुए आलोचक भी हैं। उनका कहना हैं कि सिद्धांतों को कोरे सिद्धान्त न रहने देकर उनका जीवन के साथ सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

दरअसल हम दोनों ने ही इसका अनुभव किया कि लेनिनग्राड जैसे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परम्परा के नगर को दो-तीन दिन में देख पाना बिल्कुल भी काफी नहीं। लेकिन क्या तुम समझती हो कि चौदह दिन में सारा सोवियत संघ देखा जा सकता है? और सात दिन में सारे पूर्वी जर्मनी को या

चेकोस्लोवाकिया को समझा जा सकता है ? मैं तो समझता हूँ कि यह एक प्रकार की वानगी है—थोड़ी-थोड़ी सब जगह से लेते जाग्रो । देखो थोड़ा, समझो ज्यादा ।

हां, प्रोफेसर महोदय के साथ स्टेशन पर मिलने वाली जिन महिला का उल्लेख मैंने किया है, उनका नाम है श्रीमती जुकोव । यहां के अन्तर्राष्ट्रीय मित्रता संघ की वे एक सक्रिय सदस्या हैं । विदेशों से, खासकर अंग्रेजी भाषा-भाषी देशों से, जिन प्रतिनिधियों को घूम-फिरकर सोवियत संघ के जन-जीवन का अध्ययन करने के लिए आमंत्रित किया जाता है, उनकी देख-रेख का काम लेनिनग्राड में श्रीमती जुकोव के सुपुर्द रहता है ।

यदि मैं कहूँ कि अपनी यात्रा के दौरान जिन एक-दो महिलाओं से मैं विशेष रूप से प्रभावित हुआ, उनमें से जुकोव एक हैं तो कोई अत्युक्ति न होगी । मेरे भोजन के सम्बन्ध में उन्हें बराबर चिन्ता बनी रहती है, भले ही मैं ऐसा न करने के लिए इनसे कितना ही अनुरोध क्यों न करूं । वे हमारे केवल खान-पान का ही ध्यान नहीं रखतीं, बल्कि इस बात से भी चिन्तित रहती हैं कि कहीं बाहर आते-जाते हम लोग सर्दी न खा जायें ।

तुम शायद न जानती हो कि यहां के लोग अपनी भाषा में ही बातचीत करते हैं—मास्को, लेनिनग्राद आदि स्थानों में रूसी बोली जाती है ; उज्बेकिस्तान के लोग उज्बेक तथा तुर्कमानिस्तान के लोग तुर्कमान भाषा में बातचीत करते हैं । हम लोगों की भांति अंग्रेजी बोलने का रिवाज यहां नहीं है ।

इसलिए अंग्रेजी बोलने वाले लोग यहां प्रायः कम ही मिलेंगे। लेकिन श्रीमती जुकोव बड़ी अच्छी मुहावरेदार अंग्रेजी बोलती हैं और बड़े 'स्टाइल' से बोलती हैं। पता चला कि विदेश में रह कर उन्होंने अंग्रेजी का अभ्यास किया है।

लेनिनग्राड जो पहले पीतर्सबुर्ग (पीटर्सबर्ग) के नाम से कहा जाता था, एक सुनिश्चित योजना के अनुसार बनाया हुआ शहर है। इसका निर्माण अढ़ाई सौ वर्ष में हुआ था। १८ वीं शताब्दी के आरम्भ में पीटर महान् अपनी राजधानी मास्को से हटाकर पीटर्सबर्ग ले गया था। इसकी जनसंख्या लगभग ३० लाख है, यानी बम्बई की अपेक्षा कम। यहां नेवा नाम की नदी बल खाती हुई १३ किलोमीटर में होकर बहती है। इसके अलावा, यहां ६६ नदियां तथा नहरें भी हैं, जिससे सारा शहर एक सौ एक टापुओं में बंट गया है। ६२० इनके पुल हैं, जिससे लेनिनग्राड पुलों का नगर कहा जाता है।

सन् १८४४ में जार और उसकी प्रजा के रहन-सहन में अन्तर कायम रखने के लिए निकोलस प्रथम ने घोषणा की थी कि पीटर्सबर्ग की कोई भी इमारत सात फुट से अधिक ऊंची न बनायी जाये—अर्थात् कोई इमारत जार के शीत-महल से ऊंची न हो। केवल गिरजाघर ही इसके अपवाद थे।

सोवियत संघ में मास्को के बाद लेनिनग्राड दूसरे नम्बर का शहर है। यहाँ की सड़कें काफी चौड़ी हैं; दोनों ओर एक से एक सुन्दर कलात्मक इमारतों का जाल बिछा हुआ है। बीच-बीच में महान् पुरुषों के स्मारक, नामांकित मार्ग, तथा

सुन्दर उद्यान और बाग-बगीचे बने हुए हैं। सुप्रसिद्ध नेव्स्की मार्ग बहुत दूर तक चला गया है। फुटपाथ राहगीरों से भरे हुए हैं। सड़क पर मोटर और बसें दौड़ रही हैं। जगह-जगह चौराहों पर स्वयंचालित हरी और लाल बत्तियां लगी हुई हैं, जिनका संकेत पाकर मोटर और बसों का आवागमन होता है तथा राहगीर सड़कों का रास्ता पार करते हैं।

इस मार्ग पर सबसे ज्यादा भीड़ दिखायी पड़ रही है। यहां पर बड़े-बड़े गिरजाघर, सरकारी दूकानें, सरकारी दफ्तर, बैंक, नाट्यगृह, शतरंज के क्लब, काफे, रेस्तरां, जलपानगृह, पुस्तकगृह आदि बने हुए हैं। सन् १९६० में लेनिनग्राड के एक प्रकाशनगृह ने ३ हजार से अधिक अलग-अलग पुस्तकों की ४ करोड़ १९ लाख प्रतियां प्रकाशित की थीं। इसकी सबसे निचली मंजिल पर एक पुस्तकगृह है, जिस पर ३० हजार भिन्न-भिन्न विषयों की पुस्तकें बिक्री के लिए रक्खी हुई है। इसी मार्ग पर एक सार्वजनिक लाइब्रेरी है, जिसमें सोवियत संघ की ८४ भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकें मौजूद हैं। मास्को की लेनिन लाइब्रेरी के बाद इसी का नंबर आता है।

गोगोल और पुश्किन की रचनाएं तुमने पढ़ी होंगी। यहां गोगोल के नाम की एक सड़क है; जहां गोगोल रहा करता था। सन् १८३५-३६ में गोगोल और पुश्किन की घनिष्ठता बढ़ी। इसी वर्ष गोगोल ने अपनी कामेडी 'इंस्पेक्टर जनरल' और 'मृत आत्माएं' लिखना शुरू किया। ये दोनों विश्व-साहित्य के रत्न हैं; इन रचनाओं की कथावस्तु गोगोल को पुश्किन से प्राप्त हुई थी।

रूसी लेखकों के पत्रों का संग्रह है। स्वयं पुश्किन की १,७३० पांडुलिपियां यहां मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त चेखव की लिखने की दावात, गोगोल की कुर्सी, ताल्स्ताय के सीये हुए बूट जूते, दस्तयेत्स्की का चश्मा तथा एलेक्जेंडर ब्लोक की लिखने की मेज आदि ऐतिहाहिक वस्तुएं इस देश के गौरवपूर्ण अतीत इतिहास की याद दिलाती हैं।

दिसेम्ब्रिस्तों स्क्वेयर रूस के क्रांतिकारी शहीदों की यादगार में बनाया गया है, जो सेंट आइजक के गिरजाघर के सामने है। यहां अश्वारोही पीतर प्रथम का प्रेरणादायक स्मारक बना हुआ है, जिसे मूर्तिकार फालकेन्त्स ने १८ वीं सदी में निर्मित किया था। मूर्ति का मुख नेवा नदी की ओर है और पीतर पैरों के नीचे पड़े हुए अजगर को एक बर्छे से छेद रहा है। अश्व की आगे की दो टांगें ऊपर उठी हुई हैं; लगता है कि वह बड़े वेग से दौड़ा जा रहा है। इसी से प्रेरित होकर पुश्किन ने 'कांसे का घुड़सवार' नामक काव्य की रचना की थी, यह पहले लिखा जा चुका है।

पीतर और पाल के दुर्ग के भीतर पीतर और पाल कैथीड्रल गिरजाघर स्थापत्य कला का एक अनुपम नमूना है। १७१२ में इसका निर्माण आरम्भ हुआ था। पीतर महान् से लेकर एलेक्जेंडर तृतीय तक समस्त जारों के शव यहां दफनाये गये हैं। सबसे प्रभावोत्पादक समाधि है एलेक्जेंडर द्वितीय और उसकी रानी की, जो अल्ताई और उराल के बेश कीमती पत्थरों को काटकर बनायी गयी है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान में, सन् १९४१ में जब हिटलर

की नाजी सेनाओं ने लेनिनग्राड के चारों ओर घेरा डाल दिया तो नगरवासियों को भीषण यातनाओं का सामना करना पड़ा। अन्न की कमी के कारण अधिकारियों को राशन में कमी कर देनी पड़ी, तथा पानी और बिजली में भी कटौती कर दी गयी। नगर का यातायात ठप्प हो गया। नाजी सेनाओं का यह घेरा २ वर्ष ६ महीने तक रहा। लगभग साढ़े छह लाख नगरवासी इस संघर्ष में काम आये, ३ हजार इमारतें बमवारी के कारण धराशायी हो गयीं और ७ हजार से अधिक मकान क्षतिग्रस्त हुए। पिस्करीवस्कोये में उन शहीदों का स्मारक बना हुआ है जिन्होंने इस घेरे के समय अपने प्राणों की आहुति दी। यहीं पर रूस की मातृभूमि की कांसे की एक मनोज्ञ मूर्ति है जो इस स्थान की शोभा बढ़ा रही है।

१९४५ में नाजी सेनाओं को खदेड़कर उनपर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में मास्को विक्ट्री पार्क (विजय उद्यान) बनाया था। यहां कितने ही शहीदों की मूर्तियां हैं जिनके आस-पास सुन्दर पुष्प खिले हुए हैं। एक स्थान पर रूसी क्रांति में काम आनेवाले वीर शहीदों का भव्य स्मारक है जहां उनकी यादगार में निरन्तर अग्नि प्रज्वलित रहती है। लेनिन संग्रहालय के सामने बख्तर-बंद एक मोटर खड़ी है जिसपर बैठकर लेनिन ने निर्वासन से लौटने के पश्चात् अप्रैल, १९१७ में अपना ऐतिहासिक भाषण दिया था। अरोरा नामक सुप्रसिद्ध जंगी जहाज नेवा नदी में लंगर डाले पड़ा हुआ है। इसके सैनिकों ने सबसे पहले विद्रोह की घोषणा की थी, बोल्शेविकों का साथ दिया था, और इसने तोपों के मुंह जार के शीत महल के ऊपर तना दिये थे। १९

में इस जहाज ने जल में प्रवेश किया था। रूसी-जापानी युद्ध में यह वहुत कारगर सिद्ध हुआ। इसकी दोनों बगलों और सामने की ओर कितनी ही तोपें लगी हैं।

लेनिनग्राड अनेक उद्योग-धंधों का भी वड़ा केंद्र है। मशीन का काम, बिजली का काम, औजार बनाना, जहाज निर्माण करना तथा फिल्मों आदि के क्षेत्र में यहां पर्याप्त उन्नति हुई है। ४४ हजार घोड़ों की शक्ति वाला, वर्फ की बड़ी-बड़ी चट्टानों को चकनाचूर कर देने वाला और अणुशक्ति से चलने वाला 'लेनिन' दुनिया का सर्वप्रथम जहाज है। यह बिना किसी किस्म के ईंधन के एक महीने तक बराबर जल में चल सकता है। 'लेनफिल्म' एक प्रसिद्ध स्टूडियो है जहां एक-से-एक सुन्दर शिक्षाप्रद फिल्मों का निर्माण हुआ है।

तुम जानती हो, हमारे देश के वहुत से नगरों में टेलीविज़न का प्रचार अभी नहीं हुआ है, लेकिन यहां के लोग टेलीविजन के वहुत शौकीन हैं। लेनिनग्राड में कुल मिलाकर ५ लाख टेलीविज़न होंगे। यहां का टेलीविज़न-केंन्द्र मास्को और कीव से कार्यक्रम प्रसारित करता है और सोवियत संघ के ३० नगरों में इसका अपना कार्यक्रम सुना जा सकता है। यहां के लोग आराम से अपने घर बैठे-बैठे टेलीविज़न पर फुटबाल का खेल देखते हैं, संगीतज्ञों के गाने सुनते हैं, उनकी तस्वीरें देखते हैं, कार्टूनों का मजा लेते हैं और विदेशों में होने वाली घटनाओं को अपनी आंखों के सामने होते हुए देखते हैं। आधुनिक युग का इसे एक महान् चमत्कार ही समझना चाहिए।

तुम पूछोगी कि मास्को और लेनिनग्राड इन दोनों में कौन-

सा शहर अच्छा लगा। इसका उत्तर देना आसान नहीं है। मेरे ख्याल से दोनों की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं, यद्यपि मास्को निवासी अपने शहर को अच्छा कहते हैं और लेनिनग्राड के निवासी अपने को। संभवत: शान-शौकत की दृष्टि से मास्को अच्छा है। वैसे भी मास्को सोवियत सरकार की राजधानी है, इसलिए अच्छा होना ही चाहिए तथा प्राचीन कला-कौशल और ऐतिहासिकता की दृष्टि से लेनिनग्राड अच्छा कहा जा सकता है। रूसी क्रांति का सूत्रपात लेनिनग्राड से ही हुआ और इस क्रान्ति के जन्मदाता लेनिन के जीवन के साथ इसका गहरा सम्बन्ध रहा है, यह मैं लिख चुका हूं। इसके सिवाय, द्वितीय युद्ध के समय नाजी सेनाओं द्वारा शहर का घेरा डाल दिये जाने पर यहां के नागरिकों ने अदम्य साहस का परिचय दिया था। मुझसे अगर पूछो तो मैं लेनिनग्राड को पसन्द करूंगा।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

लेनिनग्राड का स्टेट हरमिटेज। १७ वीं, १८ वीं शताब्दी की इतालवी कला

५

यूरोपिया होटल,
लेनिनग्राड
३० अक्तूबर, १९६५

प्रिय कल्पना,

आज हमने एक हिन्दी स्कूल का निरीक्षण किया। तुम शायद सोचो कि वहां हिन्दी स्कूल कहां से आया। लेकिन ऐसी बात नहीं है। सोवियत सरकार हिन्दी स्कूलों को प्रोत्साहन देती है, क्योंकि वह समझती है कि हिन्दुस्तान की जनता को जानने के लिए हिन्दी का ज्ञान अत्यावश्यक है।

जिस स्कूल का निरीक्षण करने हम गये, उसकी प्रधानाध्यापिका श्रीमती रिमा वारान्निकोवा हैं। वारान्निकोवा नाम सुनकर में जरा ठिठका। मैं आश्चर्यचकित था यह सोचकर कि प्रोफेसर वारान्निकोव ने अब तक इस रहस्य का क्यों उद्घाटन नहीं किया कि उनकी पत्नी हिन्दी स्कूल में प्रधानाध्यापिका हैं।

श्रीमती वारान्निकोवा अपने पति के साथ हिन्दुस्तान रही हैं। वे दिल्ली के रूसी दूतावास में दुभाषिए का काम करती रहीं—रूसी से हिन्दी में और हिन्दी से रूसी में अनुवाद करने का। श्रीमती वारान्निकोवा ने यहां रहते हुए मैथिलीशरण, निराला, बच्चन, पन्त, दिनकर, नीरज आदि कवियों तथा प्रेमचन्द, यशपाल, अश्क, विष्णु प्रभाकर आदि गद्य-लेखकों का अध्ययन किया।

जब हमने हिन्दी स्कूल के अहाते में प्रवेश किया तो वर्षा की भीनी-भीनी फुहारें पड़ रही थीं। वृक्षों की पतझड़ उनींदे वातावरण में वृद्धि कर रही थी। स्कूल की इमारत आलीशान थी और स्कूल का कम्पाउण्ड फूल-पौधों से शोभित। स्कूल की अध्यापिकाओं ने हिन्दी में हमारा स्वागत किया। फिर अन्दर पहुँच कर हम सबने चाय पी—जो सर्दी के मौसम में बड़ी उपकारक लग रही थी।

स्कूल का वातावरण सोलह आने भारतीय लगा। सबसे पहले स्कूल के छात्र और छात्राओं ने हाथ जोड़कर नमस्ते किया। स्कूल के निचले हिस्से में भारत और सोवियत संघ के पोस्टर लगे हुए हैं—'भारत प्राचीन संस्कृति का देश है', 'भारत-सोवियत बच्चों की मित्रता दृढ़ हो', 'भारत प्रतिभा-सम्पन्न जनता का देश है', 'भारत अजीब प्रकृति और जन्तुओं का देश है' आदि-आदि। भारतीय प्रदर्शिनी और चित्रकला तथा भारतीय संस्कृति के द्योतक दृश्य अंकित हैं। कमरों पर हिन्दी में लिखा हुआ है—'पढ़ने का कमरा', 'खाने का कमरा', 'कपड़े रखने का कमरा' आदि।

हम लोगों ने हिन्दी की एक कक्षा में प्रवेश किया। एक रूसी महिला विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ा रही थी। पढ़ाना समाप्त होने के बाद छात्र और छात्राओं का कार्यक्रम शुरू हुआ।

सर्वप्रथम दसवीं कक्षा की छात्रा तान्या किरिल्लोवा ने हरिवंशराय 'बच्चन' की कविता सुनायी—

कहते हैं तारे गाते हैं।
सन्नाटा वसुधा पर छाया
नभ में हमने कान लगाया
अगणित कंठों का फिर भी यह राग
नहीं हम सुन पाते हैं।
कहते हैं तारे गाते हैं।

ल्यूबा पित्रोव (रूसी में ल्यूबा अर्थात् प्रेम) ने एक रूसी गाना सुनाया। गीत में रूठे हुए एक प्रेमी और प्रेमिका का चित्र अंकित है। प्रेमी अपनी प्रेमिका को मना रहा है—देखो, मास्को की शाम कितनी सुहावनी है! रूठने का समय यह नहीं है। मुझसे बोलती क्यों नहीं?

यूरी ग्रीगोरियेफ (कक्षा ६) ने 'श्री ४२०' का गाना सुनाया—

मेरा जूता है जापानी
मेरी पतलून इंगलिस्तानी
सर पै लाल टोपी रूसी
फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी।

नेल्ली साविना ने अपने मधुर कंठ से 'श्री ४२०' और 'सी० आई० डी०' के गाने सुनाकर आनन्दविभोर कर दिया—

(१) प्यार हुआ इकरार हुआ
प्यार से क्यों फिर डरता है दिल।
कहता है दिल रस्ता मुश्किल
मालूम नहीं फिर कहां मंजिल।

(२) ऐ दिल ! मुश्किल जीना यहां
जरा हटके, जरा बचके,
ये है बम्बई मेरी जां !

एक छात्रा ने सुमित्रानन्दन पन्त की 'वसन्त' कविता का पाठ किया—

चचल पग दीपशिखा के घर
गृहमग वन में आया वसंत
सुलगा फागुन का सूनापन
सौन्दर्य शिखाओं में अनन्त।

एक दूसरी छात्रा ने बच्चनजी की 'यह कविता मिल गयी है, भेज रहा हूँ' कविता सुनायी—

आज से आजाद अपना देश फिर से।
ध्यान बापू का प्रथम मैंने किया है,
क्योंकि मुर्दों में उन्होंने भर दिया है
नव्य जीवन का उन्मेष फिर से।
आज से आजाद अपना देश फिर से।

एक छात्रा से बोर्ड पर कुछ लिखने को कहा गया तो उसने लिखा—"मैं स्कूल से पास होकर विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा पढ़ने के लिए भर्ती होना चाहती हूं। भारत जाने की मेरी बड़ी इच्छा है।' एक छात्रा ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जैनेंद्र कुमार,

उपेंद्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर और मन्नू भंडारी आदि साहित्यकारों की कहानियों का अध्ययन किया है।

कल्पना, इन विद्यार्थियों के मुंह से इतनी सुन्दर-सुन्दर कविताएं और हिन्दुस्तानी गाने सुनकर मैं दंग रह गया। ये लोग बिना किसी झिझक के बोलते चलते जाते हैं, मानो अपनी ही भाषा बोल रहे हों। हिन्दी भाषा के प्रति इतना अनुराग तो कदाचित् अपने देश में भी देखने में नहीं आया।

अब जरा स्कूल के पाठ्यक्रम के बारे में लिख दूं। दूसरी कक्षा से यहां हिन्दी की पढ़ायी शुरू होती है। आरम्भ में सिर्फ बातचीत द्वारा शिक्षा दी जाती है। यह बातचीत विद्यार्थी के अपने निज के, उसके परिवार के, उसकी कक्षा के और सामान्य जानवरों के बारे में होती है। तीसरी कक्षा में अक्षर ज्ञान कराया जाता है। यहां से भाषा का लिखना आरम्भ होता है। चौथी कक्षा में व्याकरण शुरू हो जाता है। इसमें वर्तमान काल, पूर्णकाल, अपूर्ण काल और भविष्य काल तथा सर्वनाम और लिंग (लिंग के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को कुछ कठिनाई होती है; उदाहरण के लिए मेज़ शब्द रूसी में पुल्लिंग है जब कि हिन्दी में उसे स्त्री लिंग माना गया है) का ज्ञान कराया जाता है। हिन्दी की सरल कहानियां भी इस कक्षा से प्रारम्भ कर दी जाती हैं। पांचवीं कक्षा में लगभग दस कहानियां और कुछ कविताएं पढ़ायी जाती हैं। छठी और सातवीं कक्षा में व्याकरण के सामान्य नियम सिखाये जाते हैं। पठित कहानियों और कविताओं के ऊपर विद्यार्थियों को अभ्यास दिये जाते हैं, और इमला लिखाया जाता है। आठवीं कक्षा में प्रेमचन्द,

यशपाल, उपेंद्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर और मन्नू भंडारी आदि की कहानियां, तथा पन्त, बच्चन और दिनकर आदि की कविताएं पढ़ायी जाती हैं। नौवीं, दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा में बातचीत का विशेष अभ्यास कराया जाता है। इसके लिए लेनिनग्राड के कारखानों में काम करनेवाले भारतीय इंजीनियरों को निमंत्रित किया जाता है जो हफ्ते में एक बार विद्यार्थियों को बातचीत का अभ्यास कराते हैं। दूसरी कक्षा से पांचवीं कक्षा तक प्रति सप्ताह चार घंटे, पांचवीं से सातवीं तक छह घंटे, और आठवीं से ग्यारहवीं तक सात घंटे हिंदी पढ़ायी जाती है। अंतिम तीन कक्षाओं में साहित्य की पढ़ाई भी की जाती है।

हिन्दी अध्यापन के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए प्रधानाध्यापिका ने बताया कि उनके पास हिन्दी का पर्याप्त साहित्य नहीं है। इसके लिए अध्यापिकाओं को लाइब्रेरी आदि में बैठकर कहानियों और कविताओं की नकल करनी पड़ती है, और फिर विद्यार्थी इनकी नकल करते हैं। हिन्दी टाइपराइटर के अभाव में हिन्दी पाठों को टाइप करा लेने की सुविधा से उन्हें वंचित ही रहना पड़ता है। आपने बताया कि उनके यहां अनेक देशों की पत्र-पत्रिकाएं आती हैं, जबकि हिन्दी की कोई पत्रिका पढ़ने को उन्हें नहीं मिलती। कुछ गंभीर स्वर में कहने लगीं कि भारत से कितने ही अतिथि आते हैं जो हिन्दी की पुस्तकें भेजने का वादा कर जाते हैं, लेकिन स्वदेश पहुंचते ही सब भूल जाते हैं। वे यही कहकर सन्तोष कर लेते हैं कि लेनिनग्राद में हिन्दी का एक स्कूल चल रहा है जिसमें बहुत बच्चे पढ़ते हैं

होती है। मास्को के भारतीय दूतावास की ओर से भी सम्भवतः हिन्दी के सम्बन्ध में कोई खास प्रोत्साहन नहीं मिलता।

मुझसे भी दो शब्द विद्यार्थियों से कहने का अनुरोध किया गया। मैंने स्कूल के छात्र और छात्राओं के परिश्रमपूर्वक हिन्दी पढ़ने के तथा अध्यापिकाओं के लगन के साथ हिन्दी पढ़ाने के उपलक्ष्य में दोनों को हार्दिक बधाई दी। मैंने जोर देकर कहा कि हिन्दुस्तान के विद्यार्थी जब तक रूसी नहीं सीख लेते तथा सोवियत संघ के विद्यार्थी जब तक हिन्दी भाषा से परिचित नहीं हो जाते, तब तक हम एक-दूसरे को संस्कृति और सभ्यता को समझने में असमर्थ ही रहेंगे। अन्त में अपनी लिखी हुई स्कूलोपयोगी कुछ पुस्तकें मैंने विद्यार्थियों को भेंट कीं।

प्रोफेसर बारान्निकोव को मेरा भाषण पसन्द आया। उन्होंने कहा कि बोलचाल की सरल भाषा में होने के कारण विद्यार्थी भाषण को अच्छी तरह समझ सके। और कल्पना, क्या यह बात दिलचस्प नहीं है कि मेरे साथी डा० मुकर्जी भी, जिनकी मातृभाषा बंगाली है, हिन्दी में ही बोले और हिन्दुस्तान, लौटकर उन्होंने और अच्छी हिन्दी सीखने की घोषणा की !

तत्पश्चात् स्कूल के छात्रावास का निरीक्षण करने के लिए हमें आमंत्रित किया गया। यहां छात्र और छात्राएं दोनों अपने-अपने छात्रावास में रहते हैं—दोनों के ऊपर जाने के मार्ग अलग-अलग हैं। तुम जानना चाहोगी कि छात्रावास में रहने के लिए विद्यार्थियों को फीस देनी पड़ती है या नहीं। दरअसल छात्रावास में रहने की फीस विद्यार्थी के माता-पिता की आमदनी पर निर्भर करती है। फिर भी छात्रावास में रहने

वाले वीस प्रतिशत विद्यार्थियों से किसी तरह की फीस नहीं ली जाती। यदि विद्यार्थी के माता-पिता की आमदनी काफी है तो अधिक-से-अधिक पचास रूवल माहवार तक उन्हें देने पड़ते हैं। बहुत-से विद्यार्थी सवेरे आते हैं और शाम को अपने घर वापिस चले जाते हैं। कुछ सप्ताह-भर बोर्डिंग में रहते हैं और शनिवार की शाम को घर जाकर सोमवार की सुबह लौट आते हैं।

भाषा की कठिनाई यहां सबसे अधिक मालूम हुई। यदि कोई यहां की भाषा नहीं जानता तो वह अकेले कहीं बाहर नहीं जा सकता और कुछ भी नहीं समझ सकता। विदेशी लोग दुभाषियों के माध्यम से बातचीत करते हैं, लेकिन मैं समझता हूं कि इस तरह बातचीत का मजा आधा रह जाता है, एक भाषा से तुरन्त ही दूसरी भाषा में अनुवाद करके किसी को समझना, यह मामूली काम नहीं है। इसके लिए सतत अभ्यास की जरूरत होती है। कितनी ही बार ऐसा दुभाषिया मिल जाता है जो स्वयं वक्ता की बात को अच्छी तरह नहीं समझ पाता, अथवा उसे अपने शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाता।

लेकिन सौभाग्य से हमें एक ऐसी महिला मिल गयीं जो विदेश से आनेवाले टूरिस्टों के लिए गाइड का काम करती हैं। अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलती हैं और वैसे भी बड़ी 'स्मार्ट' लगती हैं। लेनिनग्राड शहर देखते समय वे हमारे साथ रहीं। और उन्होंने प्रत्येक बात को बहुत ही अच्छी तरह हमें समझाया।

आज 'स्टेट हर्मिटेज' नामक संग्रहालय देखने गए

कार्यक्रम है। यह दुनिया के सुप्रसिद्ध संग्रहालयों में गिना जाता है। यहां रूसी संस्कृति, पूर्वी देश के निवासियों की कला, ग्रीस और रोम की प्राचीन सभ्यता, सीथिया की स्वर्ण की वस्तुएं तथा यूरोप की चित्रकला का प्रदर्शन किया गया है। अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह संग्रह कैथरीन द्वितीय की सम्पति समझी जाती थी जबकि केवल राजदरबार के अधिकारी ही विशेष आमंत्रण द्वारा यहां प्रवेश पा सकते थे। इस संग्रहालय में ३०० से अधिक बड़े कमरे हैं जिनमें २० लाख से अधिक वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया है। ये वस्तुएं ५ लाख ई० पू० से लगाकर आधुनिक_काल तक की हैं और अठारहवीं शताब्दी में विदेशों से बड़ी-बड़ी कीमतों पर खरीदी गयी हैं।

आदिमकालीन संस्कृति के इतिहास विभाग में यहां आदिमकाल की वस्तुएं संग्रहीत हैं। सबसे प्राचीन प्रस्तर युग के पत्थर के औजार हैं जो ५ लाख से ३ लाख ई०पू० के हैं और आर्मेनिया में पाये गये हैं। यहां सोने का एक कंघा है जिसकी मूठ पर युद्ध करते हुए सीथियन सैनिकों के चित्र बने हैं। यह कंघा ई०पू० पांचवीं शताब्दी का है जो यूक्रेन में मिला है। और भी अनेक सुन्दर कारीगरी किये हुए शुद्ध सोने के आभूषण सीथिया की कब्रों में मिले हैं जिनमें हाथों के कड़े, विलक्षण पशुओं की आकृतियां और महीन काम किये हुए गले के हार हैं। इनमें उछलते हुए सुन्दर बारहसिंगे की और तेंदुए की आकृति वाले आभूषण खासतौर से उल्लेखनीय हैं। इन्हें अढ़ाई हजार वर्ष पुराना बताया जाता है।

पूर्व देश निवासियों की संस्कृति और कला के इतिहास-विभाग में पौर्वात्य कला का बहुमूल्य संग्रह है। यहां कांसे का एक डेगचा है जो वजन में करीब २ टन है, और ऊंचाई में ५ फुट। तैमूरलंग के आदेश से, किसी मस्जिद में दान करने के हेतु, १३९९ में कांसे के एक साबुत टुकड़े को ढालकर इसे बनाया गया था। यह कजाकिस्तान से मिला है। इसके सिवाय, यहां काकेशस विभाग, ईजिप्त विभाग, बेबीलोनिया और असीरिया विभाग, बीजेण्टिना विभाग, सीरिया और ईरान विभाग, चीनी विभाग तथा भारतीय विभाग हैं जहां इन देशों की काष्ठ-मूर्तियां, चांदी की तश्तरियां, ऊनी गलीचे, चीनी मिट्टी के पात्र और प्रसाधन-सामग्रियां आदि सजाकर रक्खी हुई हैं।

पुरातन जगत् की संस्कृति और कला के इतिहास विभाग में ग्रीस और रोम आदि की अनेक दर्शनीय वस्तुएं हैं जिनमें कांसे और संगमर्मर की मूर्तियां, मिट्टी के पात्र, बहुमूल्य हीरे-जवाहरात तथा धातु और कांच-निर्मित सामग्री खासतौर से ध्यान आकर्षित करती हैं।

पश्चिमी यूरोप की कला के इतिहास विभाग में इटली के मार्टिनी, लियोनारडो डा विन्ची, और राफेल आदि, स्पेन के एल ग्रेसो, और फ्रांसिस्को आदि, तथा नीदरलैंड, फ्लैंडर्स, हालैंड, जर्मनी, इंग्लैंड, और फ्रांस के सुप्रसिद्ध कलाकारों के एक-से-एक सुन्दर चित्र, जिनमें तैल-चित्र भी शामिल हैं, वहां लगे हुए हैं जिनका भलीभांति अध्ययन करने के लिए पर्याप्त समय की आवश्यकता है।

रूसी संस्कृति का इतिहास विभाग अक्तूबर क्रांति के वाद शुरू हुआ था। इसमें रूसी पुरातत्व, कला, चित्रकारी, नक्काशी आदि से संबंधित सामग्री एकत्रित है। संग्रहालय की अनेक वस्तुएं प्राचीन नगरों की खुदाई में से निकली हैं। नोवगोरोड के राजकुमार एलेक्जेंडर नेव्स्की का चांदी का दीर्घकाय तावूत ध्यान आकर्षित करता है जिसे १७५०–५३ में सेंट पीटर्सवर्ग की टकसाल में ढालकर वनाया गया था। यहां हंस के अण्डे के आकार की एक घड़ी है जिसे स्वयं शिक्षा प्राप्त कुलीविन नामक घड़ीसाज ने १७६५-६९ में वनाकर तैयार किया था। एक जगह १७२३ में निर्मित पीतर प्रथम की कांसे की बनी एक सुन्दर मूर्ति है, कहीं सूंघनी रखने का चीनी मिट्टी का कलात्मक डिब्बा है, कहीं समुद्री घोड़े की हड्डी से वना सुन्दर पात्र है, और कहीं फौलाद के बने शतरंज मोहरे और मोहरे रखने का डिब्बा दिखायी दे रहा है।

सोवियत संघ का यह सबसे बड़ा संग्रहालय है। यदि इसके सब कमरों को एक पंक्ति में रख दिया जाये तो ये कई मील में फैल जायेंगे। कुल मिलाकर संग्रहालय की इमारत का क्षेत्रफल लगभग ५ लाख वर्ग-फुट होगा। इसमें १,९४५ खिड़कियां, १,७८६ दरवाजे, और ११७ जीने हैं। कैथरीन द्वितीय अपने इस माल-खजाने को देखकर मन-ही-मन वहुत खुश हुआ करती थी। इसके बारे में अपने एक पत्र में उसने लिखा था—"केवल चूहे और मैं इसका मूल्यांकन कर सकते हैं।"

इतने वड़े संग्रहालय को देखते-देखते हम लोग विल्कुल

थक गये। क्या तुम समझती हो कि एक दिन में–वह भी चन्द घंटों में—इतने महत्वपूर्ण संग्रहालय को देख सकना सम्भव है ? इसके लिए वर्षों की तपस्या की आवश्यकता है। मैंने तो केवल प्राचीन ऐतिहासिक वस्तुओं के प्रति तुम्हारी दिलचस्पी पैदा करने के लिए इसका दिग्दर्शन मात्र कर दिया है।

सब जगह सन्नाटा छाया हुआ है, लगता है कि रात बहुत हो गयी है। पत्र समाप्त करता हूं।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

मास्को का माया कोवस्काया मेट्रो रेलवे स्टेशन

६

यूरोपिया होटल,
लेनिनग्राड
३१ अक्तूबर, १९६५

प्रिय कल्पना,

तुम जानती हो, आजकल बम्बई जैसे शहरों में यातायात की समस्या बहुत बढ़ गयी है। देहात के लोग काम की तलाश में शहरों में आते चले जाते हैं। वैसे भी जो सुख-सुविधाएं शहरों में हैं, वे देहातों में कहाँ नसीब होती हैं।

खैर, जैसे हमारे यहां ट्राम, बस और (कहीं-कहीं) बिजली से चलने वाली स्थानीय रेलगाड़ियाँ भी हैं, वैसे ही यहां भी हैं। केवल एक ही बात है कि जैसी मुसाफिरों की रेलपेल और धक्का-मुक्की अपने यहां देखने में आती है, वैसी यहां नहीं है।

ट्रामें यहां चलती हैं। तीन कोपेक (१००कोपेक = १ रूबल)

में हम ट्राम द्वारा चाहे जितनी दूर जा सकते हैं। ट्रामों की ड्राइवर और कण्डक्टर प्रायः महिलाएं होती हैं। ट्रामों में चढ़ते हुए धक्का-मुक्की नहीं करनी पड़ती और न कण्डक्टरों का दुर्व्यवहार ही सहना पड़ता है। मुसाफिर ट्राम में आते चले जाते हैं—जिनके लिए जगह होती है वे बैठ जाते हैं, बाकी खड़े-खड़े चले जाते हैं। जब ट्राम भर जाती है तो उसका दरवाज़ा बन्द हो जाता है, और फिर चलती हुई गाड़ी में कोई नहीं चढ़ सकता।

जल्दी जाना हो तो बस से जा सकते हैं—ट्राली बस से या बिना बिजली के चलने वाली सामान्य बस से। ट्राली-बस में चार कोपेक और सामान्य बस में पांच कोपेक में हम चाहे जहां तक जा सकते हैं। कितनी ही बसों में कण्डक्टर नहीं होते। एक कोने में पैसे डालने का एक छोटा-सा बक्सा रक्खा रहता है और वहीं टिकटों की मशीन। मशीन को घुमाने से टिकट निकल आता है। यदि बस में कोई कण्डक्टर हुई तो वह एक स्थान पर बैठ जाती है और मुसाफिर उसके पास आकर टिकट खरीद लेते हैं। अक्सर पास के मुसाफिर दूर बैठे हुए मुसाफिरों के टिकट खरीद लेते हैं। बस के भर जाने पर बस का दरवाजा अपने-आप बन्द हो जाता है। बस की ड्राइवर प्रायः महिला होती है और बस के ठहरने पर लाउड स्पीकर से वह स्टेशनों के नामों की घोषणा करती जाती है।

मेट्रो या जमीन के नीचे चलने वाली रेलगाड़ी यहां की बड़ी दिलचस्प चीज है। यह सन् १९३५ में पहले मास्को में शुरू हुई थी। आजकल लेनिनग्राड और कीव में भी चलती है। पांच कोपेक में हम तमाम दिन रेल में बैठकर घूम-फिर सकते हैं—

लेकिन स्टेशन के बाहर आने पर यदि हम फिर से रेल द्वारा यात्रा करना चाहें तो फिर पाँच कोपेक खर्च करने पड़ेंगे।

एक और दिलचस्प बात है, जैसे हम ट्रेन का टिकट खरीदने के लिए कतार लगाये खड़े रहते हैं, वैसा यहां नहीं होता। स्टेशन पर लगी हुई मशीन में पांच कोपेक का सिक्का डाल दीजिए और बेखटके अन्दर चले जाइए; टिकट लेने की जरूरत नहीं। लेकिन यदि मशीन में बिना पैसा डाले या खोटा सिक्का डाल कर अन्दर जाना चाहेंगे तो मशीन रोक देगी। और मशीन की ईमानदारी देखिए कि वह खोटे सिक्के को बाहर निकालकर फेंक देती है!

ये रेलगाड़ियां जमीन के अन्दर चलती हैं—रेल की पटरी जमीन से लगभग १०० फुट नीचे बनी हुई हैं, इसलिए तुम समझती होगी कि सीढ़ियां उतरकर रेल के प्लेटफार्म पर पहुंचने के लिए बहुत दूर तक आना पड़ता होगा? लेकिन ऐसी बात नहीं। यदि ऐसा हो तो सीढ़ियां चढ़ने-उतरने में ही आदमी का दम फूलने लग जाय। इसके लिए यहां बिजली से चलने वाले 'ऐक्सक्वेटर' या 'एलीवेटर' लगे रहते हैं। लकड़ी के लगे हुए लम्बे शहतीर को पकड़कर खड़े हो जाइए और मिनटों में पातालपुरी के प्लेटफार्म पर पहुंच जायेंगे। लेकिन एक बात का ध्यान रखना होता है कि नीचे पहुंचकर जल्दी से उतर जायें, नहीं तो ठोकर लगकर गिरने का डर रहता है।

स्टेशनों के प्लेटफार्म बड़े साफ और सुन्दर बने होते हैं और सर्दी के मौसम में बिजली से गर्म रहते हैं। यहां चिकने संगमर्मर का फर्श है और दीवारों पर सुन्दर कारीगरी की हुई है

दोनों ओर क्रांतिकारी और गत विश्वयुद्ध में भाग लेनेवाले वीरों की दीर्घकाय मूर्तियां वनी हुई हैं। साहित्यकारों के नामों पर अनेक स्टेशनों के नाम हैं; एक का नाम है गोर्की। यहां गोर्की की एक सुन्दर मूर्ति वनी है। उसकी पृष्ठभूमि में सुहावने प्राकृतिक दृश्य दिखायी दे रहे हैं। पास ही पुस्तकों की दूकान है जिस पर अनेक विषयों की पुस्तकें विक रही हैं। रूसी भाषा की एक पुस्तक है 'पुश्किन कहां रहते थे?' ग्राहक पुस्तकों को उलट-पुलट कर ध्यान से देख रहे हैं। इस दूकान के सामने एक और दूकान है, लेकिन उसपर कोई विक्रेता नही है। कुछ ऐसी भी दूकानें यहां होती हैं जिनपर कोई विक्रेता नहीं वैठता। जिसे जो पुस्तक या समाचारपत्र चाहिए, वह उसे ले ले और उसकी कीमत वहां रख दे।

प्लेटफार्म पर हम घूम रहे थे कि धू-धू करती हुई रेलगाड़ी आ पहुंची। रेलगाड़ी के ठहरते ही उसका स्वयंचालित फाटक खुला। एक ओर से मुसाफिर रेल से नीचे उतरे और दूसरी ओर से उसमें सवार हुए। फाटक अपने-आप विना आवाज किये वन्द हो गया और रेलगाड़ी चल दी। लेकिन अरे! दरवाजा वन्द हो जाने से मेरा दुभाषिया प्लेटफार्म पर ही रह गया! अव वह मुझे इशारा कर रहा है अगले स्टेशन पर उतर जाने के लिये। इससे तुम समझ गयी होंगी कि रेल के दरवाजे के पास या खड़े होकर सफर करने की समस्या यहां नहीं है। जबकि हमारे यहां कानूनों को लिखकर चिपका देने मात्र से काम चल जाता है—'पायदान पर खड़े होकर यात्रा न कीजिए', 'बाहर गर्दन निकालकर न झांकिये'।

रेल में सवार हो जाने के बाद जगह पकड़ने के लिए भी आपाधापी यहां नहीं है। जगह खाली पड़ी रहती है और लोग खड़े-खड़े चले जाते हैं। अवश्य ही वृद्धजनों और शिशुवाली माताओं का ध्यान रक्खा जाता है।

टैक्सी भी यातायात का एक उत्तम साधन है। टैक्सी में एक किलो मीटर के दस कोपेक देने पड़ते है। यहां टैक्सियों में बेतार का तार लगा रहता है, जिससे टेलीफोन द्वारा हम जहां चाहें टैक्सी मंगा सकते हैं।

एक बार मेरे मन में आया कि बिना दुभाषिए के अकेले ही नगर की सैर करूं। था तो यह साहस का काम, फिर भी मैंने ठान ही ली। जहां मुझे जाना था, उस स्थान का पता मैंने रूसी में याद कर लिया और टैक्सीवाले से वहां चलने को कहा। टैक्सी में मैं बैठ गया, लेकिन मेरे मन में तब तक दुविधा बनी रही जब तक कि मैं निर्दिष्ट स्थान पर न पहुंच गया।

आज हम लोग पुस्तकों की एक दूकान देखने गये। तुम शायद न जानती हो कि जैसे यहां कोई प्राईवेट स्कूल नहीं, वैसे ही दूकान भी प्राईवेट नहीं है। सब दूकानें सरकारी हैं, इसलिए सब पर एक-सा भाव रहता है। पुस्तकगृह की दोमंजली इमारत बड़ी शानदार है। अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग विषयों की पुस्तकें रक्खी हुई हैं। कला, संस्कृति' इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, साहित्य और विज्ञान आदि विषयों की पुस्तकें देखने में आ रही हैं। विदेशी भाषा और साहित्य का विभाग अलग है। हिन्दी, उर्दू, तेलुगु, आदि भारतीय भाषाओं के कोश रक्खे हुए हैं। अभी कुछ दिन पहले कबीर और कवि 'बच्चन' की पुस्तकें

रूसी में प्रकाशित हुई थीं, लेकिन शीघ्र ही ये पुस्तकें अप्राप्य हो गयीं; केवल कबीर की एक अंतिम प्रति मिल सकी। चित्रों के बड़े-बड़े पोस्टर बिक रहे हैं। एक पोस्टर पर मां और बालक का आकर्षक चित्र है। मां बालक को झूठ न बोलने की ताकीद कर रही है। दूसरे पोस्टर पर एक बालिका अनेक भाषाओं में 'शांति' शब्द लिख रही है—अंग्रेजी में 'पीस' और रूसी में 'मीर' लिखा हुआ है। इन दोनों पोस्टरों को मैंने तुम्हारे लिये खरीद लिया है। दो फिल्में भी खरीदी हैं—एक टेलीफोन के ऊपर और दूसरी अक्तूबर-क्रांति के ऊपर। नयी प्रकाशित पुस्तकों का यहां अलग विभाग है—पुस्तकों के बंडल खोलकर उन्हें अलग रक्खा जा रहा है।

पुस्तक-गृह की पहली मंजिल पर बड़े-बड़े अक्षरों में रूसी में लिखा है—'पुस्तक सबसे बड़ा उपहार है।' पुस्तक सम्बन्धी लेनिन के वक्तव्य पोस्टरों पर लगे हुए हैं। अगले वर्ष २० हजार अलग-अलग विषयों पर पुस्तकों के प्रकाशित करने की योजना घोषित की जा चुकी है।

यहां के प्रकाशन-गृह हमारे देश के प्रकाशन-गृहों के समान नहीं होते। प्रकाशन-गृहों का नियंत्रण सरकार के हाथ में रहता है। भिन्न-भिन्न विषयों की पुस्तकों के लिए यहां अलग-अलग प्रकाशन-गृह होते हैं, उदाहरण के लिए—समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र की पुस्तकें, राजनीति की पुस्तकें, उपन्यास सम्बन्धी पुस्तकें, बाल-साहित्य की पुस्तकें, हाईस्कूल की पुस्तकें, खेलकूद और कसरत सम्बन्धी पुस्तकें और विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें भिन्न-भिन्न प्रकाशन-गृहों द्वारा प्रकाशित की जाती हैं। [illegible]

की संख्या में पुस्तकें छपती हैं; इनमें तालसताय, पुश्किन, गोर्की, चेखव, मायाकोव्स्की, शोलोखोव, जैक लंडन, बाल्ज़ाक, डिकेन्स, शेक्सपियर और रवींद्रनाथ टैगोर आदि लेखकों की रचनाएं मुख्य हैं। सोवियत संघ में कुल मिलाकर प्रति वर्ष १ अरब २० लाख पुस्तकें छपती हैं। इसीलिए पुस्तकों की कीमत यहां अधिक नहीं होती। सामान्यतया २६ कोपेक से लगाकर ५२ कोपेक तक पुस्तकों की कीमत रहती है। सिनेमा के टिकटों के लिए १० कोपेक से ५० कोपेक तक खर्च करने पड़ते हैं, इस हिसाब से किताबों की कीमत बहुत कम है।

पुस्तकों की दूकान से चलकर हमने खाने की एक दूकान में प्रवेश किया। खाने की किस्म-किस्म की चीजें रक्खी हुई हैं। आजकल खाने की तैयार चीजों को बिना हाथ लगाये, उन्हें अन्य उपायों द्वारा शुद्ध और साफ रक्खा जाता है। केवल प्रौढ़ों के लिए ही नहीं, बल्कि शिशुओं के लिए भी खाने-पीने की चीजें बड़े व्यवस्थित ढंग से सजाकर रक्खी हैं—फल, पावरोटी, गोश्त, मछली, अण्डे, दूध के डिब्बे आदि जिस चीज की आपको जरूरत हो, खरीद सकते हैं। हां, बच्चों का साहित्य भी है, यदि किसी को जरूरत हो।

दो दिन की बूंदाबांदी के बाद आज सूर्य के दर्शन हुए हैं। मौसम बड़ा सुहावना लग रहा है। दिनभर घूमते-घूमते बिल्कुल थक गया हूं, लेकिन आज रात को सर्कस देखने जाना है। तुम शायद न जानती हो कि यहां के लोग सर्कस के बड़े शौकीन होते हैं। बड़े-बड़े शहरों में यहां सर्कस-घर बनें हुए हैं और जो नये शहर बसाये जा रहे हैं उनमें सर्कस-घरों के बनाने की योजना है।

सर्कसों में शेर, तेंदुआ, चीता, घोड़ा और बन्दर आदि जानवरों द्वारा जो खेल दिखाये जाते हैं, उन्हें देखकर हम आश्चर्यमुग्ध हो जाते हैं और उनसे आत्मीयता स्थापित करने लगते हैं।

सर्कसघर दर्शकों से खचाखच भरा हुआ है। लोग गैलरियों में बैठे हुए खेल शुरू होने की प्रतीक्षा में हैं। सबसे पहले सर्कस का मैनेजर मंच पर उपस्थित हुआ। उसने बोलना शुरू किया—"साहबान, आप लोग जानते हैं कि तन्दुरुस्ती बड़ी भारी नयामत है। डाक्टरों की शरण लेने से तन्दुरुस्ती कभी ठीक नहीं रह सकती। तो फिर तन्दुरुस्ती अच्छी रखने के लिए क्या किया जाये? यदि आप इसपर गौर करना चाहते हैं तो आइए, हमारा खेल देखिए।" मैं सोचने लगा कि क्या सर्कस भी शुद्ध मनोरंजन की वस्तु नहीं? यहां भी प्रयोजन और उद्देश्य की बात?

अस्तु, सर्कस का खेल बहुत देर तक चलता रहा। श्रीमती जुकोव बीच-बीच में हमें समझाती रहीं। यह सर्कस जानवरों का इतना नहीं था जितना कि स्त्री-पुरुषों का। उछल-कूद, भाग-दौड़, तार पर चलना, एक-दूसरे को ऊपर उठा लेना, किसी के सिर पर खड़े हो जाना आदि बातों की ही मुख्यता थी। यदि हम शारीरिक सन्तुलन रख सकते हैं तो ही सर्कस का खेल सफलतापूर्वक दिखाया जा सकता है।

रात बहुत हो गयी है। पत्र यहीं समाप्त कर देना चाहता था। लेकिन एक बात रह गयी है, उसे भी लिख देना चाहता हूं।

बम्बई विश्वविद्यालय और लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के बीच बहुत दिनों से लेनिनग्राड में भारत की प्राचीन भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन के लिए चेयर स्थापित करने की बातचीत चल रही है। इस चेयर के स्थापित हो जाने पर बम्बई विश्वविद्यालय की ओर से लेनिनग्राड में प्राध्यापक और विद्यार्थी भेजे जायेंगे। इस सम्बन्ध में बम्बई विश्वविद्यालय से मुझे आदेश मिला था कि मैं लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के अधिकारियों से बातचीत करूं।

प्रोफेसर बारान्निकोव के साथ मैं लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर की सेवा में उपस्थित हुआ। मिलकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। विश्वविद्यालय में २० हजार विद्यार्थी शिक्षा पा रहे हैं। कुल मिलाकर १३ विभाग हैं जिनमें विविध विषयों की शिक्षा दी जाती है। लाइब्रेरी में २० लाख पुस्तकें हैं।

चेयर के सम्बन्ध में चर्चा हुई। मैंने बताया कि बम्बई विश्वविद्यालय में रूसी भाषा के डिप्लोमा कोर्स का अध्यापन कई वर्षों से चल रहा है जिसके लिए हमें लाइब्रेरी के वास्ते रूसी पुस्तकों की आवश्यकता है। वाइस-चांसलर साहब ने बातचीत में काफी दिलचस्पी ली। उन्होंने कुछ पुस्तकें बम्बई विश्वविद्यालय के लिए भेंट कीं और मुझे फिर से जल्दी ही लेनिनग्राड आने का निमंत्रण दिया। मैंने कहा कि अब की बार मैं कोशिश करूंगा बिना दुभाषिए के उनके साथ रूसी में बातचीत करने की।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

वोलशेयी थियेटर में "हंस सरोवर" का एक दृश्य

७

यूरोपिया होटल,
लेनिनग्राड
३१ अक्तूबर, १९६५

प्रिय कल्पना,

लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर ने विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी देखने का आग्रह किया। तुम जानती हो, यहां के लोगों को पढ़ने-लिखने का बहुत शौक है। सड़कों पर और मोहल्ले-मोहल्ले में किताबों और समाचारपत्रों की कितनी ही दूकानें हैं!

लाइब्रेरियों का यहां कोई हिसाब नहीं। मास्को की लेनिन लाइब्रेरी में २ करोड़ २० लाख पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का संग्रह है, और ये केवल रूसी भाषा में ही नहीं, दुनिया की १६० भाषाओं में हैं। जो कोई नयी पुस्तक सोवियत संघ में छपती है, उसकी एक प्रति इस लाइब्रेरी में अवश्य भेज दी

जाती है; विदेशों में छपी हुई पुस्तकें भी यहां आती हैं। सोवियत संघ में और भी बहुत-सी लाइब्रेरियां हैं जिनसे लाखों पाठकों को लाभ होता है।

आज लेनिनग्राड विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी देखने गये। यहां विविध विषयों पर भिन्न-भिन्न भाषाओं में अनेक पुस्तकें हैं जिनमें कितनी ही महत्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां हैं। हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में भी बहुत-सी पुस्तकें इस लाइब्रेरी में हैं।

यहां मेरे एक मित्र प्रोफेसर विक्टर बालिन मिल गये। वे बम्बई की इंडियन इंस्टिट्यूट आफ टैक्नालोजी, पवई में रूसी पढ़ाते थे। इस प्रतिष्ठान के बारे में तुमने सुना होगा। भारत और सोवियत संघ के पारस्परिक सहयोग का यह एक नमूना है जिसमें सोवियत सरकार का लाखों रुपया लगा हुआ है और कितने ही सोवियत विशेषज्ञ यहां काम कर रहे हैं। यह प्रतिष्ठान १९५८ में शुरू किया गया था। इस तरह के और भी प्रतिष्ठान हमारे यहां हैं जिनमें इंजीनियरी और टैक्नीकल शिक्षा दी जाती है। खड़गपुर, मद्रास, कानपुर और नयी दिल्ली में इस प्रकार के प्रतिष्ठान हैं जिनमें प्रवेश पाने के लिए हर साल हजारों विद्यार्थी परीक्षा में बैठते हैं। लेकिन प्रवेश वे ही पाते हैं जो ऊंचे अव्वल दर्जे में पास होते हैं।

खैर, प्रोफेसर बालिन से पुरानी मुलाकात थी। संयोग की बात, सर्दी के कारण वे गर्म कपड़ों से लदे थे और मैं भी। उन्होंने प्रश्न किया—"आप कहां से आ रहे हैं?

'बम्बई से।'

'कौन-से कालेज में पढ़ाते हैं ?'

'माटुंगा के रूइया कालेज में ।'

'क्या आप डाक्टर जगदीशचन्द्र जैन को जानते हैं ?'

यह सुनकर मैं क्षण भर के लिए उन्हें देखता रह गया। जरा मुस्कराकर मैंने उत्तर दिया—आप... । इसके बाद तो हम लोग खूब ही हंसे, गले मिले और एक—दूसरे को न पहचान सकने के कारण मन-ही-मन बड़े शर्मिन्दा भी हुए । शायद उन्हें उम्मीद न थी कि मैं एकदम बिना चिट्ठी-चपाती के लेनिनग्राड में आ धमकूंगा ।

हम लोग ओरिंटिएल विभाग देखने चले । इसके अन्तर्गत है भारतीय विभाग । इस विभाग की अध्यक्षा श्रीमती वेरा नोविकोवा ने हम लोगों का स्वागत किया । आप पिछले २० वर्षों से यहां बंगला पढ़ा रही हैं । कुछ समय के लिए बंगाल में भी रही हैं । बंगाली अच्छी तरह बोलती हैं । जब उन्हें पता चला कि मैं भी थोड़ी-बहुत बंगाली जानता हूं तो मुझसे भी बंगाली में बोलने लगीं । इनके विभाग में ७ विद्यार्थी बंगाला पढ़ रहे हैं ।

प्रोफेसर विक्टर बालिन हिन्दी और उर्दू के प्राध्यापक हैं । कहानी-साहित्य का आपने विशेष अध्ययन किया है और विष्णु प्रभाकर की कहानियों पर थीसिस लिखने पर आपको पी-एच० डी० मिली है । इस विभाग में ९ विद्यार्थी हैं जो दो भागों में विभक्त हैं—हिन्दी और उर्दू । हिन्दी के विद्यार्थी हिन्दी भाषा के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के इतिहास का भी अध्ययन करते हैं ।

प्रोफेसर निकिता गुरोफ तेलुगु के अध्यापक हैं। आपने तेलुगु व्याकरण पर थीसिस लिखकर पी-एच० डी० प्राप्त की है। आपको तेलुगु बहुत अच्छी लगती है। प्रोफेसर गुरोफ मुझसे हिन्दी में बातचीत करते रहे। आप बंगला भी पढ़ लेते हैं।

सिम्योन रूदिन आठ-नौ साल से तमिल पढ़ा रहे हैं। तमिल भाषा की रचना पर पी-एच० डी० की थीसिस लिखी है। आपका तमिल-रुसी भाषा का शब्दकोश छपने वाला है। आप भी हिन्दी बोलते हैं।

सुश्री तात्याना कतेनिना—जिन्हें कात्यायनी कहते हैं—१५ साल से मराठी और संस्कृत पढ़ा रही हैं। मराठी और हिन्दी व्याकरण की ओर आपकी विशेष रुचि है। इस सम्बंध में आपने कुछ लेख भी लिखे हैं।

व्लैदीमिर एरमन संस्कृत और पाली पढ़ाते हैं। आप सात-आठ साल से इस विभाग में कार्य कर रहे हैं। आपके विभाग में ४ विद्यार्थी हैं।

श्रीमती एलेना बसालिना बंगाली विभाग में काम करती हैं। आपने रवीन्द्रनाथ टैगोर का 'गोरा' उपन्यास, उनकी कुछ कहानियों और कविताओं का रूसी में अनुवाद किया है।

श्रीमती नताला तस्ताया पंजाबी साहित्य और हिन्दी पढ़ाती हैं। किसी स्थानीय प्रकाशनगृह में भी काम करती हैं।

फेलिक्स वगदामोव हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्यापक हैं। यशपाल के बारे में थीसिस लिखी है।

प्रायः सभी अध्यापक लेनिनग्राड विश्वविद्यालय के स्नातक हैं और अपनी संस्था के लिए बहुत परिश्रमपूर्वक कार्य कर

रहे हैं।

रवींद्रनाथ श्रीवास्तव ने एक्सपेरिमेंटल फोनेटिक्स (प्रयोगात्मक स्वर-विज्ञान) विभाग के अध्यक्ष मातुसेविच के निर्देशन में 'हिन्दी में विभिन्न व्यंजनों का स्वभाव और विभाजन' (नेचर एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन ग्राफ कान्सोनेंट ग्रुप्स इन हिन्दी) इस विषय पर रूसी भाषा में अपनी थीसिस तैयार की है। इस विश्वविद्यालय से थीसिस प्रस्तुत करने वाले आप प्रथम भारतीय छात्र हैं—भारत सरकार के विद्यार्थी हैं। तीन वर्ष तक आपने रूसी का अध्ययन किया है। यहां रूसी विद्यार्थियों के साथ छात्रावास में रहते हैं। पूना की डेक्कन कालेज इस्टिट्यूट में आपने अर्जी की है।

लेनिनग्राड जैसे सुन्दर स्थान में भारतीय भाषाओं और साहित्य के जानकार रूसी विद्वानों से मिलकर सचमुच बड़ी प्रसन्नता हुई। भाषा विज्ञान के संबंध में चर्चा हुई। मैंने कहा कि बम्बई विश्वविद्यालय में भाषा-विज्ञान का अलग विभाग है, तथा भारत के अन्य विश्वविद्यालयों में भी इस विषय की शिक्षा का प्रबन्ध है। अपने संक्षिप्त भाषण में मैंने संस्कृत के साथ-साथ प्राकृत भाषाओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए प्राकृत भाषाओं के अध्ययन की आवश्यकता पर जोर दिया। वस्तुतः हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि भारतीय आधुनिक भाषाओं का संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत भाषाओं के साथ संबंध है। मेरा भाषण रिकार्ड कर लिया गया। इस बीच में प्रोफेसर मुकर्जी भी, जो किसी कृषि-संस्था का निरीक्षण करने गये थे, आ गये। उन्होंने बंगला में भाषण दिया।

जब कोई प्रतिनिधि मंडल भारत से लेनिनग्राड आता तो इस प्रतिष्ठान के हिन्दी, उर्दू, मराठी, पंजाबी, बंगाली तमिल और तेलुगु के प्राध्यापक और विद्यार्थी दुभाषिए का काम करते हैं। मुझे लगा कि एक-दूसरे की भाषा का ज्ञान प्राप्त किये बिना हम नजदीक नहीं आ सकते। यह समझना भूल है कि अंग्रेजी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है और अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त कर हम निश्चिन्त होकर कहीं भी आ—जा सकते हैं। अस्तु, देर काफी हो गयी थी। कात्यायनीजो ने भारतीय ढंग से हाथ जोड़कर नमस्ते किया और हम लोग जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर अपने होटल की ओर चले।

आज रात को यहाँ से प्रस्थान कर रहे हैं। लेकिन उससे पहले एक 'बैले' देखना है। सोवियत संघ में थियेटर, नृत्य-अभिनय (बैले) और गीति-नाट्य (आपेरा) का खूब ही प्रचार है। यहां लगभग ५०० व्यावसायिक नाट्यशालाएं होंगी और कितनी ही नाट्य कम्पनियां। लगभग १०८ नाट्यशालाएं तो बालकों और नवयुवकों की ही हैं। नाट्यशालाओं में ४५ भाषाओं में नाटक दिखाये जाते हैं। आजकल कोई भी ऐसा शहर नहीं जहां थियेटर न हो। मास्को का बोलशोई और लेनिनग्राड का किरोव नाट्यगृह जग-प्रसिद्ध हैं। टिकट खरीदने वालों की यहां भीड़ लगी रहती हैं! इसलिए पहले से ही टिकट खरीद कर जगह सुरक्षित करानी पड़ती है। चाइकोव्स्की, ग्लिस्का (१८०६—१८५७), दरगोमिजस्की आदि लेखकों के नृत्य-अभिनय और गीति-नाट्य सुप्रसिद्ध हैं। 'युद्ध और शान्ति' (वार एण्ड पीस), 'रोमियो और जूलियट', (रोमियो एण्ड

जूलियट), 'शान्त डान', (द क्वाइट डान), 'रक्त पुष्प' (रेड फ्लावर), 'समुद्र तट पर' (ग्रान द सी-कोस्ट), ग्रादि समसामयिक संगीत- लेखकों ने कितने ही गीति-नाट्य ग्रौर नृत्य-ग्रभिनय प्रस्तुत किये हैं जो यहां लोकप्रिय हैं।

रात्रि के समय 'हंस सरोवर' (रूसी में लिविदिनोए ग्रोज़िरो—स्वान लेक) नाम का नृत्य-ग्रभिनय देखने गये। यहां की नाट्यशालाएं सचमुच दर्शनीय हैं। उनके विस्तृत भवन, चार-चार, पांच-पांच मंजिलों की इमारत ग्रौर ग्रर्ध-चंद्राकार गैलरियां देखते ही बनती हैं। दीवारों पर हाथ से की गयी सुनहरी चित्रकारी बनी हुई है ग्रौर बेशकीमती पर्दे लगे हैं। जार के जमाने का यह एक रमणीय नाट्यगृह है जहां जार ग्रपने परिवार ग्रौर इष्टमित्रों के साथ नाटक-नाटिकाग्रों द्वारा ग्रपना मन बहलाया करता था।

कोई राजकुमार ग्रपनी मित्र-मंडली के साथ ग्रपना जन्म-दिवस मना रहा है। इतने में राजकुमार की माता वहां ग्रा पहुंचती है ग्रौर रंग में भंग हो जाता है।

राजमाता के चले जाने पर फिर से रंग-रेलियां शुरू हो जाती हैं। ग्रभ्यागत राजकुमार को बधाई देकर ग्रपने-ग्रपने घर लौट जाते हैं। इस समय राजकुमार को ग्राकाश में उड़ती हुई श्वेत हंसों की पंक्ति दिखायी देती है। हंसों को देखकर उनका शिकार करने की भावना उसके मन में बलवती हो उठती है।

घने जंगल के बीच एक सरोवर है जिसमें श्वेत हंस ग्रानन्द-पूर्वक क्रीड़ा कर रहे हैं। वस्तुतः ये हंस सुन्दर युवतियां हैं जिन्हें किसी जादूगर ने जादू के बल से हंस बना दिया है।

केवल रात्रि के समय वे मानवी रूप धारण कर सकते हैं। एकनिष्ठ प्रेम ही उन्हें इस जादू के प्रभाव से मुक्त कर सकता है।

राजकुमार एक श्वेत हंस का शिकार करने के लिए धनुष-बाण चलाना ही चाहता है कि हंस एक सुन्दर युवती का रूप धारण कर लेता है। इसका नाम है ओडेट—यही हंसों की रानी है। राजकुमार उसकी ओर आकृष्ट होता है। वह उसे पकड़ लेना चाहता है। लेनिन हंसों की रानी जादूगर के डर से भागकर अपने साथियों में मिलती है और नृत्य करने लगती है।

प्रातःकाल होने को है। शीघ्र ही ये सुन्दर युवतियां हंसों के रूप में बदल जायेंगी। ओडेट राजकुमार से विदा लेती है और श्वेत हंस फिर से सरोवर में क्रीड़ा करने लगते हैं।

नृत्य-संगीत का समारोह चल रहा है। राजकुमार को, आमंत्रित सुन्दरियों में से किसी एक को चुनकर उसे प्राण-वल्लभा बनाना है लेकिन वह किसी की ओर भी आकृष्ट नहीं होता, क्योंकि उसके मन में हंसों की रानी बसी हुई है। फिर भी राजमाता का अनुरोध स्वीकार करना है। इस बीच में जादूगर अपनी कन्या ओडाइल को लेकर वहां उपस्थित होता है। राजकुमार ओडाइल और हंसों की रानी का एक-जैसा सौंदर्य देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है।

जादूगर चाहता है कि राजकुमार हंसों की रानी से विमुख होकर उसकी कन्या से प्रेम करने लगे। वह अपने दाव-पेंच में सफल होता है और राजकुमार ओडाइल से प्रेम करने लगता है।

लेकिन राजकुमार को अचानक ही अपने महल की खिड़की में से हंसों की रानी का दिव्य रूप दिखायी देता है। अब उसे पता लगता है कि उसके साथ धोखा किया गया है। वह हंसों की रानी के पास दौड़ जाता है।

हंसों की रानी अपने हंसों के साथ उदास बैठी हुई है। राजकुमार उसके पास पहुंचकर अपने शाश्वत प्रेम की घोषणा करता है।

जादूगर गुस्से से भर जाता है। वह अपने काले हंसों को बुलाकर आदेश देता है कि वह हंसों की रानी को राजकुमार से अलग कर दे।

राजकुमार और जादूगर में संघर्ष होता है। जादूगर का एक पंख टूटकर गिर पड़ता है और जादूगर की शक्ति नष्ट हो जाती है।

प्रेम की विजय होती है। हंसों की रानी जादू के प्रभाव से मुक्त हो जाती है।

ए० ई० ओसिप्येनको इस लोकनृत्य की अभिनेत्री है जो सोवियत संघ में 'जन-कलाकार' के रूप में सम्मानित है। जब वह अपनी लचीली देह की भाव-भंगिमा और चंचल पगों की क्षिप्र गति से नृत्य का अभिनय करती है तो दर्शकगण मंत्र-मुग्ध होकर करतल ध्वनि करने लगते हैं। परदा गिरते ही यह ध्वनि क्रमशः तीव्र होने लगती है। इसपर नट और नटी परदे के बाहर उपस्थित हो, झुककर दर्शकों के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हैं। यह क्रम तीन-चार बार चलता है और अन्त में करतल ध्वनि धीरे-धीरे मन्द पड़ जाती है।

न लग जाये। यहां का कोई काम हो तो निस्संकोच लिखिए। हम लोगों को याद रखिए, भूल मत जाइये।" और हम लोग चुपचाप उनके आदेश का पालन कर अपनी जगह पर आ बैठे।

रेल के रवाना होने में कुछ मिनट बाकी थे। कांच की खिड़की में से प्लेटफार्म पर खड़े हुए प्रोफेसर बारान्निकोव और श्रीमती जुकोव दिखायी पड़ रहे थे। घड़ी की सुई सरक रही थी और वे दोनों हमारे सामने मौन भाव से खड़े उंगलियां दिखाकर गाड़ी छूटने के एक-एक मिनट गिन रहे थे!

रेल मास्को की ओर तेजी से दौड़ रही थी, और मेरे मस्तिष्क में लेनिनग्राड की स्मृतियों के चित्र बन-बिगड़ रहे थे। काश! लेनिन की इस महान् नगरी में मैं कुछ और दिन रह सकता!

सुबह के ठीक सात बजे मास्को पहुंच गये। हम लोग अपना सामान उठाकर कुछ दूर चले ही थे कि इतने में मिस्टर बी० दिखायी दे गये। वे हमें स्टेशन पर लेने आये थे।

मिस्टर बी० बड़े दिलचस्प नौजवान व्यक्ति हैं। तीन महीने भारत रहकर आपने हिन्दी का अभ्यास किया है। बीच-बीच में हिन्दी में बातचीत करते हैं। भारत में १८५७ में होने वाले प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध पर आपने काम किया है। आपका कहना है कि अंग्रेज इतिहासकारों ने इस युद्ध को गदर का नाम दिया है, लेकिन यह ठीक नहीं है। यह युद्ध भारतीय जनता का सोच-विचार कर किया हुआ व्यवस्थित आन्दोलन था जिसका जन-जागृति से गहरा सम्बन्ध है। आपका यह प्रबन्ध रूसी भाषा में है। मैंने अनुरोध किया कि यदि वे समय निकाल कर उसके

कुछ अंश का अंग्रेजी या हिन्दी में अनुवाद करा सकें तो बहुत अच्छा हो।

मिस्टर बी० के पास उनकी स्वयं की मोटर है जिसे उन्होंने ३,००० रूबल में खरीदा है। उनकी पत्नी कहीं काम करती हैं, इसलिए उनके बच्चे किंडर गार्टन स्कूल में पढ़ते हैं। दर-असल समाजवादी देशों में नर्सरी और किंडरगार्टन स्कूलों की काफी मांग है। यदि माता-पिता दोनों ही नौकरी करते हों तो उनके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे दिनभर अपने बच्चे को किसी अनुभवी अध्यापिका के सुपुर्द कर दें जो उसकी भली भांति देखभाल कर सके। नौकरी करने वाली मां के लिए तो यह और भी जरूरी है क्योंकि वह दोनों काम कैसे कर सकती हैं ?

स्कूल दो प्रकार के होते हैं—एक नर्सरी, दूसरे किंडर गार्टन। नर्सरी स्कूलों में ३ साल तक के और किंडर गार्टन में ३ से ७ साल तक के बच्चों को भर्ती किया जाता है। यदि कोई अपने शिशु को इन स्कूलों में रखना चाहता है तो उसे १६ रूबल माहवार देने पड़ते हैं। इसमें शिशु का खाना-पीना और बोर्डिंग भी शामिल है। नौकरी-पेशा लोग शाम को काम से लौटते समय स्कूल से अपने शिशु को ले आते हैं और अगले दिन सुबह फिर से वहीं पहुंचा देते हैं।

मकान यहां बहुत बड़ी संख्या में बनाये जा रहे हैं। मकानों के अलग-अलग ब्लाक बनाकर तैयार रखे जाते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें एक साथ खड़ा कर झटपट मकान बना दिया जाता है। गगनचुम्बी अट्टालिकाएं यहां दो-

आ रहे हैं। बर्फ के कारण सड़क पर कीचड़ हो जाने से फिसलन हो गयी है इसलिए मिस्टर बी० बड़ी सावधानी से मोटर चला रहे हैं।

हवाई अड्डे का दृश्य बड़ा मनमोहक है। इसका विस्तृत हाल बहुत दूर तक चला गया है। मुसाफिरों की कतार लगी हुई है—उनका सामान तोला जा रहा है, पासपोर्ट की परीक्षा की जा रही है। पहली मंजिल पर एक बहुत बड़ा प्रतीक्षालय है जहां भोजन करने के लिए सुन्दर रेस्तरां है। छुरी-कांटों, तश्तरियों, प्यालों तथा अंगूर, सेव आदि फलों से सजी मेजें दिखायी दे रही हैं। उपहार की वस्तुएं खरीदने के लिए दूकान है। समाचारपत्र बिक रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोन सर्विस का प्रबन्ध है। हवाई जहाजों के आवागमन की घरघराहट सुनायी दे रही है।

हम लोगों ने जल्दी-जल्दी हाथ-मुंह धोकर नाश्ता किया। शोरेमेत्येवो हवाई अड्डे की भांति यहां भी कंक्रीट के चौरस मैदान हैं जिनपर ट्रेलर गाड़ियाँ यात्रियों को जहाज तक ले जाती हैं; पैदल चलना नहीं पड़ता।

ताशकन्द जाने वाले यात्रियों की डीलडौल और वेशभूषा से वे मास्को निवासियों की अपेक्षा बहुत भिन्न मालूम होते हैं। पुरुष लबादा और रूयेंदार टोपी पहने हुए हैं, स्त्रियां मूल्यवान टोपियां लगाये हुए हैं; दाये-बायें उनकी दो वेणियां लटक रही हैं और अलंकारों से वे विभूषित हैं। कुछ स्त्रियां बच्चों को गोद में लिये हुए हैं। अपनी गठरी-मुठरी लिये यात्री हवाई-जहाज में बैठने के लिए उत्सुक हैं। हम लोग अन्दर

जाकर अपनी जगह पर बैठ गये। यहां भी वही विमान-परिचारिका—अपनी मोहक पोशाक और आकर्षक टोपी से सज्जित, यात्रियों की सुख-सुविधा का ध्यान रखने वाली, जल्दी-जल्दी कदम रखकर चलने वाली और अपनी मुस्कराहट से शुभ्र हास्य विखेर देने वाली।

दोपहर के साढ़े ग्यारह बजे रवाना होकर लगभग ४ बजे हम लोग उजवेकिस्तान गणतंत्र की राजधानी ताशकंद में दाखिल हो गये। हवाई-अड्डे पर लाल-लाल अक्षरों में लिखा हुआ था TOSKENT। बंगला की भांति उजवेक भाषा में अ का उच्चारण ओ जैसा होता है।

एक वृद्ध सज्जन एक महिला के साथ हमें लेने आये थे। हिन्दुस्तान के किसी अन्य प्रतिनिधि मंडल के सदस्य भी उस जहाज से उतरे थे, इसलिए हम लोगों को पहचानने में उन्हें कुछ समय लगा। वृद्ध सज्जन बड़ी अच्छी उर्दू बोल रहे थे। मैं सोच रहा था यहां भी उर्दू !

हम लोगों के ठहरने का इन्तजाम छह मंजिल के ताशकन्द होटल में किया गया था। बड़े कलात्मक ढंग से कमरा सजा हुआ था—सुन्दर रेशमी पर्दे, मुलायम गद्दे-तकिये और रुयेंदार खूबसूरत कंबल, कपड़े टांगने की कपाटनुमा अलमारियां, पानी के लिए सुराईनुमा लाल कांच की बोतल, ताजे फूलों से भरा फूलदान, लाल रंग का टेलीफोन और नये युग का चमत्कार टेलीविजन।

रात को 'बैले' देखने का कार्यक्रम पहले से ही निश्चित कर दिया गया था, इसलिए जल्दी से हाथ-मुंह धोकर हम

नीचे भोजन के लिए आये। मेज अंगूर, अनार, सेव और तन्दूरी रोटी से सजी हुई थी। बड़े तकल्लुफ के साथ उजबेकी ढंग से मेहमाननवाजी की गयी। मेजबान यही उलाहना देते रहे कि हम लोग कुछ भी नहीं खाते—बहुत कम खाते हैं, और इतना कम खाने से कैसे काम चलेगा, आदि।

होटल के सामने सड़क पार करके एक रमणीय फव्वारा है जिसमें से रात के ११ बजे तक पानी गिरता रहता है; गर्मी के दिनों में यहां काफी भीड़ रहती है। इसके पास ही अलीशेर नवाई नाम का सुप्रसिद्ध आपेरा थियेटर है। अलीशेर नवाई १५ वीं शताब्दी का एक प्रतिभाशाली कवि हो गया है जिसे उजबेक साहित्य का जन्मदाता माना जाता है। दार्शनिक होते हुए भी नवाई ने अपना सारा जीवन जनता के सुख और आनन्द के लिए न्यौछावर कर दिया था। नवाई की जीवनी पर ताशकंद के लेखक ऐवक ने एक सुन्दर उपन्यास लिखा है जिसपर उसे स्तालिन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

इस थियेटर को १९४७ में सोवियत के प्रसिद्ध वास्तुशास्त्री श्चुशोफ ने बनाया था। यह चार मंजिल की विशाल इमारत है। प्रेक्षागृह में लगभग दो हजार दर्शक बैठ सकते हैं। तीसरी मंजिल पर सात बड़े-बड़े हाल हैं जिनमें सफेद, काले, पीले और नीले आदि रंग-विरंगे संगमर्मर के पत्थरों पर प्राचीन शिल्प-कला दिखायी देती है। प्रत्येक हाल में समरकंद, बुखारा, फ़रगाना, खोरेज़म, तेरेमेज़ और ताशकंद का कला-कौशल चित्रित है। पत्थर और लकड़ी पर सुन्दर नक्काशी का काम किया गया है; दीवारें भित्तिचित्रों से शोभित हैं। रंगमंच

को सजाने में उजबेक कलाकारों ने अपनी दक्षता का परिचय दिया है जिनमें उजबेक साइन्स अकादमी के सन्मान्य सदस्य सीरीं मुदादोफ प्रमुख हैं। थियेटर के कुछ कमरों को कवि अलीशेर नवाई की कृतियों के आधार से चित्रित किया गया है। फूल-पत्तियों का काम चित्रकार चिंगिज अहमरोफ ने किया है। रंगमंच के लिए सुन्दर मखमल पर स्वर्ण-सूत्रों से बेलबूटे निकाल कर परदा तैयार किया गया है।

आज यहां पुश्किन के 'बख्शी सराय फव्वारा' नामक उपन्यास पर आधारित एक 'बैले' दिखाया जा रहा है। थियेटर हाल खचाखच भरा हुआ था। हम लोगों को पहुंचने में जरा देर हो गयी।

कोई उजबेक किसी सुन्दरी से प्रेम करता है। वह उसे भगाकर ले जाना चाहता है, लेकिन उसकी बीवी अपने खाविंद को ऐसा करने से मना करती है। इसी बात को बड़े प्रभावशाली कलात्मक ढंग से नृत्य-नाटिका द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इस नाटिका में ताशकंद का प्रसिद्ध कलाकार इस्माइल उजबेक की बीबी का पार्ट करता है। इस्माइल उमारोफ और काबुलवा के साथ ताशकंद के सुप्रसिद्ध कलाकारों में गिना जाता है। नृत्य-नाटिका की संचालिका हैं गलिना इस्माइलवा, जो सोवियत संघ में 'जनकलाकार' की पदवी से सम्मानित हैं। आपकी उम्र लगभग ५२-५३ वर्ष की होगी। नाटिका का संचालन आपने इतने कौशल से किया कि दर्शकों की तालियों से बार-बार नाट्यगृह गूंज उठता है।

रूस के दक्षिण में बख्शी सराय नामक शहर

भी आंसुओं का एक फव्वारा है जिसे आज से ४३८ साल पहले वहां के सरदार खान अब्दुल अजीज ने अपनी बीवी की मृत्यु पर अपना शोक प्रकट करने के लिए बनवाया था। पहले तो उसने इस काम के लिए सौ आदमियों को तैनात किया जो एक साल तक उसकी बीवी की याद में रोते-बिलखते रहे। लेकिन सरदार को इससे तसल्ली न हुई। आगे चलकर उसने एक खास फव्वारे का निर्माण कराया जिसमें बेशुमार आंखों जैसे ताक बने हुए थे। आजकल प्रत्येक आंख में से रह-रहकर आंसुओं की बूंदें टपकती रहती हैं।

मेरे मन में बार-बार यही विचार आन्दोलित होता है कि जिस देश में लेखकों और कलाकारों इतना सम्मान है, वह देश उन्नति के पथ पर क्यों अग्रसर न हो। फिर, कला भी यहां की कामुकता को भड़काने वाली न होकर बड़ी शिष्ट और सौम्य है।

उजबेकिस्तान में ४५ से अधिक ही नाट्यशालाएं होंगी जिनमें केवल उजबेकिस्तान के ही नहीं, रूसी और पश्चिमी यूरोप के भी नाटक दिखाये जाते हैं। हमज़ा थियेटर ताशकन्द की एक दूसरी सुप्रसिद्ध नाट्यशाला है। हमज़ा हकीमजादा नियाज़ी के नाम पर इसका नाम रक्खा गया है। हमजा उजबेक सोवियत साहित्य और नाटक का पिता माना जाता है। हमज़ा थियेटर ने ही गफूर, गुलाम, आइबेक, उइगन और यशेन जैसे नाटककारों को पैदा किया। इसके अलावा, यहां और भी कई नाट्यशालाएं हैं जिनमें गोर्की थियेटर, पपैट शो, मुकीमी थियेटर आदि मुख्य हैं।

वैले देखते-देखते काफी देर हो गयी थी। दिनभर की थकान के कारण आंखों में नींद भर आयी थी। हम लोग लौटकर होटल में वापिस आये तो भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों से मुलाकात हो गयी। पोलैंड की राजधानी वारसा में ट्रेड यूनियन की कोई कान्फ्रेंस थी जिसमें हिन्दुस्तान की तरफ से महाराष्ट्र के गुलाबराय गणाचार्य और भालेराव, तथा दिल्ली, उड़ीसा आदि स्थानों से प्रतिनिधि आये थे। ये लोग ३ नवम्बर को मास्को पहुंच रहे हैं, ७ नवम्बर को महान् अक्तूवर-क्रांति के समारोह पर होनेवाली परेड के समय उपस्थित रहने के लिये।

ताशकंद हिन्दुस्तान से बहुत मिलता-जुलता है। यहां के लोग हमारे देशवासियों जैसे ही विनम्र, मिलनसार और अतिथिप्रिय होते हैं। उजबेक भाषा के कितने ही शब्द हमारी भाषा से मिलते हैं। इन सब बातों के बारे में अगले पत्र में लिखूंगा।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

के निवासी थे। ताशकंद की उजबेक साइन्स अकादमी के पुस्तकालय में 'हमसाया अमीर खुसरो' की पांडुलिपि मौजूद है। ताशकंद निवासी हाफिज़ शिराजी ने खुसरो की हस्तलिखित प्रति के ऊपर से इसकी नकल की थी। अब्दुल रज़ाक 'समरकंदी' भी समरकंद के ही रहने वाले थे। सन् १४४१ में वे हिन्दुस्तान गये और वहां ४ साल रहे। इस दौरान में वे अपनी डायरी लिखते रहे जिसे उन्होंने 'हिन्दुस्तान का दौरा' नाम दिया है। इससे तुम समझ सकती हो कि मध्ययुग में भारत और उजबेकिस्तान के संबंध कितने नजदीक के थे।

ताशकन्द का अर्थ है पत्थरों का शहर या पत्थरों का किला। सातवीं शताब्दी का अन्त होते-होते ताशकन्द व्यापार और कला-कौशल का केन्द्र बन गया था, तथा साइबेरिया पूर्वी यूरोप और चीन आदि देशों के साथ इसके आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हो गये थे। आठवीं शताब्दी में यहां अरब लोगों का अधिकार हुआ, और १३ वीं शताब्दी में यह मुगल साम्राज्य का अंग बन गया।

उजबेक जाति तुर्कों की ही एक शाखा—इस जाति की धमनियों में मंगोलों और तातारों का रक्त है। उजबेक शब्द का प्रयोग सबसे पहले १६ वीं शताब्दी के आरम्भ में किया गया। चिगिजवंश की शाखा के अन्तर्गत सुवर्ण-ओर्दू के मंगोलखान का नाम उजबेक खान (१३१३-४०) था। पश्चिम के मंगोल खानों में सर्वप्रथम उसी ने इस्लाम धर्म अंगीकार किया जिससे उसके अनुयायी तुर्कों के बहुत से कबीले उजबेक नाम से कहे जाने लगे। तभी से इस प्रदेश का नाम

उजबेकिस्तान पड़ा।

ताशकंद की आबादी १० लाख से अधिक है और यह १६० वर्ग-किलोमीटर में फैला हुआ है। चिरचिक नदी की घाटी में स्थित यह नगर हिम से आच्छादित चटकल पर्वत-श्रृंखला से घिरा है। सोवियत संघ में यह सबसे हरा-भरा शहर माना जाता है। एक साल में नौ महीने यहां गर्मी रहती है और सर्दी के दिनों में मुश्किल से ही तापमान शून्य डिग्री के नीचे पहुंचता है। वातावरण हिन्दुस्तान से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है।

ताशकन्द मध्य एशिया का सबसे बड़ा औद्योगिक केंद्र है। कपास जिसे 'सफेद सोना' कहा जाता है, यहां की मुख्य पैदावार है। सोवियत संघ की दो-तिहाई कपास उजबेकिस्तान में ही पैदा होती है। शरद् ऋतु में यहां की सड़कें उजले गट्ठरों से भर जाती हैं—मानो मेघों की श्वेत पंक्ति इकट्ठी हो गई हो। यहां कपड़े के मिल हैं जिनमें रंग-बिरंगे भांति-भांति के डिज़ाइन वाले कपड़े तैयार किये जाते हैं। अच्छी किस्म का चावल भी यहां पैदा होता है जिसे शालि कहते हैं—संस्कृत में भी चावल को शालि कहा जाता है। इसके सिवाय, यहां अंगूर, सेब, नाशपाती और मेवाओं के बाग-बगीचे हैं जहां फल-फूल और मेवाएं पैदा होती हैं। अंगूरों से मीठी शराब बनायी जाती है जो दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

कल सारे दिन के थके होने कारण रात को खूब नींद आई। सवेरे उठकर नाश्ता करने गये तो भोजनगृह में इसरा-इल के निवासी दो व्यक्ति मिल गये। हम लोगों को हिन्दुस्तानी

बात नहीं होती।

कुछ देर बाद श्रीमती बी० के पतिदेव भी हम लोगों के साथ शामिल हो गये। पति और पत्नी दोनों ही का व्यक्तित्व आकर्षक है। पति रूसी इतिहास के अध्यापक हैं। उनका एक बच्चा किंडरगार्टन स्कूल में पढ़ता है जो कुछ दिनों से बीमार है। प्राइवेट डाक्टर को बुलाकर उसे दिखाया था, पहले से अब तबीयत ठीक है। लेकिन माता-पिता परेशानी में पड़ गये हैं, क्योंकि वह जल्द से जल्द अच्छा होकर स्कूल जाना चाहता है—अपने साथियों से मिलने के लिए बेचैन है।

हम लोग चाय की चुस्कियां ले रहे थे और सामने टेली-वीज़न पर उजबेक संगीत का कार्यक्रम चल रहा था। ताशकन्द के प्रसिद्ध कलाकार उमारोफ पियानो बजाकर अपनी मधुर कंठ ध्वनि से श्रोताओं को आकर्षित कर रहे हैं। श्रोताओं की करतल-ध्वनि सुनायी पढ़ रही है। बच्चों का कार्यक्रम हो रहा है—सुन्दर मनोरंजक कार्टून एक-के-बाद-एक।

यहां कितने ही लोगों के घर टेलीवीज़न लगे हुए हैं। अभी कुछ दिन पहले जब ऐण्ड्रिएन निकोलायेव और पावेल पापोविच तथा वलेरी विकोव्स्की और बेलेन्तिना तेरेश्कोवा ने अन्तरिक्ष की यात्रा की थी तो उनकी गतिविधि को टेलीवीज़न पर प्रसा-रित किया गया था।

टेलीवीज़न पर कार्यक्रम चल रहा है और श्रीमती वी० बड़ी आत्मीयता से कह रही हैं—"समझ में नहीं आता, आप लोगों की क्या खातिर करूं ? आप लोगों से मिलकर मुझे बेहद खुशी हुई है जिसका इजहार मैं नहीं कर सकती। बस

मेरी एक ही ख्वाहिश है कि मैं हिन्दुस्तान जाकर कुछ वक्त रहूं। अभी हाल में मुझसे पूछा गया था कि क्या मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में रूसी पढ़ाने का कार्य कर सकूंगी। लेकिन अफसोस कि घर की परिस्थितियों के कारण मैं इस मौके का फायदा उठाने से महरूम रह गयी।"

बाल-बच्चों के संबंध में बातचीत करते हुए उन्होंने बताया कि सोवियत संघ में बच्चे होना कोई मुश्किल की बात नहीं समझी जाती। यदि किसी के आठ बच्चे हों तो सरकार की ओर से उस महिला को पुरस्कृत किया जाता है; तथा यदि किसी के पांच या पांच से अधिक बच्चे हों और यदि उनकी मां ने आठ वर्ष तक बच्चों का पालन किया हो तो ५० वर्ष की उम्र में ही वह पेंशन की हकदार हो जाती है।

ताशकन्द शहर काफी दूर में फैला हुआ है। सड़कें यहां की चौड़ी हैं; उनके बीच में दोनों ओर फूलवाले पेड़ लगे हुए हैं। बीच में पैदल चलने का मार्ग है। ट्रामें, बसें और ट्राली बसों की व्यवस्था है। कितने ही उद्यान और बाग-बगीचे यहां दिखायी देते हैं जिससे शहर में हरियाली ही हरियाली नजर आती है। ताशकंद निवासी अपनी रंग-बिरंगी उजबेकी पोशाक में दिखायी देते हैं। पुरुष अपने लबादे और ऊनी टोपियों में हैं तथा स्त्रियां सोने-चांदी और मूल्यवान टोपियों और गले के हारों से सजी हुई हैं। दायें और बायें उनकी वेणियां लटक रही हैं; आंखों में वे काजल और सुरमा लगाये हुए हैं।

कार्ल मार्क्स स्ट्रीट यहां की मुख्य सड़क है। वहां से हम गोर्की रूसी थियेटर में पहुंचते हैं। तीस वर्ष पहले इस थियेटर

की स्थापना हुई थी। यहां रूसी, यूरोप के क्लासिकल नाटक तथा उजबेकी लोगों के जीवन से संबंधित आधुनिक नाटक—जैसे हमजा का 'परांज (बुर्का) के रहस्य' और रखमानोव का 'महान् प्रेम' खेले जाते हैं। यहां भी डिपार्टमेंट स्टोर और पुस्तकगृह हैं जिनमें सामान खरीदने वालों की भीड़ दिखायी दे रही है। लेनिन स्क्वेयर में लेनिन की कांसे की मूर्ति दूर से दिखायी देती है—उसकी एक भुजा फैली हुई है मानो वे कोई भाषण कर रहे हों। यहीं पर मई-दिवस और ७ नवम्बर की परेड होती है।

कवि अलीशेर नवाई के नाम पर अलीशेर नवाई नाम की एक सार्वजनिक लाइब्रेरी है जिसकी स्थापना १८७० में हुई थी। यह लाइब्रेरी मध्य एशिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है—यहां कितने ही वैज्ञानिक, लेखक और विचारकों की मूर्तियां स्थापित हैं। इसमें कितनी ही दुर्लभ पुस्तकों का संग्रह है—तुर्किस्तान संग्रह में ५९१ जिल्दों में मध्य एशिया संबंधी महत्व-पूर्ण सामग्री सुरक्षित है।

एक उद्यान में अलीशेर नवाई की विशालकाय मूर्ति है जिसके दाहिने ओर पांच मंजिल का एक संगीत-संस्कृति भवन है। हमज़ा स्ट्रीट पर हमजा ड्रामा थियेटर है जिसकी स्थापना १९२१ में हुई थी। सोवियत संघ के सुप्रसिद्ध अन्तरिक्षयात्री यूरी गागरिन के नाम की सड़क बहुत दूर तक चली गयी है—उसके दोनों ओर उन्नतकाय सुन्दर वृक्षों की पंक्ति शोभायमान हो रही है।

यहां के कला-संग्रहालय की स्थापना १९१८ में हुई थी।

इसमें जिन वस्तुओं का प्रदर्शन किया गया है, वे कभी ज़ार के भाई की चित्रसभा की शोभा समझी जाती थीं। यहां कितने ही पेंटिंग, शिल्पकला के नमूने, सुन्दर पालिश किया हुआ फर्नीचर, चीनी मिट्टी के बर्तन आदि वस्तुएं प्रदर्शित की गयी हैं। उजबेक राष्ट्रीय कला का इसे बहुमूल्य खजाना ही समझना चाहिए। रूसी कला के अलावा, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड, फ्लैण्डर्स, हालैण्ड, चीन, हिन्दुस्तान, बर्मा और जापान की कला के अलग-अलग विभाग हैं। भारतीय विभाग में भारतीय कला-कौशल सम्बन्धी वस्तुएं दिखायी दे रही हैं।

संग्रहालय से चल कर हम स्नानागार (स्विमिंग पूल) में पहुंचे। बच्चे स्नान कर रहे हैं। प्रौढ़ों और बालकों के स्नान की सुन्दर व्यवस्था है। उन्हें तैरना भी सिखाया जाता है जिसके लिए प्रौढ़ों को एक महीने में छह रूबल और बच्चों को २ रूबल और ४० कोपेक देने पड़ते हैं; खिलाड़ियों से किसी किस्म की फीस नहीं ली जाती। प्रौढ़ों के लिए ५ और बालकों के लिए २ मीटर पानी की गहराई रखी जाती है। एक ओर प्रौढ़ों और दूसरी ओर बच्चों के लिए स्थान सुरक्षित है। एक महिला अपने बच्चे को तैरना सिखा रही है। तालाब के पानी का तापमान २६ डिग्री रहता है; हवा का भी उतना ही। इससे सर्दियों के दिनों में स्नान करने से सर्दी नहीं लगती। पानी में कोई रंग मिला है जिससे नीलापन आने से वह आकर्षक बन गया है। धातु-मिश्रित होने के कारण वह पानी बीमारियों को भी दूर करता है। कुछ दिन पहले यहां तैरने की प्रतियोगिता हुई थी जिसमें सोवियत संघ, फ्रांस, इंग्लैंड,

पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी आदि देशों ने भाग लिया था। इस अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्थानीय स्कूल की एक बालिका को सर्वप्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।'

ताशकंद होटल में विदेशी यात्रियों की भरमार है। जो यात्री सोवियत संघ घूमने आते हैं, वे ताशकंद जरूर आते हैं। जर्मनी के यात्री अपनी वेशभूषा से अलग पहचाने जा सकते हैं। अपना सामान स्वयं उठाकर चले जा रहे हैं। वैसे होटल का टूरिस्ट-दफ्तर इतवार को प्रायः बन्द रहता है, लेकिन विदेशी यात्रियों की सुविधा के लिए उसे खोल दिया गया है। मुझे अपने रुपयों को रूसी मुद्रा में बदलना था जिसके लिए हवाई-जहाज के अड्डे के दफ्तर में जाना पड़ा। कल्पना, तुम शायद न जानती हो, दुनिया के बाजारों में अब तक अमरीकी डालर और इंग्लैण्ड के पौंड की ही कीमत थी। लेकिन सोवियत संघ, चेकोस्लोवाकिया, पौलैंड, युगोस्लाविया, ईस्ट जर्मनी, हंगेरी, बल्गेरिया और रूमानिया—इन समाजवादी देशों ने हमारी मुद्रा को मान्य कर लिया है। इसलिए विदेश जाने वाले यात्रियों को जो भारतीय रुपयों में 'ट्रैवेलर्स चैक' दिये जाते हैं, उनपर लिखा रहता है कि इन देशों में रुपये के बदले वहां की मुद्रा मिल सकती है।

५० रुपये में मुझे केवल ६ रूबल और ४८ कोपेक मिले! यहां यह बता देना जरूरी है कि पहले एक रूबल का दाम लगभग १ रुपया था, लेकिन अब ५.२६ रुपये हो गया है—यानी रूबल की कीमत बढ़ गयी है और रुपये की घट गयी है। इसका मतलब यह कि सोवियत संघ में क्रयशक्ति बढ़ जाने से

आजकल पहले की अपेक्षा अधिक चीज़ आने लगी है—हमारे देश में इससे उल्टा है। विदेशों में हमारे रुपये की कीमत घटने का यही कारण है। हम समझते हैं कि रूसी चीजें महंगी हैं—जब हम रूबलों का हिसाब रुपयों में लगाते हैं तो वे हमें महंगी मालूम होती हैं, लेकिन रूसियों के लिए वे सस्ती हैं।

जानकारी के लिए मुद्रा-विनिमय की तालिका यहां दे रहा हूं—

देश		डालर	पौण्ड	रुपया
हिन्दुस्तान	(रुपया)	४.७६	१३.३३	१.००
सोवियत रूस	(रूबल)	०.९०	२.५२	५.२६
इंग्लैण्ड	(पौण्ड)	०.३६	१.००	०.०८
अमेरिका	(डालर)	१.००	२.८०	०.२१
जर्मनी	(मार्क)	४.००	११.२०	०.८४
फ्रांस	(फ्रांक)	४.९४	१३.८३२	१.०३
चेकोस्लोवाकिया	(क्राउन)	७.२०	२०.१६	१.५१

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र
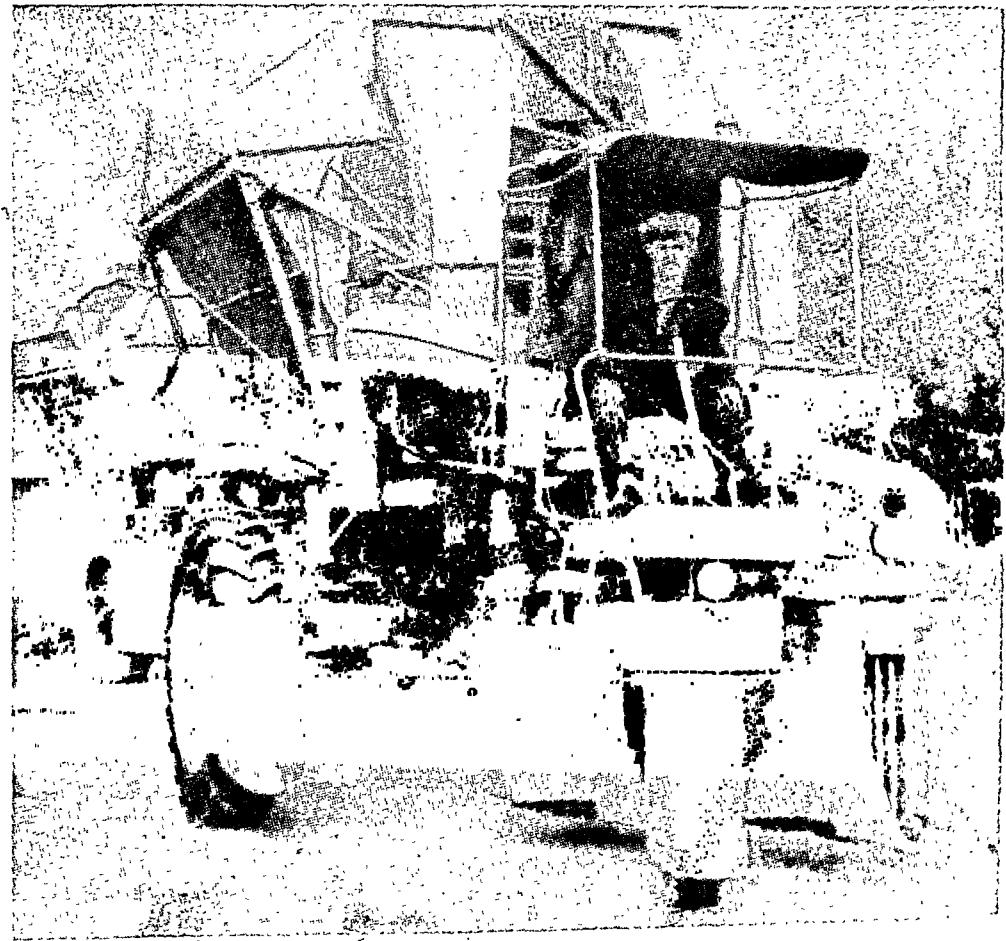
कपास बुनने की आधुनिकतम मशीन

२०

ताशकन्द होटल,
ताशकन्द
२ नवम्बर, १९६५

प्रिय कल्पना,

तीन-चार रोज पहले यहां बारिश हो चुकी है। लेनिनग्राड और मास्को से जब हम चले तो काफी सर्दी थी, लेकिन यहां की सर्दी बड़ी मीठी लग रही है। राजधानी होने के बावजूद मास्को या लेनिनग्राड जैसा भीड़-भड़क्का यहां नहीं — वातावरण शान्त है।

हमारे देश जैसा ही वातावरण मालूम होता है। रंग-

विरंगे कपड़े पहने हुए नर-नारियां, विनम्रता और स्नेहभरी मुस्कान। जब इन लोगों को मालूम होता है कि हम हिंदुस्तान से आये हैं तो उनका चेहरा खिल उठता है और अपनी मूक भाषा में ही वे सब कुछ कह डालते हैं।

दरअसल उजबेकिस्तान, अजरबैजान और तुर्कमानिया जैसे गणतंत्रों की सभ्यता और संस्कृति से हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति बहुत मिलती-जुलती है। यहां का नृत्य देखकर और संगीत सुनकर लगता है जैसे हम अपने ही देश में हों। पिछले दिनों १५ अगस्त को जो यहाँ भारतीय फिल्मों का प्रदर्शन हुआ तो जनता की खुशी का पारावार न रहा। भारत की अभिनेत्रियों की रंग-बिरंगी वेशभूषा, उनका पहरावा-ओढ़ावा, तथा उनके गरिमामय नृत्यों को देखकर और उनका मधुर संगीत सुनकर यहाँ की जनता आनन्द से पुलकित हो उठती है।

कपास यहां राष्ट्रीय गर्व की वस्तु मानी जाती है। यहां के राष्ट्रीय बिल्लों पर कपास की टोंटी का चिह्न बना रहता है। उजबेकिस्तान हर वर्ष ३५-३६ लाख टन कपास पैदा करता है जबकि सोवियत संघ के दूसरे गणतंत्रों में बहुत कम कपास होती है।

कपास आदि की पैदावार को बढ़ाने के लिए सोवियत संघ में आजकल सामूहिक खेती की जाती है—रूसी में इसे 'कलखोज' कहते हैं। जैसे हमारे यहां के किसान अपनी-अपनी जमीन में अपने हल और बैलों से अलग-अलग खेती करते हैं वैसा यहां नहीं होता। यहां एक गांव के सब किसान या अनेक

गांवों के किसान मिलकर खेती करते हैं और खेती से होने वाले मुनाफे को आपस में बांट लेते हैं।

रूस में सोवियत राज्य की स्थापना होते ही सामूहिक खेती शुरू हो गयी थी, लेकिन इसमें बहुत कम किसान शामिल थे, और जो थे वे प्रायः सामान्य स्थिति के थे। इस प्रकार की खेती का सूत्रपात बड़े पैमाने पर १९२९-३० में हुआ जबकि गांवों के मध्यमवर्गीय किसानों ने इसमें हिस्सा लिया।

खेती के औजार, पशु, बीज, घास-चारा तथा खेत के मकानों पर सामूहिक खेत में काम करने वाले किसानों का ही अधिकार रहता है। खेती की जमीन उन्हें खरीदनी नहीं पड़ती—वह उन्हें हमेशा के लिए बिना किराये के सरकार की तरफ से मुफ्त दी जाती है। खेती से जो आमदनी होती है उसे काम और उसके परिमाण के अनुसार आपस में बांट लिया जाता है। इसके सिवाय, सामूहिक खेती में हिस्सा लेने वाले किसानों के पास अपनी जमीन, गाय, सूअर, भेड़-बकरियां और मुर्गियां होती हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि १९६२ में एक सामूहिक खेत के पास औसतन ४०६ घर, जोतने योग्य ६२९८ हैक्टर जमीन, ३,४२८ पशु, लगभग २६ ट्रैक्टर, ६ फसल काटने की मशीनें, १० लारियां तथा खेतों में काम करने की अन्य छोटी-मोटी मशीनें थीं।

लेनिन नाम का कलखोज देखने का आज कार्य-क्रम था। यह कलखोज शहर से ३० किलोमीटर (१९ मील) की दूरी पर है। तारकोल की पक्की सड़क है; बीच-बीच में गांव दिखायी दे जाते हैं—खेतों में मकई, कपास और गेहूं दीख

पड़ते हैं।

हम कलखोज के दफ्तर में दाखिल हुए तो डाइरेक्टर ने हम लोगों का स्वागत किया। शिष्टाचार का आदान-प्रदान होने के बाद उन्होंने कलखोज का परिचय दिया। यह कलखोज १९३० में बनाया गया था। शुरू में इसमें किसानों के कुल ८०० परिवार शामिल थे, आजकल हैं १९००। शुरू में खेती करने योग्य जमीन ८०० हैक्टर थी, आजकल है २६०० हैक्टर। इसमें से २००० हैक्टर जमीन कपास के काम में तथा बाकी मवेशियों और मुर्गियों के पालन तथा मेवा पैदा करने के काम में आती है।

डाइरेक्टर के दफ़्तर में पूरे कलखोज का नक्शा टंगा हुआ था। सालभर की योजना का नक्शा भी था। डाइरेक्टर ने बताया कि समय के पहले ही योजना पूरी हो गयी है जिसके फलस्वरूप उन लोगों ने ५६०० टन कपास सरकार को दे दी है। इसके अतिरिक्त, २००० टन कपास और दी है; और भी देने की योजना है।

कलखोज की इस साल की आमदनी कुल मिलाकर २५ लाख रूबल हुई है—आधी कपास से और आधी मवेशियों से। इसका १६ प्रतिशत मशीन और मवेशी खरीदने में, ३ प्रतिशत क्लब में, १९ प्रतिशत कलखोज के प्रतिदिन के खर्चे में और ५१ प्रतिशत कर्मचारियों की तनख्वाह में व्यय होता है। कुल मिलाकर १३ लाख रूबल तनख्वाह दी जाती है—एक परिवार की औसतन आमदनी ८८० रूबल पड़ती है।

यह कलखोज सम्पन्न किसानों का है। यहां अस्पताल,

प्रसूतिगृह, किंडर गार्टन स्कूल, सांस्कृतिक भवन, चायखाना, गुसलखाना तथा सहकारी दूकानों की व्यवस्था है।

इसमें छह स्कूल हैं जिनमें ३००० बच्चे पढ़ते हैं। रोगियों के लिए दवाखाना (उज़बक ज़बान में भी दवाखाना ही कहते हैं) है। मकानों में बिजली का प्रबन्ध है। रेडियो लगे हुए हैं; कुछ घरों में टेलीवीजन भी हैं। गैस की व्यवस्था की जा रही है। कलखोज में एक वर्ष में २० लाख ईंटें बनती हैं; लकड़ी चीरकर तख्ते तैयार होते हैं और ट्रैक्टर दुरुस्त किये जाते हैं। इसके पास १५० ट्रैक्टर, ३६ कपास चुनने की मशीनें, ५ सब्जी चुनने की मशीनें तथा १५ अन्य पैदावार की वस्तुओं के चुनने की मशीनें हैं; ३१० गायें, १०० भेड़ और ५०० सूअर हैं। अलग-अलग चार कलखोजों को मिलाकर एक कर दिया गया है।

यहां की कपास का रेशा लम्बा न होकर बीच का होता है। खेतों की सिंचाई नहर के पानी से होती है; कहीं पम्पों से खेत सींचे जाते हैं। खाद के लिए अमोनिया आदि को काम में लिया जाता है।

कलखोज में काम करने वाले किसानों के अपने बगीचे हैं जिनमें अंगूर, सेव आदि फल लगते हैं। कपास देकर उसके बदले वे लोग आटा लेते हैं। अपनी भेड़ों की ऊन के कपड़े वे नहीं बनाते, कपड़े सहकारी दूकानों से खरीदते हैं।

सुनियोजित अर्थ-व्यवस्था के कारण यहां अनाज आदि की आवश्यकता से अधिक पैदावार नहीं होती जिससे कि उसे आग में जलाकर, या समुद में डुबोकर नष्ट कर देना पड़े, जैसा कि

कुछ देशों में किया जाता है।

मैंने पूछा—"शहर की सारी सुविधाएं गांववालों को न मिलने के कारण वे उन्नति में पिछड़ जाते होंगे ?"

डाइरेक्टर—"शहर और गांव में फर्क जरूर है लेकिन यह फर्क दिन-पर-दिन कम होता जा रहा है। गांवों के लोग खरीदारी के लिए अक्सर शहरों में जाते हैं। इसके अलावा, कला आदि के ज्ञान से उन्हें सम्पन्न बनाने के लिए गांवों में भी नाट्यगृह, सिनेमागृह आदि की उचित व्यवस्था है।

सोवियत संघ में शिक्षा और डाक्टरी चिकित्सा दोनों मुफ्त हैं। अध्यापकों और डाक्टरों को सरकार की ओर से वेतन मिलता है। कलखोज की ओर से मकान और अस्पताल बनवाये जाते हैं, बाकी खर्च सरकार देती है।

मास्को, लेनिनग्राड और ताशकन्द की सैर करने के बाद गांव का वातावरण बड़ा आकर्षक जान पड़ा। लकड़ी के पेशाबखाने बने हुए हैं, गायों के रंभाने की आवाज सुनाई पड़ रही हैं, बच्चे खेलते हुए नजर आ रहे हैं। लम्बे तनों वाले वृक्षों के कुंज दिखायी दे रहे हैं, अंगूरों की बेलें फैली हुई हैं, फलवाले वृक्षों का रोपण किया जा रहा है, पुराने मकानों के स्थान पर नये मकान बनाये जा रहे हैं और सामने ही लेनिन की एक विशाल मूर्ति खड़ी है। दवाखाने, क्लब और सिनेमागृह की नयी इमारतें दिखायी पड़ रही हैं।

हम किंडर गार्टन स्कूल में पहुंचे। आज छुट्टी का दिन था, इसलिए सब बच्चे नहीं आये थे; केवल १०-१५ बच्चे थे। उनकी अध्यापिका बच्चों को उजबक जबान में कोई कहानी

सुना रही थी—उसके अभिनयपूर्ण हावभाव को देखकर बच्चों के चेहरे खिल उठते थे। १ साल से लगाकर ७ साल तक के बच्चे यहां पढ़ते हैं—कुछ मिलाकर ७० बच्चे हैं। इनके मां-बाप को खेतों में काम करना होता है; ऐसी हालत में अपने बच्चों को स्कूल में छोड़कर वे निश्चिन्त हो जाते हैं। एक वृक्ष के नीचे क्लास चल रही है, लकड़ी के तख्त बिछे हुए हैं, खेल-खिलौने रक्खे हैं, किसी चीज़ की तस्वीर दिखाकर बच्चों से उसकी पहचान करायी जा रही है। बच्चे हम लोगों की ओर सतृष्ण नयनों से निहार रहे हैं—एक शिशु के चेहरे की सरलता असामान्य रूप से आकर्षक है। बच्चों ने एक सुन्दर गुलदस्ता भेंट किया और 'हाइयो, हाइयो' (फिर आइए) की ध्वनि से वृक्ष-कुंज गूंज उठा।

हम लोग कलखोज के क्लब में पहुंचे। इसमें कलखोज की ओर से ३५० रूबल खर्च किये गये हैं। थियेटर की इमारत बनायी जा रही है जिसमें ८०० दर्शक बैठ सकेंगे। कमरों का निर्माण हो चुका है; ऊपर एक लाइब्रेरी बन रही है। बढ़िया किस्म का पालिशदार फर्नीचर चमचमा रहा है।

वृद्धजनों के लिए चायखाने का निर्माण हो रहा है। सब मिलाकर यहां १००० से अधिक वृद्ध होंगे; अधिक संख्या ६८ वर्ष से ज्यादा उम्रवालों की है।

अस्पताल की इमारत बहुत शानदार है। ऊपर चढ़ने की सीढ़ियां पानी से धुली हुई है। बीमार औरतें और बच्चे कमरों में लेटे हैं। बीमारों के विश्राम करने का कमरा अलग है। अल्ट्रा वायलेट लैम्प और एक्स-रे आदि की व्यवस्था है। खतरे की

वीमारियों से पीड़ित बीमारों के लिए अलग प्रवन्ध है।

नये रास्तों का निर्माण किया जा रहा है, मेवाओं के वाग लगाये जा रहे हैं। शहर आने-जाने के लिए बस की व्यवस्था है।

कलखोज के खेत मीलों लम्बे चले गये हैं। कपास हाथ से न चुनकर कंबाइन मशीनों (ख्लोपको उवोरचनी) द्वारा ही चुनी जाती है, इससे ३०-४० आदमियों की श्रमशक्ति की वचत होती है। एक मशीन के लिए जानती हो कितना खर्च पड़ता है? ६,४०० रूबल। कुछ मशीनें ऐसी भी हैं कि जिनके ऊपर का हिस्सा हटा देने से उसका ट्रैक्टर वन जाता है। ये मशीनें उजवेकिस्तान के इंजीनियरों द्वारा ही तैयार की गई हैं।

सारा कलखोज १८ भागों में वंटा हुआ है; हरेक की अपनी-अपनी मशीन है। विजली के खम्भे लकड़ी के वने हैं। गाड़ियों में खच्चर और गधे जुते हुए हैं। किसान अपनी मोटर-साइकिलों पर आ-जा रहे हैं। और जानती हो, खेतों में खाद डालने के लिए हवाई-जहाज इस्तेमाल किया जाता है?

डाइरेक्टर एक वड़े प्रभावशाली वलिष्ठ व्यक्ति हैं। जब भारत के प्रधानमंत्री पं० नेहरू यहाँ आये थे तो लेनिनिज्म नाम के कलखोज में उनके साथ दावत खाने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ था।

चायखाना उजवेकिस्तान की एक खासियत समझी जाती है। स्त्रियों के स्थान पर पुरुष ही वावर्ची का काम करते हैं। प्राकृतिक दृश्यों से घिरे एक नाले के किनारे सुंदर चायखाना बना हुआ है, बहुत साफ और सुथरा। मेज पर अंगूरों के गुच्छे,

अनार और चाकलेट रक्खे हुए हैं; तन्दूर की रोटी और मुर्ग मुसल्लम भी है। खाने के लिए तश्तरियां और चाय के लिए उजबेकी प्याले हैं। कच्ची भाजी के साथ रोटी खाने का यहाँ रिवाज है। हमारे देश की भांति यहां भी भोजन करने से पहले हाथ धोते है। तकल्लुफ के साथ खाना खिलाया जा रहा है—रुक-रुककर ताजी गरम चाय प्यालों में उंड़ेली जा रही है।

दीर्घ, समुन्नत और बलिष्ठ शरीरवाले डाइरेक्टर बड़े आत्म-विश्वासपूर्वक जोरदार शब्दों में अपने कलखोज का परिचय देते जाते हैं। उन्हें ३०० से लगाकर ४०० रूबल तक मासिक वेतन मिलता है—वेतन खेतों की फसल के ऊपर निर्भर है, इसलिए उसमें कमोबेशी होती रहती है। फसल के दिनों में बहुत व्यस्तता रहती है— काम करते-करते रात के ४ बज जाते हैं। कपास और चावल दोनों की केवल एक ही फसल होती है। सर्दी के छह महीनों में खेतों की बुवाई की ही तैयारी होती है। सब लोग बड़े परिश्रमपूर्वक काम करते हैं इसलिए समय से पहले ही योजना पूरी हो जाती है। समय के पहले योजना पूरी होने पर सरकार, १ टन के माल की जितनी कीमत होती है, उससे तीन-गुनी देती है।

डाइरेक्टर की वृद्धा मां ७० वर्ष की है। बीवी किसी स्कूल में अध्यापिका है। ५ बच्चे हैं। शाम को काम से फारिग होने पर वे उनके साथ आमोद-प्रमोद करते हैं। रात को समय मिलने पर पढ़ते-लिखते भी हैं।

खाना बहुत देर तक चलता रहा और डाइरेक्टर साहब की दिलचस्प बातें भी। हम लोगों से बार-बार खाने का आग्रह

किया जाता, और आग्रह स्वीकार न करने पर कहा जाता—यदि न खायेंगे तो मुर्गमुसल्लम को जेब में रखकर ले जाना पड़ेगा।

आखिर में हम लोग गांव के एक परिवार का घर देखने गये। रेडियो बज रहा था। शायद दूसरे लोग काम से बाहर गये हुए थे। घर में केवल एक व्यक्ति मौजूद था। वह रूई की बंड़ी पहने कढ़ाई में खाने के लिए कोई आमिष तल रहा था। हम लोगों को देखते ही खाना-पकाना छोड़ उठ खड़ा हुआ और उसने हम लोगों का स्वागत किया। घर काफी बड़ा था। एक कमरे में सुंदर गलीचा बिछा था और ओढ़ने-बिछाने के रूई के लिहाफ-बिछौने बड़े करीने से रक्खे हुए थे। वहीं झूलने में उसका बच्चा सो रहा था। घर के आंगन में फूल-फुलवाड़ी लगी थी। घर-मालिक को यह जानकर खुशी हुई कि हम लोग हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं। खाने के लिए बहुत इसरार हुआ। आखिर में अपनी फुलबगिया में से खुशबूदार फूल तोड़कर उसने भेंट किये।

पत्र लिखते समय अनेक प्रकार के विचार मन में उठ रहे हैं। विदेशों में जाकर अपने देश की कितनी ही बातों को ठीक तरह समझने-बूझने का मौका हमें मिलता है—अपनी कमजोरियों पर भी हमारा ध्यान जाता है, और अपनी अच्छाइयों पर भी। कितनी ही बार सोचता हूं कि ऐसी कितनी चीजें हमारे पास हैं जिन्हें गर्वपूर्वक हम विदेशियों के सामने रख सकें? कहां हैं हमारे लेखक और कलाकार जिन्हें राष्ट्रीय गौरव प्रदान कर हमने उन्हें जनसाधारण की नजरों में ऊंचा उठाया है?

प्रोफेसर मोस्कलेव भारतीय विभाग के अध्यक्ष हैं। १९३२ में आपको 'साइंस के उम्मीदवार' पद से सन्मानित किया गया था। भारत के सोवियत दूतावास में आप प्रथम सचिव रह चुके हैं। भारतीय कला से आपको विशेष लगाव है। इस विभाग में हिंदी, उर्दू, बंगाली और पंजाबी भाषाएँ पढ़ायी जाती हैं। कुल मिलाकर १०० विद्यार्थी हैं जबकि सारे प्रतिष्ठान के विद्यार्थियों की संख्या है ३०। हिन्दी और उर्दू का एक ग्रुप बना दिया गया है। उर्दू के अध्यापन के लिए भी सम्भवतः हिन्दुस्तान से ही अध्यापकों को आमन्त्रित किया जाता है। यहाँ हिन्दी और उर्दू व्याकरण पर काम हो रहा है। अध्यापकों ने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए कुछ पाठ्य पुस्तकें और कुछ छोटी-मोटी पुस्तिकाएँ तैयार की हैं जिनके आधार से पढ़ाई होती है। १५ हजार शब्दों का रूसी-उर्दू कोश भी तैयार किया जा रहा है।

श्रीमति ए० पी० वुयानवो हिन्दी विभाग की दूसरी अध्यापिका हैं—बड़ी प्रभावशाली। प्रोफ़ेसर मोस्कलेव के घर इनसे और इनके नौजवान पति से मुलाकात हुई थी। आप भी हिन्दुस्तान रह चुकी हैं, इसलिए हिन्दुस्तान के लोगों से आपको विशेष स्नेह है। आप फिर से हिन्दुस्तान जाने की इच्छा रखती हैं, लेकिन सम्भवतः घरेलू परिस्थितियों के कारण लाचार हैं। अब्दुल हक के सुप्रसिद्ध उर्दू व्याकरण का आपने ६०० पृष्ठों में रूसी अनुवाद किया है जो मास्को से प्रकाशित हो चुका है। आजकल हिन्दी व्याकरण सम्बन्धी 'उद्देश्य' को लेकर शोध-प्रबन्ध लिखने की तैयारी कर रही हैं।

श्रीमति श्राउलोवा भी हिन्दुस्तान रह चुकी हैं। श्राप हिन्दी सिखाने के लिए व्याकरण पर श्राधारित पाठ्य-पुस्तकें तैयार कर रही हैं। इसके दो भाग पूरे हो चुके हैं, तीसरा लिखा जा रहा है।

मुहम्मद जानव हिन्दी-उर्दू के श्रध्यापक हैं। उनके साथ श्रीमति शिस्को श्रौर श्रीमती चेर्निकोवा हिन्दी श्रध्यापन का कार्य करती हैं। तीनों ने मिलकर हिन्दी-रूसी-उजबक तथा उजबक-रूसी-हिन्दी कोश तैयार किया है। जब हम लोगों ने कक्षा में प्रवेश किया तो श्रीमति चेर्निकोवा बड़े श्रात्मविश्वास-पूर्वक विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ा रही थीं। मातृभाषा रूसी होते हुए भी श्रापका हिन्दी उच्चारण स्पृहणीय था।

कोसोनोव्स्की श्रंक-तालिका (स्टैटिस्टिकल) पद्धति से हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें तैयार कर रहे हैं। श्राप हिन्दी के समाचारपत्रों से सामग्री एकत्र कर उसका विश्लेषण करते हैं श्रौर फिर उसके श्राधार पर पाठ लिखते हैं। 'कोश' तैयार करने के लिए उपयोगी शब्दों का चुनाव' इस विषय पर मास्को में श्रापका एक भाषण भी हुश्रा था।

एक कक्षा में उर्दू की पढ़ाई चल रही थी। चौथे वर्ष के विद्यार्थी थे—संख्या में कुल छह या सात। कविता पढ़ाई जा रही थी। बोर्ड पर कुछ शब्दों के मायने लिखे थे। श्रध्यापक हैं कमर रईस जो दिल्ली विश्वविद्यालय से उर्दू के शिक्षक होकर श्राये हैं।

विभाग है। यहां, जिनकी मातृभाषा हिन्दी है ऐसे हिन्दुस्तानियों की ध्वनि के रिकार्ड सुरक्षित हैं जिन्हें उच्चारण दुरुस्त करने के लिए विद्यार्थियों को सुनाया जाता है। हिन्दी सीखने वाले रूसी विद्यार्थियों की ध्वनि का भी रिकार्ड कर लिया जाता है। फिर विद्यार्थी उक्त ध्वनियों के साथ अपनी ध्वनि की तुलना कर, अपना उच्चारण सुधारते हैं। हिन्दी के भिन्न-भिन्न प्रदेशों की भौगोलिक परिस्थितियों आदि के कारण, हिन्दी-भाषियों के उच्चारण में पाये जाने वाले परस्पर के अन्तर का अध्ययन करने के लिए इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली आदि प्रदेशों के वासियों की भाषाओं का भी रिकार्ड किया गया है जिससे ध्वनि विज्ञान की दृष्टि से इनका तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके। हिन्दी की भांति, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के रिकार्ड भी यहां मौजूद हैं।

संस्थान का सारा कारोबार रूसी भाषा में होता है, इस लिए जब तक किसी को रूसी ज्ञान न हो तब तक उक्त विभागों में होने वाले शोध-कार्य का ठीक-ठीक अंदाजा लगा सकना कठिन है। प्रोफेसर मुहम्मदोव से इस सम्बन्ध में चर्चा हुई। मैंने कहा—"ताशकंद मध्य एशिया के समाजवादी जनतंत्रों में पूर्वीय विद्याओं का प्रमुख केन्द्र है। मध्य एशिया और भारत की संस्कृतियां एक-दूसरे से प्रभावित रही हैं। कितने ही फल-फूल और मेवे आदि यहां से हिन्दुस्तान गये हैं। पूर्वकाल में मध्य एशिया बौद्धधर्म का एक प्रमुख केंद्र रहा है और यह धर्म भारत की देन है। मध्ययुग में भारत के व्यापारी मध्य एशिया होकर ही यूरोप पहुंचते थे; इससे भी एक दूसरे की संस्कृतियां

काफी मात्रा में प्रभावित हुई। भारतीय विद्वानों का सहयोग प्राप्त करने के लिए, यदि संस्थान की रिपोर्ट के मुख्य मुख्य अंश अंग्रेजी या हिन्दी में प्रकाशित किए जा सकें तो निश्चय ही आप लोगों की पुरातत्व सम्बन्धी खोजें हम तक पहुंच सकती हैं।'

प्रोफेसर मुहम्मदोव को यह सुझाव पसन्द आया। लेकिन सम्भवतः उनके यहां उक्त भाषाओं के जानकार विद्वानों की कमी है, इसलिए इस सुझाव के कार्यान्वित होने में विलम्ब होना सम्भव है।

यहां उज़बेक साइन्स अकादमी के अन्तर्गत हस्तलिखित प्राचीन पुस्तकों का एक बहुत बड़ा संग्रहालय है जिसमें मध्ययुग की अनेक दुर्लभ पाँडुलिपियां सुरक्षित हैं। संग्रहालय के भारतीय विभाग के अध्यक्ष इलियस हशिमोव ने अपने संस्थान का परिचय कराया। इसमें ५० हजार से अधिक पांडुलिपियां हैं; अनेक पांडुलिपियों की एक-से-अधिक प्रतियां हैं, जिन्हें दूर-दूर से खरीदकर एकत्र किया गया है। १८८८ से पांडुलिपियों के संग्रह का काम शुरू है। १९४१ में यह संग्रहालय स्थापित हुआ और १९४९ में हस्तलिखित प्रतियों के संग्रह का काम जोर से शुरू हुआ। लगभग १५ हजार पांडुलिपियां प्रकाशित हो चुकी हैं और अनेक पर शोध कार्य हो रहा है।

संग्रहालय की सबसे प्राचीन पांडुलिपि ९वीं-१०वीं शताब्दी की है। ९वीं शताब्दी की एक अरबी की पांडुलिपि है जिसमें शुरू के पृष्ठ गायब हैं। कुल मिलाकर पांडुलिपियों के सात सूचीपत्र प्रकाशित हुए हैं जिनमें छह हजार पुस्तकों का विवरण

दी हुई है। प्रथम सूचीपत्र में हिन्दुस्तान सम्बन्धी पांडुलिपियों का ब्यौरा है। इनमें 'आइने अकबरी', 'अकबर नामा', 'जहाँगीर-नामा' 'इकबालनामा जहाँगीरी', शाहजहां नामा', 'हुमायूँनामा आदि उल्लेखनीय हैं। ये सब पुस्तकें भारत के मध्ययुगीन इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। 'हुमायूँनामा' में हुमायूं का इतिहास है जो उसकी पोती बेगम गुलबदन ने लिखा था। 'बाबरनामा' चित्रों के साथ रूसी और उजबक भाषाओं में प्रकाशित हो चुका है।

मध्य एशिया के इतिहास के सम्बन्ध में संग्रहालय में अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। १५वीं शताब्दी के उजबक साहित्य के जन्मदाता अलीशेर नवाई की 'नवाई शायरी' नामक पुस्तक की पांडुलिपि यहाँ मौजूद है, जिसके प्रत्येक पृष्ठ पर रंगीन तस्वीर बनी हुई है। १६वीं शताब्दी की एक और सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई पांडुलिपि यहां सुरक्षित है जिसका प्रत्येकपृष्ठ अलग-अलग रंगीन शैली में चित्रित है। उन दिनों के रिवाज के अनुसार, पहले अक्षरों को लिखकर बाद में उनपर रंग कर दिया जाता था। यह पांडुलिपि अपूर्ण है, जो सम्भवतः लेखक की मृत्यु के कारण पूर्ण न हो सकी।

भारत का मुगलकाल अपने चित्रों के लिए प्रसिद्ध रहा है। उजबेकिस्तान का निवासी जहीरुद्दीन बाबर मध्य एशिया के अनेक चित्रकारों को अपने साथ हिन्दुस्तान ले गया था। इन चित्रकारों ने भारतीय चित्रकारों के साथ-साथ भारत के कला कौशल को समृद्ध बनाया। आगे चलकर बादशाह अकबर ने फतहपुर सीकरी में चित्रकारों की एक मंडली इकट्ठी की

जिसने अपनी चित्रकारी द्वारा भारतीय कला को उन्नत किया। इस काल के लघु चित्रों की अनेक प्रतिकृतियां उक्त संग्रहालय में मौजूद हैं। मुगल-शैली के चित्रकारों द्वारा तैयार किया हुआ 'फारसनामा' एक महत्वपूर्ण पुस्तक है जिसमें घोड़ों के चित्र, उनके प्रकार तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन है। १७वीं शताब्दी का यहां शाहजहां का एक सुन्दर चित्र है। राजपूत शैली के भी अनेक सरस चित्र संग्रहीत हैं।

हस्तलिखित पांडुलिपियों के संपादन के साथ-साथ, यहां भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, अरब राष्ट्र आदि देशों की भाषा और साहित्य पर भी शोध-कार्य हो रहा है। भारत के समसामयिक साहित्य में यहां के विद्वान् दिलचस्पी ले रहे हैं। साइन्स अकादमी की ओर से रुस्तामोव की 'उत्तर भारत का हिन्दूकुश राज्य' और आधुनिक कश्मीर'' तथा प्रोफेसर इलियस हशीमोव की 'भारत के मशहूर आन्दोलन' पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जिनका बहुत आदर हुआ है। प्रोफेसर हशीमोव आजकल 'भारत में कांग्रेस आन्दोलन का इतिहास' पर कार्य रहे हैं। इस विषय का अध्ययन करने के लिए आप भारत जाना चाहते हैं जिससे कि कलकत्ता की नेशनल लाइब्रेरी या इलाहाबाद की लाइब्रेरी का लाभ उठा सकें। आपने भारत के सम्बन्ध में रूसी भाषा में लिखी हुई कई पुस्तकें मुझे दिखाईं, एक का नाम है 'दक्षिण भारत में मजदूर आन्दोलन', दूसरी है '१९४७ तक भारतीय साहित्य की ग्रंथसूची'। अनवर कासिमोव १८वीं शताब्दी के अन्त और १९वीं शताब्दी के प्रारम्भ में मैसूर की जनता के वीरतापूर्ण संघर्ष पर पुस्तक लिख रहे हैं।

मारीना कुतिना ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास के सम्बन्ध में लिखा है।

भारतीय विभाग में रूसी छात्राएं शोध-कार्य कर रही हैं। तीन में से दो छात्राएं हिन्दुस्तान में रह चुकी हैं। ये दोनों हिन्दी में अच्छी तरह बातचीत कर लेती हैं। जिन विषयों पर यहां शोध-कार्य हो रहा है, उन पर जरा गौर कीजिए 'सूरसागर में सूरदास की भक्ति', 'दिनकर', 'उदयशंकर भट्ट', सुभद्राकुमारी 'चौहान', 'मध्यप्रदेश की अर्थ - व्यवस्था' (इसी प्रकार उत्तरप्रदेश, विहार आदि राज्यों के सम्बन्ध में भी कार्य हो रहा है), टीपू सुल्तान', 'मध्य एशिया तथा भारत में रहने वाले रूसी लोग', 'अफ्रीका में रहने वाले भारतीय', 'भारत में भाषा सम्बन्धी आन्दोलन', भारत में मुगलकालीन लघुचित्र', 'हिन्दी साहित्य में महिला नायिका', 'राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाली 'भारतीय महिलाएं', "अली सरदार जाफरी की जिन्दगी और शायरी" 'ख्वाजा अहमद अब्बास की जिन्दगी और रचनाएं', 'संयुक्त अरब गणतंत्र में पाकिस्तान की विदेशी नीति', आदि।

उक्त संस्थान में कुल मिलाकर ४६ 'साइन्स के उम्मीदवार' (साइन्स में इतिहास, साहित्य आदि शामिल हैं) तथा ५ साइन्स के डाक्टर हैं। सभी विद्वान् किसी-न किसी विषय पर शोध-कार्य कर रहे हैं।

इसके सिवाय, भारत के अनेक आधुनिक लेखकों की रचनाओं के उजवेक भाषा में अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। इनमें रवीन्द्रनाथ टैगोर, प्रेमचन्द, यशपाल, अली सरदार जाफरी

कृष्णचन्दर, अमृताप्रीतम, मुल्कराज आनन्द, अब्बास आदि मुख्य हैं। गत तीन वर्षों में इन लेखकों की २ लाख ५० हजार से अधिक प्रतियां छपी हैं।

यहां से हम लोग उच्च शिक्षा के मंत्रालय में पहुँचे। शिक्षामंत्री बड़े हंसमुख और मिलनसार मालूम हुए। आप गणित के अध्यापक हैं, और दो बार भारत की यात्रा कर चुके है। अपने दो सहयोगियों के साथ हम लोगों के स्वागत के लिए उपस्थित थे।

ताशकन्द के लेनिन विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या २० हजार और अध्यापकों की साढ़े ७ हजार है। एक कक्षा में प्रायः दस से अधिक विद्यार्थी नहीं होते। विद्यार्थियों की परीक्षाएं होती हैं, माहवारी रिपोर्ट भी दी जाती है। मैट्रिक पास करके विश्वविद्यालय में कौन से विषय लेना-इस बारे में विद्यार्थी स्वयं निर्णय करते हैं; अध्यापकों का बोर्ड भी उन्हें मार्गदर्शन करता है। यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाये तो उसे तीन बार तक परीक्षा में बैठने का मौका दिया जाता है। परीक्षा में सफलता प्राप्त करते ही विद्यार्थी को डिप्लोमा नहीं दे दिया जाता। एक वर्ष तक उसे कहीं काम करने भेजा जाता है, उसके बाद डिप्लोमा मिलता है।

यह विश्वविद्यालय उजबेकिस्तान का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। रूसी और उजबक दोनों भाषाओं में यहां शिक्षा दी जाती है—जो जिस भाषा में पढ़ना चाहे पढ़ सकता है। इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बड़े-बड़े ओहदों पर काम कर रहे हैं; बहुत-से मास्को में भी अध्यापन का कार्य करते हैं।

सोवियत संघ में अध्यापकों को कम-से-कम ६८ रूबल मासिक वेतन मिलता है—बिजली और पानी आदि मुफ्त। कितने ही अध्यापकों से कोयले का खर्च नहीं लिया जाता, और कुछ को तो मकान का किराया भी नहीं देना पड़ता। विश्वविद्यालय के अध्यापकों को कम-से-कम १०८ रूबल मिलते हैं। जैसे-जैसे अध्यापन का अनुभव बढ़ता है, वेतन भी बढ़ता जाता है अध्यापक की डिग्री देखकर भी वेतन नियत किया जाता है। किसी अध्यापक के लिए कम-से कम एक सप्ताह में १८ घंटे काम करना आवश्यक है। जो अध्यापक उत्तरदायित्व के साथ अपना काम निबाहते हैं, उन्हें 'सम्मान की उपाधि', (आर्डर आफ औनर), 'लाल झंडे की उपाधि', 'लेनिन की उपाधि तथा 'समाजवादी श्रम का नायक' पद से सन्मानित किया जाता है। 'समाजवादी श्रम के नायक को सुनहरे सितारे का पदक मिलता है। विश्वविद्यालय के अध्यापकों का अधिक-से-अधिक वेतन ५०० रूबल होता है—जो सोवियत संघ के प्रधानमंत्रीं को मिलता है।

सोवियत-भारतीय सांस्कृतिक संघ यहां की एक सक्रिय संस्था है। उजबेकिस्तान की सुप्रसिद्ध कवयित्री तथा 'उजबेकिस्तान की स्त्रियां' नामक पत्रिका की सम्पादिका श्रीमती जुल्फिया इसकी अध्यक्षा और श्रीमती गैलिनात्सारेन्को जरनल सेक्रेटरी हैं। सोवियत संघ और भारत की जनता को परस्पर नजदीक लाने के लिए दोनों वृहत् देशों को सुविधा के लिए खास-खास हिस्सों में बांट दिया गया है। उदाहरण के लिए, उजबेकिस्तान को पंजाब के साथ, लेनिनग्राड को महाराष्ट्र के

साथ, और मास्को को दिल्ली के साथ जोड़ दिया गया है।

सोवियत-भारतीय सांस्कृतिक संघ की ओर से हम लोगों के स्वागत में संघ के कार्यकर्ताओं की एक सभा आयोजित की गयी। श्रीमती त्सारेन्को ने संघ की विविध प्रवृतियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। संघ की ओर से भारतीय कला कौशल और भारतीय जनता के जीवन सम्बन्धी कितनी ही प्रदर्शिनियों और फिल्मों का आयोजन किया गया, जिन्हें केवल ताशकन्द में ही नहीं, समरकन्द, बुखारा आदि नगरों तथा कस्बों में भी भेजा गया। संघ के कार्यकर्ताओं में भी महिलाओं की संख्या ही अधिक है।

चायपान के समय उजबेकिस्तान और हिन्दुस्तान के सम्बन्धों के बारे में चर्चा होने लगी। 'उजबेक' शब्द के सम्बन्ध में जिज्ञासा व्यक्त करते हुए मैंने कहा कि उत्तरी हिन्दुस्तान में यह शब्द 'बेवकूफ' या 'उजड्ड' के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। क्या प्राकृत के उजु+वंक अथवा उजु+वक्क (उजु+वक्र=जड़बुद्धि) शब्द से इसका कोई सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है ? प्रोफेसर हशीमोव ने बताया कि 'उजबेक' शब्द का प्रयोग १६ वीं शताब्दी के पहले का नहीं है; तथा उजबेक भाषा में 'उज' का अर्थ 'मैं' और 'बेक' का अर्थ 'शाहजादा' होता है; अर्थात् 'मैं शाहजादा हूं'।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार, उजबेकों के खान शैबानी द्वारा तैमूर वंश का नाश कर दिये जाने पर, वंशी राजकुमार जहीरुद्दीन बाबर जब हिन्दुस्तान आया तो उजबेकों द्वारा पराजित होने के कारण, बाबरवंश के लोग

हिन्दी स्कूल में पं० नेहरू के जीवन संबधी प्रदर्शिनी

१२

ताशकन्द होटल
३१ नवम्बर. १९६५

प्रिय कल्पना,

लेनिनग्राड और मास्को की भांति ताशकन्द में भी माध्यमिक स्कूल नं० २४ हिन्दी का स्कूल है, जहां १० साल से हिन्दी पढ़ाई जा रही है। जब हम लोग स्कूल में दाखिल हुए तो स्कूल के बच्चे बड़ी उत्सुकता से हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके चेहरों पर अद्‌भुत जिज्ञासा का भाव नजर आ रहा था। सहज भाव से हाथ जोड़कर उन्होंने नमस्ते किया।

हम लोगों ने एक कक्षा में प्रवेश किया। 'सोवियत संघ और भारत की मित्रता दृढ़ हो' 'रूसी-हिन्दी भाई-भाई' के इश्तहार लगे हुए थे। दूसरी ओर लेनिन पर एक छोटी-सी कविता हिन्दी में लिखी थी-"लेनिन पिता! तुम हमारे रक्षक

हो। तुमने कहा पढ़ो, पढ़ो।"

हम लोग एक ओर बैठ गये। अध्यापिका बच्चों से किताब पढ़वा रही है। वह बेधड़क होकर हिन्दी बोल रही है। ब्लैक बोर्ड के पास एक नक्शा टंगा हुआ है जिसमें बहुत-से पशु-पक्षियों के चित्र बने हैं। कक्षा की मानीटर एक लड़की नक्शे के पास खड़ी है। वह दूसरे बच्चों से नक्शे में बने हुए चित्रों के नाम पूछती है, फिर उस नाम को बोर्ड पर लिखने के लिए कहती है। यदि वह नाम किसी ने अशुद्ध लिखा है तो उसे दूसरे बच्चे से दुरुस्त करने को कहती है। यह सब क्रिया बड़े अनुशासनपूर्वक चल रही है। हिन्दा की अपेक्षा उनका उर्दू शब्दों का उच्चारण अधिक ठीक मालूम दिया। पोशाक हिन्दुस्तानी जैसी लगती हैं, लड़कियों की चोटियां लटक रही हैं। नृत्य और वाद्य का प्रदर्शन किया गया, तथा हिन्दी और उजबेक भाषाओं में कविता-गान के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

विद्यार्थियों ने हमारे गले में लाल रंग का वस्त्र (स्कार्फ) बांधकर हमें 'पायोनियर' बना लिया-अर्थात् हम लोग भी अब दूसरों से सद्-व्यवहार करें और अनुशासन में रहें। गुलदस्ते भेंट किये गये और प्रेमोपहार भी।

स्कूल में नेहरू के जीवन और उनकी सरगर्मी से सम्बन्धित चित्रों की प्रदर्शनी लगी हुई है। दूसरी ओर, अपने जीवन का बलिदान करने वाले कम्युनिस्ट पार्टी के शहीदों के चित्र हैं।

खलीमा साभू रानोवा स्कूल की डायरेक्टर हैं। वे और हिन्दी की प्रधान अध्यापिका, दोनों ही सौम्य, [illegible] और [illegible] खुशमिजाज हैं। प्रधान अध्यापिका ने [illegible]

ने उन्हें 'जनकवि की पदवी से विभूषित किया। उनकी एक कविता का नाम 'कौन-सा फल बेहतर है ?'

खूबानी (उज़बेक भाषा में उर्युक) अपने गूदे को बादाम की भांति स्वादिष्ट बताकर अपना गुणानुवाद करती है। 'गिलस' (उजबेकिस्तान की खास किस्म की 'चैरी'—एक विलायती फल) खूबानी को शेखीबाज़ कहकर अपने आपको लाल रंग की, मीठी और दुनिया-भर में नामी बताती है और अपने सामने सबको तुच्छ समझती है। 'चैरी' 'गिलस' को फटकारती हुई अपने फूलों को तितलियों की भांति सुन्दर तथा पहले प्यार के स्वप्नों की भांति शर्मीले बताकर अपना गुणगान करती है।

हमजा की 'ओह श्रमिक !' 'गज़ल' 'कर्मकर' और 'उठो' आदि और भी अनेक प्रेरणादायक कविताएं हैं जिनमें कवि ने कर्मकारों और अपने देश की जनता को जागृत होने के लिये आह्वान किया है।

मूसा ताशमुहम्मदोव—जो ऐबक नाम से प्रसिद्ध हैं—का जन्म ताशकन्द में १९०५ में हुआ था। उन्होंने 'हृदय की बांसुरी' 'मशाल' आदि सरस कविताएं लिखी हैं। लेकिन उनका अली-शेर नवाई पर लिखा हुआ 'नवाई' उपन्यास विशेष प्रसिद्ध हुआ जिसके लिए उन्हें स्तालिन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अपनी साहित्यिक सेवाओं के उपलक्ष्य में ऐबक को 'लेनिन की उपाधि', 'श्रम के लाल झंडे की उपाधि' और 'सन्मान के पदक की उपाधि' पद से विभूषित किया गया है।

अब्दुल्ला कहार का जन्म १९०७ में हुआ था। वे उजबेक गद्य साहित्य के प्रतिष्ठाताओं में गिने जाते हैं। उन्होंने लघु

कथाएं, उपन्यास और नाटकों की रचना की है। उनका एक उपन्यास सामूहिक खेती पर है। वे 'श्रम के लाल झंडे की उपाधि' तथा 'सन्मान के पदक की उपाधि' के पद से सम्मानित किये जा चुके हैं।

श्रीमती जुल्फिया का जन्म ताशकन्द में १६१५ में हुआ था। विद्यार्थी अवस्था में वे अलीशेर नवाई की भावप्रवण गजलों, पुश्किन की स्पष्ट और स्वच्छ कविता तथा बायरन की विद्रोही पंक्तियों से विशेष प्रभावित हुई, और छिप-छिपकर उन्होंने कविता लिखना शुरू कर दिया। वे अफ्रीका-एशिया के देशों के साथ सम्बन्ध रखने वाली सोवियत कमेटी की कई वर्ष तक अध्यक्ष रहीं। इस बीच में अरब की कवयित्री मलिक अब्दुल अज़ीज, तथा भारत की लेखिका अमृता प्रीतम और गुरुबख्शसिंह के सम्पर्क में आई। आगे चलकर कवयित्री जुल्फिया ने इनकी रचनाओं का उजबेक भाषा में अनुवाद किया। जुल्फिया ने भारत, संयुक्त अरब जनतंत्र, चीन, श्रीलंका, जापान और युगोस्लाविया आदि देशों में भ्रमण किया है। भारत के एक मुशायरे में वे शरीक हुईं और उसपर एक कविता ही लिख डाली। मुशायरे को सम्बोधित करती हुई वे कहती हैं—

ओ मुशायरे !
तुम शान्ति और सुख के गीत गाते हो,
तुम कोई मेला या तमाशा नहीं हो, तुम [illegible] हो !
....
मेरे मित्रो ! [illegible]

तुम्हारी कविता हृदयों को उद्दीप्त कर दे-प्रतिध्वनित होने लगे, गूंज उठे।

कवयित्री जुल्फिया ने प्रेम की कुछ कविताएं लिखी हैं जो उन्होंने अपने दिवंगत पति कवि हमीद अलीमजान को समर्पित की हैं।

असकद मुख्तार का जन्म फरगाना में १९२० में हुआ था। 'बहनें' उनका युद्धोत्तर-कालीन सशक्त उपन्यास है जिसमें उजबेकिस्तान के औद्योगीकरण, उजबेक श्रमजीवियों की जिन्दगी तथा स्त्रियों की मुक्ति के अनेक चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। मुख्तार उजबेकिस्तान के लेखक-संघ के मंत्री पद पर कार्य कर रहे हैं।

मंजूर सबिरोवा (१९०६-१९५३) जो ऐदीन नाम से प्रसिद्ध हैं—उजबेकिस्तान की कहानी लेखिका हैं। उन्होंने अपने समाजवादी जनतंत्र की स्त्रियों के सम्बन्ध में खूब लिखा है।

रहमत फैजी का जन्म ताशकन्द में १९१८ में हुआ था। पेशे से वे इंजीनियर हैं, लेकिन साहित्यिक रुचि के कारण लेखक बन गये हैं। सईदा जुनुनोवा का जन्म १९२६ में हुआ था। गद्य और पद्य दोनों में उन्होंने रचना की है। इसके अलावा गफूर गुलाम, शराफ रशिदोव, कामिल याशेन आदि उजबेकिस्तान के अनेक लेखक अपनी रचनाओं से उजबेक साहित्य की श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

शहर में प्रवेश करने वाले विदेशी यात्रियों के स्वागत के लिए बोर्ड लगा है। शहर में क्रान्ति के समय काम आने वाले शहीदों के प्रभावशाली स्मारक बने हुए हैं, जहां २४ घंटे गैस

की आग प्रज्वलित रहती है। नौजवान स्त्री-पुरुषों के प्रेरणादायक सुन्दर बुत बने हुए हैं जो सीना निकालकर हाथ फैलाये आगे बढ़े जा रहे हैं। फुटवाल यहाँ का सर्वाधिक लोकप्रिय खेल है। ६० हज़ार दर्शकों के लिए एक विशाल मंच बना हुआ है।

उजबेकिस्तान में अन्य जातियों को अपेक्षा मुसलमानों की संख्या सबसे ज्यादा है। पुराने जमाने में औरतें लम्बा बुर्का पहनतीं और घोड़ों के बालों से बने पर्दे में रहतीं थीं। बुर्के के बगैर अपने घर की देहली लाँघने की भी इजाजत उन्हें नहीं थी। पढ़ना-लिखना भी यदि होता तो पर्दे के अन्दर ही जिससे कि किसी पुरुष की निगाह उनपर न पहुंच जाये। १९२७ में इस घातक प्रथा के विरुद्ध जेहाद बोला गया जिसके कारण कत्ले-आम तक की नौबत आ पहुँची। लेकिन आज उजबेकिस्तान की महिलाएं परम्पागत बंधनों से मुक्त होकर राष्ट्र के बड़े-बड़े ओहदों पर बड़ी योग्यता पूर्वक काम कर रही हैं। सम्भवत: कोई पुराने संस्कारों में पली हुई औरत ही सिर पर पर्दा लेती हो, वरना अपना मुंह कोई भी पर्दे से नहीं ढकती।

घरों की यहां बड़ी समस्या थी। लेकिन गत पांच वर्षों में ८० लाख वर्ग-मीटर से अधिक स्थान में मकानों का निर्माण हुआ है। मतलब यह कि प्रत्येक सात मिनटों में एक आधुनिक मकान बन कर तैयार होता है। कारखानों में मकानों के अलग अलग हिस्से तैयार कर लिए जाते हैं और फिर उन्हें जोड़ कर आनन-फानन में मकान खड़ा कर दिया जाता है। ऐसे दस कारखाने उजबेकिस्तान सोवियत समाजवादी जनतंत्र में हैं।

जो एक वर्ष में ५ लाख वर्ग-मीटर जमीन घेरने वाले मकानों के अलग-अलग हिस्से निर्माण करते हैं। दिलचस्प बात है कि ये मकान पहले उन लोगों को दिये जाते हैं जिन्होंने हाल में ही शादी की हो। इस तरह का एक इश्तहार ताशकन्द के हवाई-अड्डे पर देखने में आया।

उजबेक जनतंत्र की ओर से एक प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया है। उजबेकिस्तान में पैदा होने वाली ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जिसका प्रदर्शन न किया गया हो। बिजली, गैस रासायनिक पदार्थ, और भवन-निर्माण सम्बन्धी आदि बड़ी-बडी मशीनों से लेकर सूती कपड़े, रेशम,जूते, अनाज, फल, मेवा आदि छोटी-छोटी चीजें तक दिखाई गई हैं। उजबेकिस्तान में भेड़-बकरियों की बहुत बड़ी तादाद है; इनकी खाल से गर्म कपड़े बनाये जाते हैं। जब बकरे तीन दिन के होते हैं तो उन्हें मारकर उनकी मुलायम खाल से कपड़े बनते हैं। अन्य बकरों की खाल भी रक्खी हुई हैं–ये ऐसे बकरे हैं जिन्हें बड़े होने पर मारा जाता है। कपड़ों के भांति-भाति के रंगीन डिजाइन दिखाई दे रहे हैं। बहुत-से डिजाइन मशीन की सहायता के बगैर, हाथ से बनाये गए हैं। कपड़ों का लगभग १६ देशों में निर्यात किया जाता है। खाद्य अन्नों में गेहूं, चावल चना, मटर और मूंग की दाल, तथा फलों में अंगूर, अनार, सेव और नाशपाति के ढेर लगे हुए हैं। बेलों पर बड़े-बड़े अंगूर लटके हुए हैं जिन्हें देखकर मुंह में पानी आ जाता है! खानों में से कोयला और तेल निकाला जा रहा है और इस्पात तैयार हो रहा है। एक ही मशीन से सूत लपेटने और तागा

बनाने आदि का काम हो रहा है । खेतों की सिंचाई के दृश्य दिखाये गये हैं। १ लाख ६० हजार किलोमीटर सिंचाई करने वाली नहरों का निर्माण किया गया है । इनसे, जो जमीन खेती करने योग्य नहीं, उसे उपजाऊ बनाया जा रहा है। नहर के पानी से सस्ती बिजली का भी उत्पादन किया गया है। कपास की बुआई से लेकर उसकी चुनाई तक सारा काम मशीन से ही होता है। खेतों की चार पंक्तियों की कपास एक साथ चुनने की मशीन का निर्माण किया गया है। यह मशीन कपास को चुनकर उसे इकट्ठी भी कर देती है। श्रम की कितनी बड़ी बचत है ! इस मशीन से ट्रैक्टर का काम भी लिया जा सकता है। जलविद्युत् की मशीनों द्वारा जल और वायु को नाइट्रोजन खाद में परिवर्तित कर दिया जाता है जिससे कि वह कपास के खेतों में काम आ सके। गत चार वर्षों में उजबेकिस्तान में ९ हजार व्यापार के केन्द्र खोले गये। १९६३ में व्यापार में

ने चलते समय अपने देश की एक सुन्दर गुड़िया भेंट की। बोले--"यह तोहफा मेरी तरफ से अपनी बेटी के लिए है। बेटी न हो तो बीबी के लिए है।"

"यदि किसी के बेटी और बीबी दोनों ही न हों तो (मेरा इशारा प्रतिनिधि मंडल के दूसरे सदस्य डाक्टर मुखर्जी की ओर था)?" मैंने कहा।

"दो में से एक तो जरूर होनी ही चाहिए"--साथी मोस्कलेव ने उत्तर दिया। और 'दस्तवदानिया' (खुदा हाफिज़) कह कर हम लोगों ने बिदा ली।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

रेगिस्तान को उर्वरा बना दिया गया है

२३

होटन, तुर्कमानिस्तान
धरराबाद
४ नवम्बर, १९६५

बिना किसी आवेश और आक्रोश के । अन्त में फैसला हमारे पक्ष में हुआ और हम अपने गन्तव्य स्थान—अश्काबाद—के लिए चल पड़े ।

यह हवाई-जहाज अजरबैजान की राजधानी बाकू जा रहा है । स्त्री-पुरुषों की पोशाक हिन्दुस्तानी पोशाक से बहुत मिलती जुलती है । छोटे बच्चों के लिए पालनों की व्यवस्था है । कोई महिला जब अपने एक बच्चे को दीर्घ या लघुशंका के लिए ले जाती है तो उसके दूसरे बच्चे की देखभाल विमान-परिचारिका स्वयं अथवा पास में बैठे हुए यात्री करते हैं । विमान-परिचारिका बड़ी फुर्ती से अपना काम कर रही हैं—अपनी चुस्त पोशाक में वह बड़ी आकर्षक लग रही है । किसी बीमार औरत को दवा की टिकिया दे रही है और रोते हुए शिशु को पालने में भुलाकर चुप करा रही है ।

कुल एक घंटे और चालीस मिनट में ताशकन्द से अश्काबाद पहुंच गये । हवाई अड्डे पर एक महिला (बीबी पलवनोवा तुर्कमान गोर्की विश्व-विद्यालय की रेक्टर) और दो पुरुष (एक कवि अन्ना कोवुसोव, और दूसरे विदेशों के साथ मित्रता और सांस्कृतिक सम्बन्ध रखने वाली तुर्कमान सोसायटी के मंत्री मुखट वैगेलदियेफ) स्वागत के लिए उपस्थित थे । एक दूसरे से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई । अश्काबाद और ताशकंद के बीच फुटबाल का मैच चल रहा था ।

अभी कुछ ही दिन पहले यहां भारत से पार्लियामेन्ट डेली-गेशन आया था । डेलीगेशन के नेता ने बहुत दिलचस्प भाषण दिया । उन्होंने बताया कि दिल्ली के चार मुख्य दरवाजों में से

एक का नाम है तुर्कमान दरवाजा। जैसे बाबर उजबेकिस्तान का निवासी था, वैसे ही हुमांयु का विश्वास पात्र मित्र और हुमांयु की मृत्यु के बाद अकबर का वकीले सल्तनत (मुख्यमंत्री) बैराम खाँ तुर्कमानिस्तान् का निवासी था। हिन्दी का सुप्रसिद्ध कवि और 'रहीम सतसई' का रचयिता अब्दुर रहीम खानखाना बैराम खां का ही सुपुत्र था जो आगे चलकर अकबर बादशाह के प्रमुख मंत्रियों में गिना जाने लगा। इससे भारत और तुर्कमानिस्तान के प्राचीन सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।

विदेशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध रखने वाली तुर्कमान सोसायटी की स्थापना १९५९ में हुई थी। यह संस्था अभी तक अरब राष्ट्र, वियतनाम तथा भारत के साथ अपने मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर सकी है; अफगानिस्तान के साथ करने वाली है। सोसायटी की ओर से हमारे गणतंत्र और स्वातंत्र्य दिवस के अवसर पर भारतीय फिल्मों तथा प्रदर्शिनी आदि का आयोजन कर तुर्कमानिस्तान की जनता को भारतीय जीवन का

पत्र में संवाददाता का काम भी करने लगे। लेकिन कविता करने का शौक था। इसलिए बराबर लिखते रहे। इसके बाद मास्को की गोर्की साहित्य इंस्टिट्यट में अध्ययन किया। वहां से ग्रेजुएट होकर सरकार के संस्कृति विभाग के उपमंत्री बने। तत्पश्चात् तुर्कमानिस्तान के लेखक-संघ के उपाध्यक्ष पद पर काम किया। कविता के अतिरिक्त, अनेक पुस्तकों का रूसी भाषा में अनुवाद भी आपने किया है।

होटल के कमरे रेशम के लाल पर्दों से बड़ी खूबसूरती से सजाये गये हैं। नीचे के कमरे में हम लोगों के भोजन की व्यवस्था की है। भोजन परोसने वाली युवती बड़ी विनम्र और आकर्षक लग रही है। अतिथि-सत्कार सीखना हो तो इन लोगों से सीखना चाहिए।

तुर्कमानिस्तान जनतंत्र कास्पियन समुद्र से लेकर आमू, दरिया तक फैला हुआ है। इसकी दक्षिणी सीमाएं अफगानिस्तान और ईरान से मिलती हैं। ८० प्रतिशत भूमि में रेगिस्तान फैला हुआ है जो काराकुम (काला बालू) नाम से प्रसिद्ध है। यह दुनिया का तीसरा बड़ा रेगिस्तान है। काराकुम के दक्षिण में कोपेत-दाग की ऊंची पर्वत-शृंखलाएं हैं जिनके निचले भाग में जंगली बादाम, और पिस्ता आदि के वन हैं। इस पर्वतशृंखला से अनेक नदियां निकलती हैं जो काराकुम रेगिस्तान में जाकर विलुप्त हो जाती हैं। दिसम्बर-जनवरी में यहां इतनी सर्दी पड़ती है कि तापमान हिम-बिन्दु-से ५० डिग्री नीचे चला जाता है, और गर्मी भी उतनी ही—तापमान १२० डिग्री के ऊपर! लू से शरीर झुलस जाता है और

जब बालू के अंधड़ चलते हैं तो सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। पीने का पानी भी यहां बहुत दूर-दूर से लाना पड़ता है।

रेगिस्तान में यद्यपि सब जगह बालू- ही-बालू दिखायी देती है, और यहां की जलवायु ऐसी है कि कोई भी चीज़ जीवित नहीं रह सकती है फिर भी कुछ स्थान ऐसे हैं जहां घास पैदा होती है और जो ऊंटों और काराकुल भेड़ों के के चारे के काम में आती है। यहाँ के गड़रियों में कहावत है—"बालू पर अपना लबादा डाल दो, उस पर बैठ जाओ, एक हांडी चाय पी डालो, काबिल आदमियों से बातें करो उन्हें अगर तुम्हारे लबादे में घास का एक भी तिनका चिपका हुआ मिले तो समझो कि काराकुल भेड़ों के लिये यह स्थान बड़ा ही उपयुक्त है।" आजकल तो विज्ञान की सहायता ने रेगिस्तान में भी फसल उगाने के नये तरीके ईजाद कर लिए गये हैं जिससे यहां की भूमि में चावल, कपास, रेशम, अंगूर, अनार, सेब, खरबूजा और गुलाबी तरबूज आदि पैदा होते हैं। तरबूज इतना बड़ा कि एक आदमी न उठा सके, और यह मीठा इतना जैसा शहद। चारजूय के सर्दे और तरबूज अपने स्वाद और गंध के लिए विदेशों तक में नामी हैं। अंगूर भी कुछ कम मीठे नहीं। बीसियों किस्म की शराब इनसे बनायी जाती है जो तमाम सोवियत संघ में नामी है।

रूस के लोग शराब के बहुत शौकीन होते हैं। यहां एक कहावत है—'अफसोस है कि पानी शराब नहीं है।' मतलब यह है कि कितना अच्छा होता यदि पानी भी शराब

बन जाता। तुर्कमानिस्तान के अलावा, सोवियत संघ में आर्मेनिया, यूक्रेनिया, क्रीमिया, ज्योर्जिया, मोल्हाविया, ताजिकिस्तान और उजबेकिस्तान में किस्म-किस्म की शराब बनायी जाती है। कुल मिलाकर केवल अंगूरों से ही ४६५ किस्म की शराब बनती है। पहले, किसान लोग देशी तरीकों से शराब बनाते थे लेकिन आजकल शराब बनाने के आधुनिकतम तरीकों का इस्तेमाल किया जाता है। पिछले दिनों ज्योर्जिया की राजधानी त्बिलिसी में शराबों की प्रदर्शिनी का आयोजन किया गया था जिसमें तुर्कमानिस्तान की शराब को सोने और चांदी के तमगे मिले। शराबों के नाम देखिए—यास्मान-सालिक' वेजमेइन, फ्यूजी (इसका अर्थ है मीठा), एरिकला आदि। अंगूरों में मिठास होने के कारण ये सभी शराबें वेहद मीठी होती हैं। मोल्डाविया जनतंत्र तो तुर्कमानिस्तान से भी आगे बढ़ गया है। वहां यहां की उपेक्षा २५ गुना अधिक शराब पैदा होती है।

काराकुम के अधिकांश भागों में पानी का अभाव है। ऐसी हालत में पानी का अर्थ है जीवन। पानी की इस कमी को दूर करने के लिए दुनिया की सबसे बड़ी काराकुम नहर का निर्माण किया जा रहा है जिसे बुलडोज़रों की सहायता से खोदा गया है। १९६२ ई० में इस नहर के द्वारा आम दरिया का पानी, अश्काबाद नहर के मुहाने से ८०० किलोमीटर दूर पहुंचा। विशाल नदी-पोत भी इसमें चलते हैं। यह नहर एकाध-साल में बनकर पूरी हो जायेगी और फिर फालतू पड़ी हुई लाखों एकड़ जमीन की सिंचाई हो सकेगी। किसानों के लिए इससे

बढ़कर क्या हो सकता है।

एक पुरानी कहावत है--"जिसके पास ऊंट है, उसके पास सब कुछ है"। यह कहावत यहां सोलह आना चरितार्थ होती है। उसके वालों से कपड़े बनते हैं; उसका गोश्त खाने और दूध पीने के काम में आता है। ऊंट को रेगिस्तान का जहाज़ कहा जाता है, जो बिना पानी पिये मीलों लम्बा रास्ता तय कर लेता है, और रहता है खाकर सिर्फ बबूल की पत्तियां और कंटीली, कड़वी नमकीन घास। शिकारी खरगोश और परिंदों आदि का शिकार करके खाते हैं। एक शिकारी बन्दूक लिए साइकिल पर अपने घर लौट रहा है। शिकार साइकिल पर लटका हुआ है और शिकारी-कुत्ता साइकिल में बंधा हुआ चल रहा है।

स्त्री-पुरुषों की रंग-बिरंगी पोशाक देखने से लगता है कि हिन्दुस्तान में आ गये हों। तुर्कमान पुरुष ऊंची और देखने में भारी भेड़ की खाल की बनी टोपी लगाते हैं। यहां की कारा-कुल भेड़ें अपनी रंग-बिरंगी खूबसूरत ऊन के लिए दुनिया-भर में प्रसिद्ध हैं। उनके समूर बने कोट रेशम जैसे चिकने और चमकदार, टिकाऊ और सुन्दर होते हैं। उनकी बनी दुम्बों की टोपी कानों तक आ जाती है। लाल रंग का पायजामा और ऊपर से लगाकर एड़ी तक लटका हुआ काले रंग का चोगा उनकी पोशाक है। गर्मियों में वे सूती कपड़ों और सर्दियों में ऊंट के बालों के बने कपड़ों का उपयोग करते हैं। उनके पैर मोजे और जूतों से ढके रहते हैं। औरतें लम्बे-चौड़े कपड़े पहनती हैं जिनका रंग लाल या नीला होता है। रेशमी कपड़े

कवि के नाम पर रक्खा गया है। फिल्म अभिनेत्रियों में माया कुलियेवा, सोना मुरादोवा और शकवेर्दियेवा आदि के नाम सुप्रसिद्ध हैं।

कल रात को एक नाटक देखा जिससे पता लगता है कि प्रेम-विवाह को यहां खूब ही प्रोत्साहित किया जाता है। नाट्यगृह स्त्री और पुरुषों से खचाखच भरा था; बीच-बीच में करतल-ध्वनि सुनायी दे रही थी। नाटक का सीन खुलता है एक गाँव की मस्जिद से, जहां सुबह के वक्त कोई मुल्ला अजान दे रहा है। यह मुल्ला गांव के मदरसे में अध्यापक है। बहुत-से लड़के-लड़कियां इस मदरसे में पढ़ते हैं। मुल्लानिपेस का इस गाँव में आगमन होता है। इस छैल-छबीले खूबसूरत नोजवान को देखकर मदरसे की लड़कियां उसकी ओर आकृष्ट होती हैं। एक लड़की के साथ कवि का इश्क हो जाता है।

मुल्ला जरा सख्त तबियत के हैं—मदरसे की लड़कियों को वे अपने अनुशासन में रखते हैं। उनके हाथ में एक माला रहती है जिसे वे फिराते रहते हैं। मुल्लानिपेस प्रगतिशील विचारों के हैं—लड़कियों की शिक्षा के पक्षपाती हैं। मखदूम कुली (१८वीं शताब्दी का तुर्कमान भाषा का सर्वप्रथम कवि) की कविताओं के वे बहुत शौकीन हैं। जाहिर है कि मुल्ला और उसके आदमी मुल्लानिपेस को पसन्द नहीं करते।

प्रेमी और प्रेमिका का प्रथम मिलन बड़े कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। प्रेमिका अपने प्रेमी को गुलाब का फूल नजर करती है जिसे हाथ में पकड़ते ही प्रेमी बेबस हो उठता है।

वह अपने अमर प्रेम का इज़हार करता है। अपनी प्रेमिका के काले नाग जैसे चिकने केश, बादाम जैसी आँखें और कमान जैसी भौंहों का काव्यमय वर्णन करता है। उसके सौन्दर्य के सामने चन्द्रमा को भी तुच्छ समझता है।

जब कभी मौका मिलता, दोनों लुक-छिपकर एक-दूसरे से मिलते और अपने प्रेम को अभिव्यक्त करते।

एक-बार, रात्रि के समय मुल्लानिपेस अपनी प्रेमिका के घर मिलने आते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य की निराली छटा देखने में आती है—दांबी जैसा आधा चांद दिखायी दे रहा है, मेघ आकाश में उड़ रहे हैं। प्रकृति अपनी सुषमा बिखेर रही है। नायक एक झाड़ी के पीछे छिप जाता है। नायिका अपनी विरह-वेदना के गीत गाती है। वह अपनी व्यथा से कातर हो, अन्यत्र चली जाना चाहती है, लेकिन फिर एक क्षण के लिए रुक जाती है। कदम-कदम पर वह भयभीत दिखायी पड़ती है-कहीं कोई उसे देख न ले! जहां उसका प्रेमी छिपा है, वहां आकर वह अपनी विरह वेदना व्यक्त करने लगती है। उसकी विरह-वेदना सुनकर नायक अपने को नहीं सम्भाल पाता। वह एकदम झाड़ी के बाहर आ जाता है और अपनी प्रेमिका का स्पर्श कर अपार सुख का अनुभव करता है। कुछ समय तक दोनों का प्रेम-व्यापार चलता रहता है। इस समय नायिका की माँ के आगमन से रंग में भंग हो जाता है। नायक अपने सिर पर पैर रखकर नौ-दो ग्यारह हो जाता है। मां अपनी बेटी से पूछती है, लेकिन वह कुछ जवाब नहीं देती।

नायक की विरह-ज्वाला और प्रज्वलित हो उठती है।

घर पहुँचकर वह अपने प्रेमोद्गारों को व्यक्त करता हुआ अपने आपमें खोया-खोया-सा रहता है। उसकी मां जब अपने बेटे की यह हालत देखती है तो वह उससे कारण पूछती है, लेकिन वह ठीक से जवाब नहीं देता। अपने मन का भेद वह नहीं खोलता। बार-बार पूछे जाने पर अपनी माँ से वह अनुरोध करता है कि वह मुल्ला के घर जाकर उसकी लड़की की मंगनी करे।

मुल्ला अपने विद्यार्थियों से सख्ती का बर्ताव जारी रखता है। वह एक अनाथ लड़की को पिटवाता है। और भी इसी तरह के काम वह करता है जिससे मदरसे के लड़के और लड़कियां असन्तुष्ट होकर मुल्लानिपेस के घर पहुँचते हैं। मुल्ला की वे शिकायत करते हैं और मुल्लानिपेस से पढ़ाने को कहते हैं।

मुल्ला के कानों तक जब यह बात पहुँचती है कि उसकी लड़की मुल्लानिपेस से प्रेम करने लगी है तो वह मुल्लानिपेस को कत्ल कराने का षड्यंत्र रचता है। इस काम के लिए वह गुंडों को रिश्वत देकर पक्का करता है। अपनी लड़की को वह ताले के अन्दर बन्द करने का हुक्म देता है जिससे वह कहीं बाहर न जा सके।

अपनी लड़की के साथ शादी करने के लिए वह एक बूढ़े रईस को तैयार करता है। बूढ़ा लड़की के कमरे में पहुंचकर उससे बलात्कार करना चाहता है। लड़की की मां भी यही चाहती है कि किसी तरह यह शादी हो जाये, लेकिन लड़की साफ इन्कार कर देती है और उस बूढ़े को अपमानित करके

वहां से चले जाने को कहती है।

मुल्ला और क्रुद्ध हो उठता है। वह अपनी लड़की के पांवों में बेड़ी डलवा कर उसे एक कोठरी में बन्द कर देता है।

बूढ़े को भी अपना यह अपमान सहन नहीं होता। वह उस कोठरी में आग लगवा देता है। आग की लपटें देखकर सब लोग दौड़े हुए आते हैं और आग बुझाने की कोशिश करते हैं। आग बुझाने वालों में लड़की का प्रेमी भी दिखायी पड़ता है। वह जलती हुई आग में घुसकर अपनी प्रेमिका को बाहर निकाल लाता है।

इस समय लोगों में दो पार्टियां हो जाती हैं। एक मुल्लानिपेस की तरफ है और दूसरी बूढ़े की तरफ। बूढ़ा आग लगाने के लिए मुल्लानिपेस को दोषी ठहराता है। दोनों ओर से कहासुनी होती है।

इस समय काज़ीजी का प्रवेश होता है। वे लड़की के बाप को समझाते हैं कि वह मुल्लानिपेस के साथ अपनी लड़की की शादी कर दे, पर वह तैयार नहीं होता।

आखिर काज़ीजी दोनों की शादी करा देते हैं। प्रेम की विजय होती है!

ड्रामें में काम करने वाले अभिनेताओं का अभिनय बहुत स्वाभाविक और सुन्दर बन पड़ा है। सामन्तवादी वातावरण आंखों के सामने आ जाता है जबकि लड़कियों की, अपनी इच्छा से शादी करने की बात भी कोई नहीं सोच सकता था।

और भी इसी तरह की कितनी ही प्रेम-कथाएं यहां प्रचलित हैं जिनके इश्तहार नाट्यगृह में लगे हुए थे।

किसी राजा को अपने मंत्री से बहुत मित्रता थी। दोनों ने तय किया कि यदि उनमें से एक के लड़का पैदा हो और दूसरे के लड़की, तो उन दोनों को शादी कर दी जाये; और यदि दोनों के ही लड़के अथवा लड़कियां पैदा हों तो वे दोनों आपस में प्रेम की जिन्दगी बसर करें। संयोग की बात, राजा के लड़की और मंत्री के लड़का पैदा हुआ। कुछ दिनों बाद मंत्री की मृत्यु हो गयी। राजा ने सोचा, मैं क्यों न किसी राजकुमार से अपनी लड़की की शादी कर दूँ? लेकिन दोनों एक-दूसरे के प्रेम में पागल थे। एक दिन राजा ने मंत्री के लड़के को एक सन्दूक में बन्द करा किसी नदी में छुड़वा दिया। संयोग की बात, लड़के को जरा भी आंच न आई। वह अपने घर वापिस लौट आया, और बड़ी धूमधाम से दोनों की शादी हो गयी।

आश्चर्य नहीं कि इस तरह की प्रेम-कथाओं के कारण अश्काबाद प्रेम की नगरी कहा जाने लगा हो।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

२४

तुर्कमानिस्तान होटल,
अश्काबाद
४ नवम्बर, १९६५

प्रिय कल्पना,

अश्काबाद उद्योग-धन्धों का एक बड़ा केन्द्र है जहां सूती और रेशमी कपड़ों तथा बनियान, जूते, कांच, सीमेंट, आटे, मछली और शराब के कारखाने हैं। रेगिस्तान में से गंधक निकाली जाती है। क्रास्नोवोस्दोक में तेल—जिसे काला सोना कहा जाता है—का बड़ा कारखाना है। नेवित-डाग बिजली पैदा करने का केन्द्र बन गया है और बेलेकेन पेट्रोलियम का खजाना।

१८८१ में तुर्कमान लोग यहां तम्बू लगाकर रहा करते थे। रूसियों के अधिकार में आ जाने पर एक छोटा-सा कस्बा बस गया। आजकल एक लाख से ऊपर अश्कावाद की आबादी होगी। शहर की सड़कें काफी चौड़ी हैं जो दूर तक सीधी चली गई हैं। दोनों ओर शीतलता देने वाले लम्बे वृक्षों की पंक्तियां खड़ी हैं। सड़कें बड़ी शान्त मालूम होती हैं। उनके नाम हैं—'स्वतंत्रता का मार्ग' 'पहली मई', 'गागारिन', 'शान्ति' आदि। 'कार्ल मार्क्स' सड़क के दोनों किनारों पर किंडरगार्टन स्कूल हैं। एक स्थान पर तुर्कमान के जनकवि मखदूम कुली की पाषाण की मूर्ति स्थापित की जाने वाली है। १९२७ में लेनिन की एक शानदार मूर्ति बनाई गई थी; मूर्ति का एक हाथ ऊपर उठा हुआ है, और

गलीचे बुनने के कारखाने में काम करती हुई एक श्रमजीवी महिला

दूसरे में टोपी है। सोवियत संघ की लेनिन की अन्य मूर्तियों से इसमें कुछ भिन्नता है। अरबी, लैटिन और रूसी भाषाओं में लेख खुदे हुए हैं। उद्यान में रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। १९४८ के भूकम्प में शहर की कितनी ही इमारतें धराशायी हो गयीं, लेकिन इस मूर्ति को जरा भी आंच न आई !

सदियों से तुर्कमान अपने सुन्दर और कलात्मक कालीनों के लिए मशहूर है। अश्काबाद में गलीचे बनाने का एक सरकारी कारखाना है। रंग-बिरंगे वस्त्र और आभूषण पहने, चोटियां लटकाये, गले में माला डाले और सिर पर टोपनुमा कपड़ा ओढ़े तुर्कमान, कजाक और रूसी युवतियां गलीचे बुनने में व्यस्त हैं। गलीचा बुनने का काम बड़ी मशक्कत का है। बुनते-बुनते पहले ऊन को ठीक कर उसे इकसार बनाया जाता है, फिर धागों को बड़ी कैंची से काटा जाता है। इसके बाद फिर से बुनाई शुरू हो जाती है। बुनाई का काम बड़ी जल्दी-जल्दी करना पड़ता है। रंग-बिरंगे भांति-भांति के डिजाइन वाले कालीन बड़े मनमोहक लगते हैं, लेकिन कालीनों को बुनने वाली युवतियां भी कम आकर्षक नहीं हैं। सुन्दरता के प्रदर्शन में होड़ लगी हुई है।

कालीन बुनने वाली युवतियां प्रतिदिन ७ घंटे काम करती हैं। जिसके लिए उन्हें प्रतिमास ८० रूबल से लेकर १२० रूबल तक मिलते हैं। ३३ युवतियों के नाम बोर्ड पर लिखे हुए हैं। जिनके नाम पहले हैं, उनका उत्पादन १४९ प्रतिशत तक पहुंच गया है; आखिर के नाम वाली युवतियों का उत्पादन है १०० प्रतिशत। उत्पादन के अनुसार हरेक को वेतन

दिया जाता है। कारखाने के कर्मचारियों को एक साल में आराम करने सेनिटोरियम में भेजा जाता है। प्रजनन के समय महिलाओं को सवैतनिक छुट्टी दी जाती है। सन्तोषजनक काम करने वाले श्रमिकों को सन्मान-पदक दिया जाता है। कालीन बुनने में मशीनों की अपेक्षा हाथ का काम ज्यादा होता है जिसे बहुत बारीकी से करना पड़ता है, इसलिए कालीनों की कीमत भी अधिक होती है–१००० रूबल से लगाकर २५०० रूबल तक। केवल अश्काबाद में ही नहीं, तुर्कमान जनतंत्र के अन्य इलाकों में भी गलीचे बुनने के कारखाने हैं। यहां के गलीचे लगभग ४१ देशों को भेजे जाते हैं; इनमें हिन्दुस्तान भी है। पहले जमाने में बुखारा के गलीचे नामी थे, लेकिन आजकल अश्काबाद ने बाजी मार ली है। भांति-भांति के बेल-बूटे, अंगूर कपास और फूल आदि कढ़े हुए गलीचे कितने सुन्दर लगते हैं! पेरिस में भरने वाली प्रदर्शिनी में यहां के गलीचों को डिप्लोमा दिया गया था। सोवियत संघ की प्रदर्शिनी में भी इन्हें सन्मानित किया जा चुका है।

एक गलीचे में प्रायः छह या सात रंगों को इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन सोवियत रूस के साथ मित्रता के द्योतक गलीचे में तीन सौ रंग भरे गये हैं। मार्क्स और लेनिन के डिजाइन वाले गलीचे भी बुने गये हैं।

कारखाने के चुस्त इंजीनियर ने अपने कारखाने के सम्बन्ध में बहुत-सी बातों की जानकारी करायी। उसने बताया कि तुर्कमानिस्तान में कहां-कहां अव्वल और दोयम दर्जे के कालीन बुने जाते हैं।

हमारे देश में भी काश्मीर जैसे स्थानों में एक-से-एक सुन्दर डिजाइन वाले गलीचे तैयार होते हैं। लेकिन क्या कभी इस सम्बन्ध में दोनों देशों के बीच किसी तरह का आदान-प्रदान हुआ है ?

अश्काबाद में तुर्कमान सोवियत समाजवादी जनतंत्र की साइन्स अकादमी है। यहां गोर्की तुर्कमान स्टेट युनिवर्सिटी, कालेज, विज्ञान सम्बन्धी अनेक संस्थाएं तथा बहुत-से टैकनीकल और माध्यमिक स्कूल हैं।

गोर्कीतुर्कमान स्टेट युनिवर्सिटी की रेक्टर बीबी पलवनोवा ने हम लोगों को विश्वविद्यालय में चाय के लिए आमंत्रित किया। हमारे आने की सूचना विश्वविद्यालय के बोर्ड पर लगा दी गयी थी। वहीं पर पंडित नेहरू की प्रदर्शिनी की तस्वीरें लगी थीं। ये तस्वीरें उस समय की हैं जब पंडित नेहरू ने अश्कावाद की यात्रा की थी—एक तस्वीर में वे हवाई जहाज से उतर रहे हैं, दूसरी में लाउड स्पीकर पर भाषण दे रहे हैं।

रेक्टर के दफ्तर में पहुंचने के बाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों से परिचय हुआ। प्राणिविज्ञान की प्रोफेसर एक महिला है। विश्वविद्यालय में इतिहास, पुरातत्वविद्या, नृकुलविज्ञान, कला,अर्थशास्त्र, साहित्य, आदि विषयों का अध्ययन-अध्यापन होता है। 'पूंजीवादी देशों की अर्थ-व्यवस्था' 'अपूंजीवादी देशों में वैज्ञानिक साम्यवाद का विकास' आदि अनेक विषयों पर यहां रिसर्च की जा रही है।

उजबेकिस्तान और तुर्कमानिस्तान में कुछ वर्ष पहले खुदाई में कुछ ऐसी महत्व की सामग्री उपलब्ध हुई है जिससे मध्य

निर्माण आदि के लिये उपयोगी, रूस की बनी हुई, कम्प्यूटिंग मशीन पर विद्यार्थी काम कर रहे हैं।

साइन्स अकादमी के बोटैनिकल गार्डन (वनस्पति विज्ञान उद्यान) की सैर करने गये। चीन, अमरीका, अफ्रीका आदि भिन्न-भिन्न देशों के वृक्ष तथा फूल-पौधे यहां लगाये गये हैं। पुष्प बड़े सुन्दर और सजावटदार हैं। उनकी महक चारों ओर फैल रही है। हिन्दुस्तान के भी कुछ पौधे हैं।

डाक्टर बरीस स्मिर्नोव यहां के स्नायु रोग के सुप्रसिद्ध सर्जन और तुर्कमानिस्तान सोवियत समाजवादी जनतंत्र की साइन्स अकादमी के सम्मान्य सदस्य हैं। इतने बड़े डाक्टर होकर भी महाभारत जैसे ग्रन्थराज का अनुवाद करने के लिए आप किसी-न-किसी तरह समय निकाल ही लेते हैं। स्मिर्नोव जब २७ वर्ष के थे तब उन्होंने महाभारत का रूसी अनुवाद आरम्भ किया था, और गत ५० वर्षों की कठिन साधना के पश्चात् आपने अभी हाल में नौवें खण्ड का अनुवाद समाप्त किया है।

बरीस स्मिर्नोव के पिता १८ वर्ष तक एक गांव में डाक्टरी करते रहे। अपने पिता की ही भांति पुत्र को भी डाक्टर बनने की इच्छा थी। बरीस ने पेट्रोग्राड (आजकल लेनिनग्राड) के आर्मी मेडिकल कालेज से डाक्टरी परीक्षा पास की। लेकिन डाक्टरी करते हुए भी उन्हें अपने परिवार के अन्य सदस्यों की भांति साहित्य के प्रति विशेष अभिरुचि थी।

मार्च, १९१८ की बात है। बरीस कीव के बाजार में से गुजर रहे थे कि उनकी नजर पुरानी किताबों की एक दुकान

पर पड़ी। वहां उन्हें कीव विश्वविद्यालय के किसी प्रोफेसर की लिखी हुई संस्कृत भाषा की एक पुस्तक मिल गयी। बरीस ने उसे खरीद लिया। अंग्रेज़ी, फ्रेंच और जर्मन भाषाओं का उन्हें ज्ञान था ही, उन्होंने संस्कृत भी शुरू कर दी।

बरीस को अपने काम से कम ही अवकाश मिलता था, फिर भी वे प्रतिदिन नियमपूर्वक आध घन्टा संस्कृत सीखने लगे। और कुछ ही महीनों बाद महाभारत के विराट् पर्व में पतिपरायणा सावित्री की कथा पढ़कर वे आनन्द-विभोर हो उठे।

आगे चलकर रूस में जब गृहयुद्ध छिड़ा तो डाक्टर बरीस को लाल सेना में रहकर चिकित्सक का काम करना पड़ता था, इसलिए संस्कृत के अध्ययन के लिए उन्हें बिल्कुल भी समय नहीं मिल सका। लेकिन गृहयुद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् संस्कृत के अध्ययन में वे फिर से जुट गये।

इन्हीं दिनों एक और दिलचस्प घटना हुई। १९३० में लेनिनग्राड की भयंकर बाढ़ में बहुत-सी अलभ्य पुस्तकें पुरानी पुस्तकों के विक्रेताओं की दुकानों पर पहुंच गयीं। इनमें से अनेक पुस्तकें साइन्स अकादमी की लाइब्रेरी की थीं, जो बाढ़ में खराब हो जाने के कारण दूकानदारों को बेच दी गई थीं। इन पुस्तकों में बार्टलिक और रूडल्फ राथ द्वारा सम्पादित संस्कृत की सुप्रसिद्ध पीटर्सबर्ग डिक्शनरी भी थी। डाक्टर बरीस ने इस डिक्शनरी को खरीद लिया, जो आगे चलकर उनके लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

डाक्टर बरीस ने अपना अध्ययन जारी रक्खा। लेनिनग्राड

की साल्तीकोवशोड्रिन तथा मास्को लाइब्रेरी जो में भी पुस्तकें उन्हें भगवद्गीता पर मिल सकीं, वे उनका स्वाध्याय कर गये।

द्वितीय विश्वयुद्ध के जमाने में डाक्टर स्मिर्नोव तुर्कमानिस्तान में काम करते थे। उन दिनों जब उन्हें स्नायु रोग से पीड़ित किसी रोगी के आपरेशन के लिए हवाई-जहाज से जाना पड़ता तो जितना समय हवाई जहाज में लगता, उतने समय में वे संस्कृत पढ़ा करते।

१९५५ से १९६३ ई० तक तुर्कमानिस्तान की साइन्स अकादमी ने उनके महाभारत के कई खण्डों के रूसी अनुवाद प्रकाशित किये। उन्होंने कुल मिलकर २० हजार श्लोकों का अनुवाद किया। इस बीच में उन्होंने तीन लेख महाभारत पर, तथा चार लेख भारतीय दर्शन पर लिखे जो दर्शन के विश्वकोश में शामिल कर लिये गये।

डाक्टर बरीस स्मिर्नोव सोवियत संघ में भारतीय विद्या के विशेषज्ञों में गिने जाते हैं—खासकर संस्कृत-रूसी अनुवादकों में आपका विशेष स्थान है। आजकल यद्यपि आप प्रायः रुग्ण रहते हैं, फिर भी महाभारत के अनुवाद को पूर्ण करने की आपकी उत्कट अभिलाषा है, और इसलिए जब कभी आपको अपने व्यस्त जीवन से अवकाश प्राप्त होता है, आप अनुवाद के कार्य में जुट जाते हैं।

अश्काबाद के 'वासिली जुकोव्स्की' (एक सुप्रसिद्ध रूसी कवि, जिसने १८४२ में 'नल दमयन्ती' का रूसी अनुवाद प्रकाशित किया था) मार्ग पर डाक्टर स्मिर्नोव का निवास स्थान है। प्राकृतिक सुषमा से रमणीय यह स्थान दूर-दूर से आने

वाले यात्रियों का पवित्र धाम बन गया है।

रामायण और महाभारत रूसी विद्वानों में खूब ही लोकप्रिय हैं। डाक्टर स्मिर्नोव के अलावा, रूस के अन्य विद्वान् भी महाभारत का अनुवाद करने में संलग्न हैं। सुप्रसिद्ध भारतीय पुरातत्ववेत्ता अकादमीशियन ए० बारान्निकोव के शिष्य तथा सोवियत संघ की साइन्स अकादमी की एशियायी जनता प्रतिष्ठान के अन्तर्गत भारतीय विभाग के अध्यक्ष व्लादीमीर कल्यानोव ने महाभारत के आदिपर्व, सभापर्व, और आरण्यक पर्व नाम के तीन खण्डों का रूसी अनुवाद प्रकाशित किया है। चौथा विराट् पर्व कल्यानोव के शिष्य स्वेतलाना लेविना द्वारा हाल ही में छपा है।

ग्रिगोरी इलियन महाभारत के दूसरे अनुवादक हैं जिन्होंने लोकप्रिय साहित्यिक शैली में इस महाकाव्य का रूसी अनुवाद किया है। १९५३ में इलियन ने महाभारत का अध्ययन प्रारम्भ किया और तीन वर्ष के भीतर उन्होंने इसके अठारहों खण्डों का पारायण कर डाला। तत्पश्चात् भारत के इतिहास और साहित्य से अनभिज्ञ रूसी पाठकों के हितार्थ उन्होंने कौरव-पांडवों के युद्ध पर आधारित मुख्य-मुख्य कथानकों को रूसी भाषा में लिपिबद्ध कर दिया।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

(बांयें से) वर्दी केरवाबयेफ (मेजवान) कवि अन्ना कोवुसोव, प्रोफेसर एस० के० मुकर्जी, लेखक।

२५

तुर्कमानिस्तान होटल,
अश्काबाद
५ नवम्बर, १९६५

प्रिय कल्पना,

अश्काबाद शहर मुझे पसन्द आया—एकदम शान्त और साफ-सुथरा। यहां के स्त्री-पुरुषों की केवल वेशभूषा ही हिन्दुस्तान जैसी नहीं, और भी बहुत-सी बातें हिन्दुस्तान से मिलती-जुलती हैं। अनाज पीसने की चक्की हमारे देश जैसी ही होती है; हमारी चक्कियों का हत्था छोटा होता है और यहां का काफी लम्बा। सूत कातने का चर्खा तो बिल्कुल हमारे जैसा ही है। महिलाएं झूला झूलती हैं, लेकिन यह झूला रस्सी का बना नहीं, मजबूत लकड़ी या लोहे का होता है।

उजबेकिस्तान की भांति, कुछ ही वर्ष पहले, तुर्कमानिस्तान भी ऊंटों, गधों और टट्टुओं का मुल्क था। पहले वहां ओमच (लकड़ी का हल) में ऊंट और गधा जोतकर खेती की जाती थी। खेती-बारी का सब काम हाथ से होता था। ऊंट को चरस में जोतकर खेतों की सिंचाई की जाती थी। तुर्कमानिस्तान अपने सुंदर और मजबूत घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है। यहां के लोग घुड़दौड़ के बहुत शौकीन होते हैं। यहां का जिगित नृत्य घुड़सवार का नृत्य कहा जाता है।

बाजार की सैर करते हुए, अपने यहां के आग बुझाने वाले दमकलों की भांति, घंटे की आवाज करती हुई, जल्दी-जल्दी दौड़ती हुई एक मोटर गाड़ी दिखायी दी। हमने समझा कि शायद कहीं आग लग गयी है और उसे बुझाने के लिए दमकला मंगाया गया है। लेकिन ज्ञात हुआ कि सोवियत संघ में इस प्रकार की कुछ खास गाड़ियां रहती हैं जिन्हें जरूरत पड़ने पर टेलीफोन द्वारा बुलाया जा सकता है। मसलन आप अचानक किसी भयंकर रोग से पीड़ित हो गये हैं और असहाय अवस्था में हैं तो मोटर गाड़ी के दफ्तर को सूचित-भर कर देने से, फौरन ही गाड़ी एक डाक्टर के साथ आपके दरवाजे पर आकर खड़ी हो जायेगी। गाड़ी के कर्मचारियों को आपको केवल अपना नाम और पता बताना होगा और साथ ही यह भी कि रोग से पीड़ित होने का क्या कारण है!

पानी की व्यवस्था भी बहुत सुन्दर मालूम हुई। शहर में पानी की मशीनें लगी हुई हैं। यदि आपको पानी की प्यास लगी है तो मशीन में एक कापेक डाल दीजिए, पानी का

गिलास आपके सामने आ जायेगा। यदि मीठा पानी चाहते हों तो उसकी कीमत होगी तिगुनी। गिलास को धोने की भी आवश्यकता नहीं। गिलास को दबा देने से वह अपने-आप धुल जाता है। मशीन पर रूसी भाषामें लिखा हुआ है वोद (संस्कृत में उदक)।

केरवावयेफ का 'पक्का कदम' (तुर्कमान भाषा में अर्तिक') नामक ऐतिहासिक उपन्यास मैंने पढ़ा था। यह उनके अधूरे उपन्यास का यशपाल द्वारा किया हुआ हिन्दी अनुवाद है। इसलिए अश्काबाद पहुंचकर 'पक्का कदम' के लेखक से भेंट करने की इच्छा बलवती हो उठी।

केरबावयेफ तुर्कमानिया गणतंत्र के ही नहीं, सोवियत संघ के एक सर्वाधिक लोकप्रिय लेखकों में से हैं। वे तुर्कमान साइन्स अकादमी के सन्मान्य सदस्य हैं, राज्य की ओर से एक-से-अधिक बार पुरस्कृत किये जा चुके हैं, संसार की अनेक भाषाओं में उनकी रचनाएं अनूदित हुई हैं, और आजकल तुर्कमान लेखक-संघ के अध्यक्ष हैं।

टेलीफोन करके मिलने के लिए समय मांगा गया। पता लगा कि यद्यपि इन दिनों वे काफी व्यस्त हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी मित्रों से मिलने के लिए उनके पास हमेशा समय रहता है।

उनका मकान क्या, आधुनिक ढंग का एक छोटा-मोटा भवन ही समझना चाहिए। कम्पाउण्ड भांति-भांति के पेड़ और लताओं से मंडित था फूलों की महक चारों ओर फैल रही थी। लेखक स्वागत के लिए आंगन के द्वार पर उपस्थित थे।

दर्शन-स्पर्शन हुआ। देर तक हस्तान्दोलन होता रहा, और एक-दूसरे की भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण, मूक भाषा में ही सब कुछ कहा-सुना गया। कुछ क्षण मौन रहने के बाद अपने दुभाषिए के माध्यम से मैंने कहा—"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई; आपका 'पक्का कदम' मैंने पढ़ा है, बहुत अच्छा लगा।"

"मुझे हिन्दुस्तान के लोगों से मिलकर बड़ी खुशी होती है। हिन्दुस्तान के लोग हमारे दोस्त हैं। आप जानते हैं, दो बार हिन्दुस्तान की यात्रा कर चुका हूं। पिछली बार, १९५९ में साहित्य अकादमी के निमंत्रण पर सुप्रसिद्ध भारतीय तत्वविशारद येवगिनी चेलीशोव के साथ, मैं मद्रास में होने वाली लेखक-परिषद् में शरीक हुआ था।"

कमरे की अलमारियों में बड़े करीने से पुस्तकें सजाकर रक्खी हुई थीं, कलात्मक वस्तुएं—जिनमें हिन्दुस्तान की दस्तकारी की चीजें और हाथी वगैरह हैं—अलमारियों पर सजी हुई थीं, और दिवालें एक-से-एक सुन्दर चित्रों से मंडित थीं।

मैंने पूछा—"भारतीय लेखकों में आपको कौन-सा लेखक सबसे ज्यादा पसन्द है?"

"टैगोर मेरे सर्वप्रिय लेखकों में से है, वैसे मैं मुल्कराज आनन्द, अब्बास और कृष्णचन्दर को भी पढ़ता हूं। यह देखिए मेरी अलमारी में उनकी रचनाएं रक्खी हुई हैं। मेरा विश्वास है कि भारतीय लेखकों का भविष्य उज्ज्वल है। उनकी रचनाओं के अनुवाद शीघ्र ही दुनिया की अन्य भाषाओं में प्रकाशित होंगे। पश्चिमी साहित्य में मुझे क्लासिकल रचनाएं

पसन्द हैं।"

हम लोग बाहर के कमरे में आ गये। यह भी कलात्मक चित्रों और पेंटिंग्स से सज्जित था। मेज़ अंगूर, अनार, सेव और अखरोट आदि खाद्य पदार्थों से भरी थी। चाय का पूरा इन्तजाम था। अंगूर बेहद मीठे! अंगूरों से यहां भांति-भांति की स्वादिष्ट शराब तैयार की जाती है जो सोवियत रूस में ही नहीं, विदेशों में भी नामी है।

केरबावयेफ की उम्र ७२ वर्ष की है; बाल सफेद हो गये हैं। दांत में जड़ा हुआ सोना बोलते हुए चमकता है। इतने ऊंचे और लम्बे डील-डौल के हैं कि देखकर कोई नहीं कह सकता कि इतनी उम्र होगी। कोट-पेंट और टाई में और भी ऊंचे जंचते हैं। बहुत खुश-मिजाज—बात-बात पर मजाक करते हैं। उम्र पूछने पर बोले—"मैं २५ वर्ष का हूं। क्या आपको लगता है कि मेरी उम्र इससे ज्यादा है?"

हमारे मेजबान तुर्कमानिस्तान के बने बेल-बूटे कढ़े हमारे प्यालों में चाय उंड़ेलते जाते और दिलचस्प दास्तान सुनाते जाते।

"खुदा ने पहले औरत को बनाकर बहिश्त में रख दिया। वहां वह अकेली रहा करती थी। उसने खुदा से इल्तजा की कि वह अकेली है, इसलिए उसके मनोरंजन के लिए वह कुछ बना दे। खुदा ने एक बन्दर बना दिया; औरत बन्दर से खेलने लगी। लेकिन इससे उसे सन्तोष न हुआ; वह फिर से खुदा के पास पहुंची। अब की बार खुदा ने एक सांप बना दिया। उससे भी उसे सन्तोष न हुआ। यह देखकर खुदा ने एक शेर बनाकर खड़ा कर

दिया। कुछ दिन बाद औरत शेर से भी तंग आ गयी। वह फिर खुदा के पास पहुंचकर अरदास करने लगी। खुदा ने कहा, "देखो यह आखिरी मौका तुम्हें दिया जाता है, अब मेरे पास और ज्यादा बनाने का सामान नहीं बचा है।" अब की बार ख़ुदा ने आदमी को बना दिया। तब से औरत आदमी को लेकर अपना मनोरंजन किया करती है।"

इसी तरह आदम का एक दास्तान है—"खुदा ने सबसे पहले आदम को बनाया। वह अकेला रहा करता था। उसने खुदा से और कुछ बनाने की दरख्वास्त की जिससे उसे अकेलापन महसूस न हो। खुदा ने कहा, उसके पास जो कुछ था, उसकी सहायता से वह सब कुछ बना चुका है। आखिर में आदम के बहुत कहने-सुनने पर खुदा ने सांप, मेंढ़क आदि का थोड़ा-थोड़ा हिस्सा लेकर औरत को बनाया, और आदम उसके साथ रहने लगा।"

मर्द और औरत का एक और दास्तान उन्होंने सुनाया—

"दो आदमी बैठे हुए गपशप कर रहे थे। उनमें से एक ने कहा—"मैं कितना खुश-किस्मत हूं जो कुंवारा हूं।" इसपर दूसरे आदमी ने जवाब दिया—"इजाजत हो तो एक खबर सुनाऊं!" इजाजत पाकर वह बोला—"देखिए, आपकी औरत चल बसी है।" पहला आदमी, "तो भई, मैं जिन्दा कैसे रह सकूंगा!"

केरबावयेफ ने अपना साहित्यिक जीवन काव्य-सृजन से आरम्भ किया। बाद में वे कहानी और निबन्ध-लेखन की ओर झुके। कविता के माध्यम से उन सब बातों की अभिव्यक्ति

करने में उन्हें कठिनता महसूस हुई जिनमें उनकी दिलचस्पी था, इसलिए उन्होंने गद्य का आश्रय लिया। १६२६ ई० में 'तुर्कमानी साहित्य के पिता' मखदूम कुली के काव्य को सर्व-प्रथम प्रकाशित करने का श्रेय केरवावयेफ को ही है। कुली के वारे में एक नाटक भी उन्होंने लिखा है ।

केरवावयेफ ने अनेक उपन्यासों की रचना की है। 'पक्का कदम' (अतिक) उनके सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में गिना जाता है; यह अभी अधूरा है। उनका दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास है 'नेवित-डाग,। 'नेवित-डाग वालखान की तलहटी में रेगिस्तान में वसा हुआ एक औद्योगिक केन्द्र है जहां तेल के कारखानों में मजदूर काम करते हैं। केरवावयेफ ने अपना उक्त उपन्यास लिखने के लिए अपने जीवन के कीमती तीन वर्ष इन मजदूरों के साथ व्यतीत किये। इस उपन्यास में एक तेल-मजदूर के जीवन-संघर्ष का चित्र प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि दुनिया की ३० भाषाओं में इसके अनुवाद हुए। अव तक इसकी कई लाख प्रतियां छप चुकी हैं। सोवियत समाजवादी तुर्कमानिस्तान प्रजातंत्र के सर्वप्रथम प्रधान मंत्री के जीवन पर भी केरवावयेफ ने एक ऐतिहासिक उपन्यास लिखा है ।

इसके अतिरिक्त, केरवावयेफ ने अनेक कविताएँ, कहानियां और नाटकों की भी रचना की जिससे उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी। उनकी समस्त रचनाओं का संग्रह १० भागों में प्रकाशित करने की योजना शीघ्र ही कार्यान्वित होने वाली है।

तुर्कमानिस्तान का तीन-चौथाई हिस्सा रेगिस्तान से घिरा हुआ है। रेगिस्तान के निवासियों को जल कितना प्यारा होता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि काराकुम नहर जब गांवों में आयी तो किसान लोग आनन्द से नाच उठे और गाजे-बाजे के साथ उन्होंने उसका स्वागत किया। तुर्कमानिस्तान का साहित्यकार भी जनता की खुशी में शरीक हुआ। अनेक कवियों ने (उदाहरण के लिए स्थानीय भारत-सोवियत संघ के अध्यक्ष अन्ना कोवुसोव) काराकुम नहर पर स्फूर्तिदायक काव्य लिखे। केरबावयेफ ने तो एक उपन्यास की ही योजना बना डाली।

प्रश्न करने पर आपने उत्तर दिया—"देखिए, नहर की खुदाई करने वाले श्रमजीवियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। रेगिस्तान में गर्मी के दिनों में रेत के अंधड़ चला करते हैं जिससे उन्हें अत्यन्त कष्ट होता है—काम करना असम्भव हो जाता है। पीने के लिए दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है। सर्दी के दिनों में तापमान हिमविन्दु से ५० डिग्री कम हो जाता है।

"अपने उपन्यास के नायक-नायिका ढूंढ़ने में आपको बहुत कशमकश करनी पड़ी होगी?"

"मेरे उपन्यास का नायक १७ वर्ष का एक ग्रामीण युवक है, जिसका बाप भेड़ें चराया करता था। यह युवक इस नहर पर आकर खुदाई का काम करने लगता है। यहाँ एक युवती से उसका प्यार हो जाता है। उधर घर पर युवक की मां ने कोई लड़की देख रक्खी है जिसके साथ अपने लाड़ले का वह

व्याह रचाना चाहती है। नहर का काम चलता रहता है। नहर वनते-वनते युवक के गाँव तक पहुंच जाती है। उस समय वह अपनी महबूबा को साथ लेकर अपनी मां से आशीर्वाद लेने जाता है, और दोनों परिणय के सूत्र में बंध जाते हैं।"

मैंने कहा, आप तो वहुत रसिक जान पड़ते हैं।

केरवावयेफ को विदेश-भ्रमण का बहुत शौक है। उन्होंने हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, अफ्रीका, अरबिस्तान, पूर्वी जर्मनी आदि देशों का भ्रमण किया है। कहने लगे—"जहां मैं जाता हूं, वहां के सम्बन्ध में कुछ-न-कुछ जरूर लिख डालता हूं।"

"क्या हिन्दुस्तान के बारे में भी कुछ लिखा है?"

"हां, इसका नाम है 'एक चमत्कारिक देश'। यह मास्को की एक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। उसकी कुछ प्रतियां तुर्कमान भाषा में मेरे पास हैं, यदि आप चाहें तो आपकी नजर कर सकता हूं।"

लेखकों के सम्बन्ध में कहने लगे—"कितने अफसोस की बात है कि हिन्दुस्तान में लेखकों की कोई अपनी संस्था नहीं है। इससे प्राइवेट प्रकाशन जो चाहते हैं, छापते हैं और लेखकों को थोड़ा-बहुत पैसा देकर टरका देते हैं। भारत की भांति ईरान में भी छपने वाली किताबों की संख्या बहुत कम है। देखिए, हमारे यहां के लेखक आराम की जिन्दगी बसर करते हैं। संघ के पास फण्ड की व्यवस्था रहती है। जिससे कि जरूरत पड़ने पर लेखकों की आर्थिक सहायता की जा सके। प्रकाशन हमारे यहां सरकार के हाथों में है और वह प्रत्येक वर्ष नियोजित रूप

से किया जाता है।"

मुल्ला नेपेस तुर्कमानिस्तान के एक दूसरे लोकप्रिय कवि हो गये हैं जिन्होंने उच्च कोटि की प्रेम-कविताएँ लिखी हैं। 'जोहरा और ताहिर' (लैला और मजनूं की तर्ज पर) नाम की उनकी कविता बहुत प्रसिद्ध है। बाजार अमानोफ ने इस कविता के आधार पर एक नाटक लिखा है; इसके खेल का इश्तहार अश्काबाद के एक नाट्यगृह में लगा था। केरबावयेफ ने मुल्ला नेपेस का गंभीर अध्ययन किया है। उनके अनेक मनोरंजक दास्तान भी उन्हें याद हैं।

"कहते हैं कि एक बार, हिन्दुस्तान का कोई शिकारी जब शिकार के लिए जा रहा था तो उसे एक हाथी के पैरों के चिन्ह दिखायी दिये। उन्हें देखकर उसने शिकार करना छोड़ दिया और वह उन चिह्नों के पीछे-पीछे चला।"

दरअसल, हाथी हिन्दुस्तान की खासियत मानी जाती है, इसलिए कहावत है कि यदि कोई शिकारी हाथी के पद-चिह्न देख ले, या उसकी आवाज सुन ले या उसके बाल कहीं दिखाई दे जायें, तो वह अपना शिकार करना छोड़कर हाथी के शिकार के लिए लालायित हो उठेगा। इसीलिए हाथी के बारे में अनेक किस्से-कहानियां प्रचलित हैं। लेकिन आज के जमाने में तो हाथी पहले जैसा दुर्लभ नहीं रहा—चिड़ियाघरों में उसे देखा जा सकता है।

लेखक संघ के सम्बन्ध में प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा——

"इस संघ के सदस्यों की संख्या ८० है वैसे हजारों की

तादाद में नौजवान लेखक हमारे यहां हैं, लेकिन कुछ खास लेखक ही इसके सदस्य हो सकते हैं। नौजवान लेखकों को ट्रेनिंग देने की हम लोगों के ऊपर बड़ी जिम्मेवारी है।"

अपने सम्बन्ध में बोले—"मुझे कोई निश्चित कार्यक्रम बिल्कुल पसन्द नहीं। किसी काम में अपनी औरत की दस्तंदाजी तक मुझे पसन्द नहीं। खुश-किस्मती से आजकल वे आराम के लिए किसी सैनिटोरियम में गयी हैं, इसलिए मैं आजाद हूं। लिखने-पढ़ने की छूट मुझे चाहिए, लेकिन आजकल मेरा अधिकांश समय लेखक संघ के पत्र-व्यवहार आदि में ही चला जाता है, इसलिए स्वतः लेखन का कार्य सन्तोषजनक रूप से नहीं चल पाता। घूमने-फिरने का मुझे बड़ा शौक है। वह देखिए, मेरी जीप गाड़ी खड़ी है।"

भाषा-विज्ञान के सम्बन्ध में बात चली तो ज्ञात हुआ कि 'आसमान', 'दुनिया', 'तबियत', 'शुक्रिया', 'जान' 'चपाती', 'तैयार शराब', 'प्यालारूहानी', 'आदम', 'मेज़', 'चमचा', 'कारखाना', 'इकबाल', 'मदरसा', 'अजीब', 'किताबखाना', 'मसजिद', 'नमाज', 'रोजा', 'कुरान', 'दस्तरखान', 'काजी', 'सलामवालेकुम', 'दोस्त', 'कदम', 'शिराजी बुर्च' (मिर्च) आदि कितने ही ऐसे शब्द हैं जो तुर्कमान और हिन्दी भाषा में एक-जैसे हैं। यहां गजल (सौन्दर्य), सोना, आइना आदि कितने ही नाम लड़कियों के नाम हैं। हमारे मेजबान को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मैं उनकी भाषा के अनेक शब्दों से परिचित हूं। लेकिन मैंने बताया कि वस्तुतः ये शब्द फारसी और अरबी से हम लोगों की भाषा में आ गये हैं, इनका जानना

कोई बड़ी बात नहीं। कहने लगे कि आप अपने देश से लड़कियों को हमारी जबान सीखने के लिए भेजिए, हम हिन्दुस्तानी जबान सीखने के लिए लड़कों को भेजेंगे।

शाम के समय स्टेट फार्म के डाइरेक्टर की ओर से चाय के लिए बुलाया गया था। सरकारी कृषि विभाग के मंत्री भी तशरीफ लाये थे। रंग-ढंग और बोलचाल से कोई भी नहीं कह सकता था कि वे मंत्री हैं। वेर्दी केरबावयेफ यहां भी उपस्थित थे। हमेशा की तरह यहां भी मेज़ तरबूज, खरबूज़ा, अंगूर, सेब, अनार, आबे अंगूर, आबे-अनार तथा तुर्कमानी चाय आदि विविध खाद्य पदार्थों से लदी थी। केरवावयेफ की निगाह मेरे प्याले और तश्तरी की तरफ लगी थी। जहां कोई पेय या खाद्य पदार्थ समाप्त हुआ, वे फौरन ही मेरे प्याले में उड़ेल देते, या गुलाबी तरबूज की फांक से तश्तरी भर देते। फिर बड़े प्रेम से वह—'अजी, यह शराब नहीं है जिसे हमारे हिन्दुस्तानी दोस्त पसन्द नहीं करते, यह तो आबे-अंगूर है, जरा चखकर देखिए, कितना स्वादिष्ट है!'

अश्काबाद की यह स्मरणीय चायपार्टी थी। गप होती जा रही है—स्वादिष्ट फलों और उनके मधुर रस का आस्वादन किया जा रहा है, चायपान हो रहा है। हिन्दुस्तानी और तुर्कमानी जनता की उन्नति और विश्वशान्ति की कामना के हेतु प्याले से प्याले टकरा रहे हैं, और हमारे स्वनामधन्य लेखक दास्तान पर दास्तान सुनाते जा रहे हैं, बीच-बीच में हंसी के फुव्वारे छूट रहे हैं, और कृषिमंत्री भी इस हंसी-मज़ाक में हमारे साथ शरीक हैं!

यह मस्क्वा नदी के किनारे बसा हुआ है और सोवियत संघ का सबसे विशाल और उन्नतकाय होटल है। कीव रेलवे स्टेशन के यह नजदीक है। होटल में १८ मंजिलें हैं जिनमें १ हजार से अधिक रहने के आलीशान कमरे बने हुए हैं। प्रत्येक कमरे में स्नानागार है तथा रेडियो और टेलीफोन लगा हुआ है; कुछ में टेलीविज़न भी है। यदि किसी बात की जानकारी हासिल करनी है तो सर्विस ब्यूरो में टेलीफोन करके पूछ सकते हैं। यदि कोई रेल,जहाज़ या हवाई-जहाज़ के पेशगी टिकट खरीदना चाहे तो यहां उसकी व्यवस्था है। नाटक या सिनेमा के टिकट भी खरीदे जा सकते हैं। किसी को घूमने-फिरने या नगर के दर्शनीय स्थानों को देखने के लिए मार्ग-दर्शक या दुभाषिए की आवश्यकता हो तो उसकी भी व्यवस्था है। विदेशी मुद्रा को स्थानीय मुद्रा में बदलने के लिए बैंक में जाने की ज़रूरत नहीं। यहां डाकखाने भी हैं।

महिलाओं द्वारा सारे कार्य का संचालन किया जा रहा है। अपने-अपने डेस्क पर टेलीफोन रक्खे, वे अपने कार्य में व्यस्त हैं। कोई यात्रियों का चैक भुना रही है, कोई मोटर गाड़ी का आर्डर दे रही है, कोई थियेटर के लिए टिकट खरीद कर दे रही है, और कोई ट्रंक-काल के लिए टेलीफोन जोड़ने के लिए प्रयत्नशील है। होटल में खूब चहल-पहल है। सात नवम्बर को होने वाले अक्तूबर क्रांति महोत्सव में शरीक होने के लिए विदेशों से यात्री आये हुए हैं जिनसे होटल भर गया है। कॉफी पीने वालों की लाइन लगी है, मशीन में दो मिनिट में कॉफी बन कर तैयार हो जाती है। फलों का रस

भी मशीन से ही निकाला जा रहा है।

लेनिन हिल्स पर अवस्थित मास्को विश्वविद्यालय सोवियत संघ का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। मिखाइल लोमोनोसोव एक किसान का बेटा था, जो आगे चलकर बहुत बड़ा वैज्ञानिक बना। उसी के सत्प्रयत्नों से इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई और यह विश्वविद्यालय मिखाइल लोमोनोसोव विश्व-विद्यालय नाम से प्रख्यात हो गया।

विश्वविद्यालय की ३२ मंज़िलों की इमारत बड़ी शानदार है। नीचे से लेकर ऊपर तक यह एक-चौथाई किलोमीटर लम्बी होगी; और यदि इसके २५ हज़ार कमरों को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया जाय तो उनकी लम्बाई १५० किलोमीटर तक पहुँचेगी। यहां की लाइब्रेरी में लगभग ५० लाख पुस्तकें हैं।

विश्वविद्यालय में १३ फैकल्टी, २१५ 'चेयर', ४ शोध-संस्थान, २५० प्रयोगशालाएं, १६३ अध्ययन-कक्ष, ८ शोध-केंद्र, ३ संग्रहालय, बोटैनिकल गार्डन और ४ वेधशालाएं हैं। विश्वविद्यालय के ४,००० अध्यापक ३०,००० विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं, जिनमें १०,००० विद्यार्थी संध्या समय लगने वाली कक्षाओं में या पत्र-व्यवहार द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं। सोवियत संघ की ६२ विभिन्न जातियों के विद्यार्थियों को यहां मुफ्त शिक्षा दी जाती है।

मास्को का मैत्री विश्वविद्यालय जिसे लुमुम्बा विश्व-विद्यालय भी कहते हैं, अपने ढंग की एक अनोखी शैक्षणिक संस्था है। कांगो की जनता के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य-आन्दोलन

पांडुलिपियों का विशेष अध्ययन किया है।

मास्को की साइन्स अकादमी के प्राच्य-विद्या विभाग में भी भारतीय साहित्य और इतिहास आदि पर कार्य हो रहा है। डाक्टर व्लादिमीर वाल्वुशोविच उक्त विभाग के अन्तर्गत भारतीय विभाग के अध्यक्ष हैं। गत तीस वर्षों से आप भारतीय इतिहास का अध्ययन करने में संलग्न हैं। १०० से अधिक पुस्तकें आप लिख चुके हैं। प्रोफेसर द्याकोव के साथ मिलकर आपने 'भारत का आधुनिक इतिहास' नामक पुस्तक लिखी है। येवगिनी चेलीशोव भारतीय विभाग में भाषा और साहित्य के अध्यक्ष हैं। हिन्दी, उर्दू, बंगाली, तमिल, तेलुगु, मलयालम और पंजाबी भाषाओं का आपका अच्छा अध्ययन है। आपने अनेक हिन्दी कवियों की रचनाओं का रूसी में अनुवाद किया है तथा हिन्दी-रूसी और उर्दू-रूसी शब्दकोश का सम्पादन किया है। भारत की अनेक बार आप यात्रा कर चुके हैं।

इनके सिवाय, और भी अनेक रूसी विद्वान हैं जो भारतीय प्राच्य-विद्या से संबंधित अनेक विषयों पर कार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, सिरकिन उपनिषदों पर कार्य कर रहे हैं; उनका वृहदारण्यक का अनुवाद प्रकाशित हो चुका है, छांदोग्य उपनिषद् छपने वाली है। श्रीमती एलिजारेन्कोवा ऋग्वेद का अनुवाद कर रही हैं। आप प्राच्य-विद्या विभाग में पाली और हिन्दी की अध्यापिका हैं। कुमारी वर्तोग्रदोवाने प्राकृत भाषाओं का विशेष अध्ययन किया है; पाली का भी आपका अभ्यास है। कुमारी वोलकोवा का संस्कृत बौद्ध-धर्म

का अच्छा अध्ययन है। आपका कुणालावदान प्रकाशित हो चुका है। जातक-माला का भी आपने रूसी में अनुवाद किया है। यह जानकर तो मैं आश्चर्यचकित रह गया कि अतिख-नोवा ध्वन्यालोक का रूसी में अनुवाद कर रही हैं।

७ नवम्बर के समारोह की तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। आज का दिन सोवियत रूस में महान् अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का दिन है जिसका वीरतापूर्ण नेतृत्व व्लादीमिर इलियच लेनिन ने किया था। आज के दिन मानव-जाति के इतिहास में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना होने सेनये युग का समारम्भ हुआ समझना चाहिए।

शाम के समय क्रेमलिन के कांग्रेस-प्रासाद में सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी की ओर से बृहत्सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विदेशों से आये हुए प्रमुख अतिथि भी आमंत्रित थे। कांग्रेस-प्रासाद का यह दिव्य भवन इस कलात्मक ढंग से निर्मित किया गया है कि देखते ही बनता है। बर्फ के सदृश श्वेत-उज्ज्वल यह भवन शीशे और कंक्रीट से बना है। क्रेमलिन की ऊंची दीवारों से भी ऊंचा उठता हुआ यह प्रासाद अपने गौरव का प्रदर्शन करता दिखायी देता है। ८०० से अधिक यहां कक्ष हैं। भवन में ६ हजार दर्शकों के बैठने की जगह बनी हुई है। हॉल में अढ़ाई हजार लोग एक साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं।

लेनिन के आदेशानुसार सोवियत सत्ता प्राप्त करने के बाद से ही क्रेमलिन के जीर्णोद्वार का कार्य आरम्भ हो गया था।१९४० से १९५० तक यहां के गिरजाघर, प्रासाद तथा

वास्तुकला के अन्य सुन्दर स्मारकों का जीर्णोद्धार किया गया तथा व्लागोवेश्चेन्स्की गिरजे की गुम्बद पर फिर से सोने का मुलम्मा चढ़ाया गया। १९६१ में कांग्रेस-प्रासाद का भव्य भवन निर्मित किया गया जो १९ वीं शताब्दी के प्राचीन भवनों के स्थान पर बनाया गया था।

ठीक समय पर भाषण शुरू हुआ। भाषण रूसी में था, लेकिन अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश, ज़ेक और रोमी आदि दुनिया की २९ भाषाओं में उनका अनुवाद होता जाता था। प्रत्येक कुर्सी के पीछे एक छोटा लाउड-स्पीकर बंधा हुआ था। विभिन्न भाषाभाषी दर्शकों ने अपने कानों में ध्वनियंत्र लगा रक्खा था और भाषण का अनुवाद उन्हें साफ सुनायी पड़ रहा था। भाषणों के बाद आध-घन्टे का मध्यान्तर हुआ। शर्बत, आइस्क्रीम, सिगरेट वगैरह की दुकानें लगी थीं। लेकिन कहीं शोरगुल का नाम नहीं; लोग एक-के-बाद-एक नम्बर से आते चले जाते थे।

मध्यान्तर के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ हुआ। यूक्रेनिया का नृत्य दिखाया गया। यूक्रेनिया सोवियत संघ के १५ जनतंत्रों में से है। यूक्रेनिया का इतिहास पुराना है और इसकी संस्कृति काफी समृद्ध है। कीव यूक्रेनिया की राजधानी है। सोवियत संघ का वह सबसे सुन्दर शहर नदी के किनारे अवस्थित है।

रूसी वैले (नृत्य) दुनिया-भर में प्रसिद्ध है। इसका शिक्षण देते समय शुरू से ही सुगमतापूर्वक अपनी बांहों, टांगों और सम्पूर्ण शरीर को मोड़ने-तोड़ने और उससे काम लेने की

शिक्षा दी जाती है। बैले में इस बात का विशेष ध्यान रक्खा है कि नर्तक या नर्तिका अपनी हर मुद्रा को भावपूर्ण, सार्थक, भावनायुक्त तथा पूर्ण रूप से संगीतमय बना सके। आधुनिक बैले में शास्त्रीय बैले को गहन विचारों से युक्त नृत्य द्वारा अभिव्यक्ति की कला के रूप में स्वीकृत किया गया है, जिससे इसकी तकनीक अधिक जटिल और पूर्ण हो गयी है। यूक्रेनिया के इस नृत्य में युवक और युवतियों के हाव-भाव और उनकी मुद्रा देखते ही बनती है।

नृत्य के बाद कीव, ओदेसा, स्टालिनग्राड़ आदि नगरों के एक-से-एक प्रभावशाली चित्र चित्रपट पर दिखाये गए। स्थापत्य-कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण कीव की एक-से-एक सुंदर तथा इमारतें, ओदेसा के समुद्रतट के मनोरम दृश्य और दुनिया में सर्वश्रेष्ठ माना जाने वाला ओदेसा ऑपेराहाउस के सरस चित्र देखने में आये। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय नाज़ियों के बर्बर आक्रमण को नेस्तनाबूद करने के लिए स्टालिनग्राड की जनता ने जिस साहसपूर्ण देशभक्ति का परिचय दिया वह विश्व के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों में अंकित रहेगी। कार्यक्रम चार घन्टे तक चलता रहा।

मास्को की जनता क्रांति-दिवस की खुशी में अपने-आप को भूल गयी है। होटलों में नाच-गान हो रहा है, पेय द्रव्यों का पान किया जा रहा है, प्याले से प्याले टकराये जा रहे हैं। परस्पर शुभ कामनाएँ व्यक्त की जा रही हैं।

तुम्हारा,
जगदीशचन्द्र

२७

यूक्रेन होटल,
मास्को
७ नवम्बर, १९६५

प्रिय कल्पना,

आज ७ नवम्बर का क्रांति-दिवस है जिसके समारोह में सम्मिलित होने के लिए हम लोगों को आमंत्रित किया गया था। सबके मन में बड़ी उत्सुकता है।

जल्दी ही हम लोगों ने नाश्ता कर लिया और रवाना हो गये लाल मैदान की परेड में शामिल होने के लिए। बर्फ की भीनी-भीनी फुहार पड़ रही थी जिससे सर्द हवा में और भी सर्दी आ गयी थी। फिर भी लोगों के हुजूम के हुजूम चले जा रहे थे। कुछ लोग बसों और टैक्सियों में थे। शहर का आवागमन बन्द हो गया था। यूनिफार्म पहने पुलिस तैनात थी। पासशुदा लोगों को ही लाल मैदान में प्रवेश करने की इजाजत थी। पुलिस पहले विदेशियों का पासपोर्ट देखती और फिर पासपोर्ट के फोटो से उनकी सूरत का मिलान करती।

हम लोगों का इन्तजाम बस से किया गया था। लगभग नौ बजे लाल मैदान में दाखिल हो, परेड देखने के लिए हम अपने मंच पर जा खड़े हुए। फोटो लेने वालों की धूम मची थी। रूसी युवतियां काफी, चाकलेट और फल बेच रही थीं। कचरा फेंकने की टोकरियां रक्खी हुई थीं।

तुर्कमानिस्तान का 'प्याला' नृत्य

लाल वस्त्रों पर रूसी भाषा में लिखे हुए नारे दिखाई पड़ रहे हैं—कम्युनिस्ट पार्टी की विजय हो। अक्तूबर क्रान्ति के अग्रदूत लेनिन के विशालकाय चित्र लगे हुए हैं। सामने के मकानों की छतों पर टेलीविजन के कैमरे लगा दिये गये हैं।

लोगों की नजर क्रेमलिन की स्पास्की मीनार की घड़ी की ओर लगी है। दस का घंटा बजते ही बैंड बजना शुरू हो गया। बायीं ओर के एक भवन पर सोवियत नेता दिखायी दिये। गायक, नाविक आदि यूनिफार्म पहने एक पंक्ति में निश्चल भाव से खड़े हैं। सुरक्षा मंत्री मार्शल मैलिनोव्स्की अपनी मोटर गाड़ी पर कमाण्डर के साथ खड़े हुए हैं उन्हें सलामी दी गई। सर्वप्रथम परेड के मैदान में होकर उन्हीं की मोटर गुजरी।

सलामी लेने के बाद मैलिनोव्स्की भवन के ऊपर खड़े हुए सोवियत नेताओं के साथ जाकर खड़े हो गये। अपने संक्षिप्त भाषण में उन्होंने अमरीकी सेनाओं द्वारा उत्तर वियतनाम पर किये जाने वाले आक्रमण की निन्दा करते हुए, रूसी सेना की शक्ति में अपना विश्वास प्रकट किया। उन्होंने कहा कि यदि कोई देश सोवियत संघ पर आक्रमण करने का दुस्साहस करेगा तो रूसी सेना इस आक्रमण की धज्जियाँ उड़ाकर सारी शक्ति से अपनी मातृभूमि की रक्षा करेगी, तथा अन्य साम्यवादी देशों की सहायतापूर्वक सारी साम्यवादो दुनिया की रक्षा के लिए रूस की सेना कटिबद्ध है।

इस अवसर पर ब्रेजनेव, मिकोयान, और सोवियत संघ की सेना के अन्य उच्च अधिकारी तथा क्यूबा के सुरक्षामंत्री

मेजर राल कैस्ट्रो भी उपस्थित थे।

अक्तूबर क्रान्ति की ४८ वीं जन्मगांठ पर होने वाली सैनिक परेड में विशालकाय टैंकों और राकेटों (अग्निबाणों) का प्रदर्शन किया गया है। एक राकेट इतना भीमकाय है कि उसे देखने-मात्र से भय लगता है। यह इतना शक्तिशाली है कि ग्रहपथ के किसी भी हिस्से से किसी भी लक्ष्य को बेध सकता है। टैंक अत्यन्त वेगवान, चलाने में आसान और अभेद फौलाद के बने हुए हैं जो ऐसे शक्तिशाली अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित हैं जो कि शत्रु के किसी भी टैंक को नष्ट कर सकने में समर्थ हैं।

जुलूस में भाग लेने वाले एक-के-बाद-एक, अन्तहीन पंक्तियों में चले आ रहे हैं। वे रंग-बिरंगे भांति-भांति की पोशाक पहने हुए हैं, लाल झण्डे हाथ में लिए हुए हैं, और पुष्प-गुच्छ, अपने नेताओं को भेंटकर रहे हैं। लाल मैदान आनन्द और उत्साह से गूंज उठा है।

सबसे पहले जुलूस में अन्तरीक्ष-नाविक, उनके बाद खिलाड़ी बड़े गर्व के साथ चले जा रहे हैं। तत्पश्चात् श्रम-जीवी, कृषक, वैज्ञानिक, विद्यार्थी, अध्यापक, लेखक और महिलाएं--सब कदम-से-कदम मिलाकर चल रहे हैं। पोस्टरों पर उत्पादन के आंकड़े लिखे हुए हैं। १९८० में सोवियत संघ का उत्पादन बढ़कर कहां से कहां पहुंच जायेगा, इसका हिसाब किताब दिया गया है।

अतिथियों के लिए बनाये हुए मंच हजारों मजदूरों, सामूहिक फार्म के किसानों, प्रमुख वैज्ञानिकों और लेखकों, तथा

विदेशों से आमंत्रित शिष्ट मंडलों के सदस्यों से भरे हैं।

वीच-बीच में सूर्यदेव अपनी आभा दिखा देते हैं। और फिर अदृश्य हो जाते हैं। बर्फीली हवा धीमी हो जाती है, और क्षण-भर के वाद तेजी से चलने लगती है। वर्फ की फुहारें भी कभी धीमी और कभी तेज हो जाती हैं। जान पड़ता है, परेड देखकर प्रकृति भी फूली नहीं समा रही है, और अपना आह्लाद व्यक्त करने के लिए वह अपना बहुरंगी रूप दिखाती जाती है।

सोवियत रूस पर नाज़ी आक्रमण के समय सोवियत जनता को अपार कष्टों का सामना करना पड़ा। उस समय, जब नाज़ी सैनिकों ने मास्को के चारों ओर घेरा डाल दिया था, तो लाल मैदान से कूच करने वाली सोवियत सेना सीधी हिटलर की सेना से जा भिड़ी थी। १९४१ का वह ऐतिहासिक वर्ष सोवियत इतिहास में चिर-स्मरणीय रहेगा।

आज रूस-भर में जश्न मनाया जा रहा है। भोजनालयों में बड़ी धूमधाम है। तेज प्रकाश फेंकने वाले बिजली के लट्टू लगा दिये गये हैं। नर-नारियां नाच-गान में अपने को भूल गये हैं। होटलों में भोजन परोसने वाली महिलाओं के चेहरों पर विशेष दीप्ति दिखायी दे रही है।

मास्को की सड़कें बिजली के दैदीप्यमान प्रकाश से जग-मगा उठी हैं। क्रेमलिन के गिरजाघर और मास्को विश्व-विद्यालय की उन्नत अट्टालिकाएं चमक उठी हैं। आसपास की इमारतें बिजली के रंग-बिरंगे लट्टुओं की पंक्तियों से शोभित हैं। बिजली के लट्टुओं की वन्दनवार कितनी सुन्दर

लग रही है ! मकानों पर लाल झण्डे फहरा रहे हैं, लटकते हुए लाल वस्त्रों पर स्फूर्तिदायक नारे लिखे हुए हैं। मास्को की जनता उन्मुक्त भाव से आनन्द-मंगल मना रही है। आज के दिन रूस की अगणित जनता ने सदियों के शोषण से मुक्ति जो पायी थी !

बैले रूस की विशेषता है। इसका मूल लोक-नृत्यों में देखा जा सकता है यद्यपि संसार-भर में लोक-नृत्य और लोक-उत्सवों की भरमार रही है, लेकिन इन नृत्यों और उत्सवों से कला का चरम विकास सोवियत संघ में ही देखा जाता है।

१८ वीं सदी के प्रारम्भ में सोवियत रूस में बेल का प्रदर्शन किया गया। उसके बाद १७८० में पेत्रोफका थियेटर (बलशोई थियेटर का पुराना नाम) की नींव रक्खी गयी। इस थियेटर में २१ नृत्यों का प्रदर्शन किया गया। फिर सेंट पीटर्सबर्ग राजकीय थियेटर की स्थापना हुई। तत्पश्चात् १८२५ में सुप्रसिद्ध बलशोई थियेटर की नींव रक्खी गयी। अपने कलाकारों द्वारा प्रदर्शित किये जानेवाले नृत्यों के कारण यह थियेटर शीघ्र ही दुनिया-भर में नामी हो गया। कालान्तर में सोवियत संघ के बैले-प्रशिक्षण का भी यह केन्द्र बना। येकातेरीना सोकोव्स्काया नामक रूस की प्रथम बैले-नर्तकी के नृत्यों के कारण इसे ख्याति मिली। १९ वीं सदी के पांचवें दशक में रूसी बैले के कलाकारों ने बर्लिन, पेरिस, वियना आदि पश्चिमी देशों का भ्रमण किया जिसमें अनेक नर्तकियां भी शामिल थीं।

कुछ समय बाद रूस के महान् संगीतज्ञ चायकोव्स्की के

देता है। खोज बड़ी नजाकत के साथ कलात्मक ढंग से की जाती है। तत्पश्चात् सर्वत्र आनन्द की लहर छा जाती है। वर-अन्वेषक, दूल्हा और दुल्हिन तथा युवक-युवतियों के चमत्कारपूर्ण नृत्य का प्रदर्शन होता है। दर्शक आनन्दविभोर होकर करतलध्वनि करने लगते हैं; रंगशाला प्रतिध्वनित हो उठती है।

नर्तक और नर्तिकाएं अत्यन्त प्रेममय भाषा में सुमधुर वार्तालाप करती हैं जिससे उनके चेहरे प्रफुल्लित हो उठते हैं। अनेक प्रकार के नृत्यों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली विविध मुद्राओं और भाव-भंगिमाओं के माध्यम से वे प्रेम की ऐसी सरस अभिव्यक्ति करते हैं कि दर्शकगण मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

रंगशालाओं की इमारतें बड़ी शानदार हैं। हाल के बाहर आदमकद दर्पण लगे हुए हैं। स्त्री-पुरुष (विशेषकर स्त्रियां) अपनी केश-सज्जा को ठीक-ठाक कर बड़ी नज़ाकत के साथ अन्दर प्रवेश करते हैं। दम्पति हाथ में हाथ डाले, कुछ फुस-फुसाते हुए, शनैः शनैः चल रहे हैं। शोरगुल या आपाधापी का नाम नहीं। अनेक दर्शक भवन के बाहर प्रदर्शित कलात्मक चित्रशाला का निरीक्षण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

'लेनिन अक्तूबर में' नामक आपेरा भी बड़ा प्रभावशाली लगा। रूस की बोलशेविक पार्टी सशस्त्र क्रान्ति की तैयारी कर रही है। लेकिन सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति का मार्गदर्शन करने के लिए फिनलैंड से पेट्रोग्राड (आजकल का लेनिनग्राड) पहुँचे हैं। जार की सरकार ने लेनिन को गिरफ्तार करने के लिए अपने एजेंट छोड़ रक्खे हैं। केन्द्रीय कमेटी का एक कार्यकर्ता

लेनिन को इस बात की खबर कर देता है और उसे कहीं छिपा देता है। इस समय लेनिन पार्टी के विश्वस्त साथियों के साथ मिलकर सशस्त्र क्रान्ति की योजना बनाते हैं। वे कारखाने के श्रमजीवियों, नाविकों और सैनिकों से क्रान्ति की अपील करते हैं। क्रान्ति के सफल होने पर पेट्रोग्राड पर सर्वहारा-वर्ग का अधिकार हो जाता है। यह सब इस आपेरा में बड़े कलात्मक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

मास्को की "सोवियत संघ की आर्थिक उपलब्धियों की प्रदर्शनी" बहुत प्रभावोत्पादक लगी। यह प्रदर्शनी बारह महीने लगी रहती है। देश की आर्थिक व्यवस्था के हर पहलू के चित्र प्रदर्शित किये गये हैं। कुल मिलाकर प्रदर्शिनी के ७५ बड़े-बड़े भवन हैं जिन्हें देखने के लिए हजारों की संख्या में स्त्री, पुरुष और बाल-बच्चों का तांता लगा रहता है। अक्तूबर क्रान्ति के पश्चात् पिछले चवालीस वर्षों में सोवियत संघ ने जो ज्ञान-विज्ञान, टैक्नोलाजी और कला के क्षेत्र में उन्नति की है, उसे इतने प्रभावोत्पादक ढंग से यहां प्रस्तुत किया गया है कि आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

समयाभाव के कारण केवल दो-चार विभाग देखकर ही हमें सन्तोष करना पड़ा जैसे, कास्मिक हाल (जागतिक-भवन), आणविक शक्ति हाल और रसायनशास्त्र हाल। विषयवार नक्शे बने हुए हैं; सब जगह आंकड़े दिये हुए हैं। बिजली का बटन दबाने से नक्शा लाल-पीली रोशनी से जगमगा उठता है, और मार्गदर्शक छड़ी की सहायता से विषय को समझाता जाता है। एक स्थान पर चित्रों और नक्शों की

एक दिन बिना दुभाषिए के ही मैं टैक्सी करके बल्गेरिया के दूतावास में पहुंच गया। दूतावास का पता मैंने रूसी भाषा में याद कर लिया था। लेकिन दूतावास के दफ्तर में पहुंचा तो पता लगा कि दस्तर खुलने में अभी देर है। खैर, वहां काम करने वाली एक लड़की ने मुझे ऊपर ले जाकर बैठा दिया। बैठे-बैठे ११ बज गये। यहां भी वही भाषा की परेशानी। मैं बल्गेरियन भाषा से अनभिज्ञ था और रूसी का ज्ञान अत्यन्त अल्प था। अंग्रेज़ी जानता था, लेकिन अंग्रेज़ी जाननेवाला वल्गेरिया के दूतावास में कोई नजर नहीं आ रहा था।

पता लगा कि प्रथम सचिव योतोफ अंग्रेजी जानते हैं। मैंने उनसे अपनी परेशानी बयान की और वल्गेरिया के वीसा के सम्बन्ध में वातचीत की।

दूसरी टैक्सी खोजने की दिक्कत से बचने के लिए मैंने अपनी पहली टैक्सी रोक रक्खी थी। योतोफ ने बताया कि यहां टैक्सी रोकने की जरूरत नहीं, क्योंकि टेलीफोन करके जब चाहें टैक्सी बुला सकते हैं। उनके कहने पर मैंने टैक्सी का बिल चुकाकर उसे छोड़ दी।

आ बहमनी सुल्तान मुहम्मद शाह तृतीय (१४६२-८३) के राज्य में छह वर्ष रहा। उसने अपनी 'तीन समुद्रों के उस पार की यात्रा' नामक पुस्तक में भारत की तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का चित्र प्रस्तुत किया है।

तत्पश्चात् १८ वीं शताब्दी में रूसी संगीतज्ञ गेरासिम लेबदेव ने भारत की यात्रा की और भारत में १२ वर्ष रहकर भारतीय जन-जीवन को समझने के लिए बंगाली, हिन्दुस्तानी और संस्कृत का अध्ययन किया। १८०२ के आसपास आपने सेंट पीटर्सबर्ग में एक छापाखाना खोला जिसमें संस्कृत के टाइप भी थे। बंगाल में आधुनिक बंगाली थियेटर का संगठन करनेवालों में लेबदेव का नाम सदा स्मरण किया जायेगा।

१२ वीं शताब्दी में भारत और रूस को एक-दूसरे के निकट लानेवालों में मिनेयेव का नाम उल्लेखनीय है। मिनेयेव ने अनेक बार भारत की यात्रा की, तथा संस्कृत, प्राकृत और पालि के माध्यम से भारतीय इतिहास और संस्कृति का गहरा अध्ययन किया। लेनिनग्राड में प्राच्यविद्या संस्थान की स्थापना करने का श्रेय इसी विद्वान् को है। इसी संस्थान ने ओल्डनवर्ग और शेर्वात्स्की जैसे भारतीयतत्व-विशारद धुरंधर विद्वानों को जन्म दिया।

ओल्डनवर्ग ने सिक्यांग की यात्रा कर संस्कृत और तिब्बती भाषा में लिखित संस्कृत के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का उद्धार किया। बुद्ध जीवन पर लिखी हुई आपकी पुस्तक काफी लोकप्रिय हुई है।

फ्योदार शेर्वात्स्की बौद्ध दर्शन के सुप्रसिद्ध विद्वान् हो गये

हैं। वे लेनिनग्राड यूनिवर्सिटी को प्राच्यविद्या भाषा विभाग में संस्कृत साहित्य के अध्यापक रहे हैं। १९०० में मंगोलिया जाकर उन्होंने तिब्बती भाषा का अध्ययन किया और वहां के मठों की लाइब्रेरियों से बौद्ध दर्शन सम्बन्धी बहुमूल्य सामग्री का संकलन किया। धर्मकीर्ति के न्यायबिन्दु का अध्ययन कर उन्होंने बौद्ध न्यायशास्त्र पर दो भागों में पांडित्यपूर्ण ग्रन्थ की रचना की। बौद्ध दर्शन सम्बन्धी और भी अनेक विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ आपने लिखे, जिनका अंग्रेजी, जर्मन और फ्रेंच भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

१९१० में उन्होंने भारत की यात्रा की, तथा बम्बई, कलकत्ता और दक्षिण भारत का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने प्राचीन विद्या के केंद्र बनारस में कई मास व्यतीत किये। वे धाराप्रवाह संस्कृत बोल सकते थे। काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् रामहरन भट्टाचार्य के साथ उन्होंने न्याय-वैशेषिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में चर्चा की। अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की पांडुलिपियां भी वे भारत से अपने साथ ले गये।

यद्यपि रूसी भाषा भारत-यूरोपीय वर्ग में सम्मिलित नहीं है, लेकिन उसका सम्बन्ध संस्कृत-ईरानी भाषा वर्ग से है, और इसलिए संस्कृत के वह बहुत समीप है। यूरोप के विद्वानों ने ग्रीक, लैटिन और जर्मन आदि भाषाओं के सम्बन्ध पर जोर दिया है, किन्तु संस्कृत का जितना गहरा सम्बन्ध स्लाव भाषाओं से है, उतना यूरोप की किसी भी भाषा से नहीं है। स्लाव भाषाएं संस्कृत और ईरानी के साथ 'शतम्' वंश की मानी गयी हैं।

उदाहरण के लिए, वोद (पानी, संस्कृत में उदक), द्वोर

(आंगन, संस्कृत में द्वार), प्रावदा (सत्य, संस्कृत में प्रवद), ब्रात (भाई, संस्कृत में भ्राता), त्रि (तीन, संस्कृत में त्रि), चतिरि (चार, संस्कृत में चतुर), द्वा (दो, संस्कृत में द्वौ), वाम् (तुमको, संस्कृत में वां) ग्रीवा (गर्दन, संस्कृत में ग्रीवा), एस्त् (है, संस्कृत में अस्ति), स्नोखा (पुत्रवधु, संस्कृत में स्नुषा) आदि कितने ही शब्दों को लिया जा सकता है जो संस्कृत और रूसी भाषाओं में एक-जैसे हैं; संस्कृत और रूसी में मूल धातुओं की समानता, धातुओं और शब्दों के रूपों का समान क्रम तथा उपसर्ग और प्रत्ययों की सदृशता आदि से भी दोनों भाषाओं की एक-दूसरे की निकटता सिद्ध होती है। ईस्वी सन् की १०वीं शताब्दी तक रूसी लोग 'स्वर्ग' (सूर्य देवता), 'मोक्ष' (नदी की देवी), परुन अथवा वरुन (आकाश देवता), तथा 'होर्स' अथवा 'होर्श' (हर्ष, सुख का देवता) में विश्वास करते थे—इससे भी भारत और रूस के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।

रूसी क्रान्ति के उत्तरकलीन युग में भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन के सम्बन्ध में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। अब तक रूसी विद्वानों का ध्यान भारत के प्राचीन साहित्य संस्कृत पर ही केंद्रित था, लेकिन अब भारत के समसामयिक साहित्य के प्रति विद्वानों की अभिरुचि बढ़ी। १६४७ में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद तो सोवियत संघ में भारतीय आधुनिक भाषाओं और साहित्य के माध्यम से भारतीय जनजीवन को जानने और समझने की जिज्ञासा और भी बलवती हो उठी।

विश्व-कवि रवींद्रनाथ टैगोर के शतवार्षिक उत्सव-समारोह पर मास्को के उपन्यासों के राज्य प्रकाशन गृह की ओर से टैगोर की रचनाओं को १२ भागों में प्रकाशित करने की योजना कार्यान्वित की गयी। इन रचनाओं का बंगला से रूसी में अनुवाद किया गया। जनवरी, १९६४ तक टैगोर की १२४ रचनाओं का रूस की २२ भाषाओं में अनुवाद किया जा चुका है और इनकी ४१ लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित की गयी हैं !

हिन्दी लेखकों में मुंशी प्रेमचन्द खूब लोकप्रिय हैं। उनके 'सोजे वतन' नामक कहानी-संग्रह का—जिसे अंग्रेजी राज्य में जब्त कर लिया गया था—रूसी में अनुवाद हो चुका है। इसके सिवाय, उनकी गोदान आदि १६ रचनाओं की ८ लाख प्रतियां प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी के अन्य लेखकों में सुमित्रानन्दन पंत, निराला, बच्चन, दिनकर, यशपाल, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, वृन्दावनलाल वर्मा, अमृतलाल नागर, रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन, उपेन्द्रनाथ अश्क, विष्णु प्रभाकर, नागार्जुन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, मार्कण्डेय आदि लेखकों के नाम उल्लेखनीय हैं जिनकी रचनाएं रूसी में अनूदित हुई हैं।

भारतीय भाषाओं के अन्य लेखकों में शरत्चन्द्र चटर्जी, बंकिमचन्द्र चटर्जी, वल्लतोल, सुब्रह्मण्यम भारती, आर० के० नारायन, पदमैपिल्लम, तकाज शिवशंकर पिल्लई, गुरुजादा अप्पाराव, मुल्कराज आनन्द, मुहम्मद इकबाल, नजरुल इस्लाम, ख्वाजा अहमद अब्बास, अली सरदार जाफरी, कृष्णचन्दर, भवानी भट्टाचार्य, अमृता प्रीतम आदि के नाम उल्लेखनीय हैं जिनकी रचनाओं का रूसी अनुवाद किया गया है। इस सूची

में महात्मा गांधी की आत्म-कथा, पंडित नेहरू की भारत की खोज, डाक्टर राजेंद्र प्रसाद की आत्मकथा, तथा डाक्टर राधाकृष्णन् की भारतीय दर्शन आदि पुस्तकें जोड़ी जा सकती हैं।

आधुनिक भारतीय भाषाओं के इतिहास के अध्ययन के प्रति भी सोवियत विद्वानों ने काफी दिलचस्पी दिखायी है। शिवदान सिंह चौहान की 'हिन्दी के अस्सी वर्ष', एहतेशाम हुसैन की 'उर्दू साहित्य का इतिहास', तथा गोपाल हल्दार की 'बंगाली साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तकों के रूसी अनुवाद हो चुके हैं। इगोर डी० सेरेव्याकोव ने पंजाबी-साहित्य पर निबन्ध लिखा है। कोशों में रूसी-हिन्दी और रूसी-उर्दू कोशों के अलावा, रूसी-बंगाली, रूसी-तमिल, रूसी-मराठी आदि कोशों के नाम लिये जा सकते हैं।

१९६४ में दिल्ली में जो प्राच्य-विद्या विशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस भरी थी, उसमें वाई० एम० जुकोव के नेतृत्व में सोवियत संघ के ३६ विद्वानों ने भाग लिया था। इन विद्वानों ने जो अपने विद्वत्तापूर्ण लेख पढ़े, उनमें से कुछ के शीर्षक हैं—'पुरानी बंगाली में कारक-व्यवस्था', 'अखिल भारतीय साहित्यिक प्रक्रिया की तुलना में हिन्दी साहित्य के मर्यादीकरण की समस्याएं', 'लेनिनग्राड के संग्रह में लघुचित्र', 'उजबेकिस्तान में रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं का अध्ययन', 'कुणाल की कथा तथा अप्रकाशित अशोकावदानमाला की हस्तलिखित प्रति', 'भारत के इतिहास की कुछ समस्याएं' आदि।

ग्रिगोरी को तोव्स्की ने 'भारत की जातियां' नामक एक

में ही मिलने आये। इनमें से कुछ लोग मास्को रेडियो के हिन्दी-उर्दू विभाग में या हिन्दी पुस्तकों के प्रकाशन विभाग आदि में काम करते हैं। उर्दू पुस्तकों के प्रकाशन का काम कम किया जा रहा है, इसलिए उर्दू विभाग में काम करने वाले लोग कुछ समय के लिए रेडियो में काम करने लगे हैं। इन लोगों को दो वर्ष में एक बार हिन्दुस्तान जाने की छुट्टी मिलती है—आने-जाने का किराया मुफ्त मिलता है। कुछ ने रूसी लड़कियों से शादी कर ली है। कुछ लोग अपने हिन्दुस्तानी परिवार के साथ रहते हैं। उनके बाल-बच्चे रूसी बच्चों के साथ स्कूल वगैरह में शिक्षा पाते हैं। विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले हिन्दुस्तानी विद्यार्थी और स्थानीय फर्मों में काम करने वाले टैक्निशियन्स आदि भी काफी संख्या में यहां रहते हैं।

लोग खूब खाते-पीते हैं, और अच्छे कपड़े पहनते हैं; बेरोजगारी नहीं है। नौकरी के लिए इश्तहार लगे रहते हैं और कितनी ही बार काम करने वाले योग्य आदमियों का मिलना मुश्किल होता है।

एक रूसी मित्र ने बातचीत के दौरान बताया कि सोवियत सरकार सचमुच चाहती है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लोग आपस में मेलजोल से रहें। हिन्दुस्तान के प्रति चीन का रवैया यहां के लोगों को पसन्द नहीं है। भाषा के सम्बन्ध में प्रश्न उठा कि सोवियत संघ की भांति हिन्दुस्तान भी अपनी भाषा समस्या को क्यों हल करने का प्रयत्न नहीं करता? उन्होंने बताया कि सोवियत संघ में आनेवाले हिन्दी और उर्दू के लेखक अपनी-अपनी भाषा और साहित्य की तारीफ के पुल

बांधते आते हैं। उधर बंगाली वाले अपनी ही ढपली बजाते हैं। ऐसी हालत में सोवियत के लोगों को बड़ी हैरानी होती है। वैसे यहां के लोगों का ख्याल है कि उर्दू की अपेक्षा हिन्दी का भविष्य अधिक उज्ज्वल है, इसलिए वे हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन पर अधिक जोर दे रहे हैं। मास्को, लेनिनग्राड और ताशकन्द में तो कुछ स्कूल ऐसे भी हैं जहां शिक्षा का माध्यम हिन्दी ही है।

मास्को से किसी दूर स्थान के निवासी पेंशनयाफ्ता एक वृद्ध शिरिस्तेदार के प्रश्नों से पता लगता है कि सोवियत संघ का एक सामान्य व्यक्ति हिन्दुस्तान के बारे में क्या सोचता है—

"हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई का क्या हाल है?"

"कश्मीर को आपस में दोनों बांट क्यों नहीं लेते?"

"पहले किसने आक्रमण किया? क्या हिन्दुस्तान ने?"

"हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय पेय क्या है? हम लोग बहुत पीते हैं, यह अच्छा नहीं करते?"

"वहां की सड़कें कैसी हैं? यहां की बहुत अच्छी नहीं हैं; उनमें सुधार हो रहा है।'

"हिन्दुस्तान में कितने अंग्रेज हैं? क्या वे भारत सरकार में भी शामिल हैं?"

"हिन्दुस्तान में इतने भिखमंगे क्यों हैं? जब कि चीन में नहीं हैं?"

"क्या वहां सामूहिक खेती होती है? क्या वहां जोतनेवाले किसानों को जमीन दे दी गयी है?"

"क्या हिन्दुस्तान में शाकाहार धर्म का एक अंग माना

जाता है ? क्या इसीलिए वहां के लोग शराब नहीं पीते ?"

"क्या हिन्दुस्तान के बहुत विद्यार्थी मास्को में पढ़ते हैं ?"

"क्या हिन्दुस्तान में वृद्धावस्था में पेंशन मिलने की व्यवस्था है (इन सज्जन को प्रति मास ५२ रूबल पेंशन मिलती है) ? हमारे देश में वृद्धावस्था में सबको पेंशन मिलती है। प्रोफेसर, इंजीनियर आदि को बहुत अच्छा वेतन दिया जाता है।"

इसके बाद इन सज्जन ने लिथुआनी भाषा बोलकर सुनायी। कहने लगे कि लिथुआनी संस्कृत से बहुत मिलती-जुलती है। जो कुछ उन्होंने पढ़ा, उसे सुनकर मैं निम्नलिखित रूप में लिपिबद्ध कर सका—

कम् देव्स देव जीविबु, तां विच देव माइज़ (ईश्वर ने जिसे जीवन दिया, उसे ईश्वर रोटी (माइज) भी देता है)।

इस सम्बन्ध में यह जान लेना आवश्यक है कि बाल्तो-स्लाविक भाषाएं भारत-यूरोपीय परिवार की शाखा मानी गयी हैं। बाल्तिक भाषाएं जिन देशों में बोली जाती हैं, वे बाल्तिक समुद्र के तट पर अवस्थित हैं। लिथुआनिया और लातविया नामक दो देशों की भाषाएं बाल्तिक शाखा के अन्तर्गत आती हैं। लिथुआनिया की भाषा लिथुआनी में आज भी मूल भारत-यूरोपीय भाषा की विशेषताएं विद्यमान हैं और इसमें भाषाशास्त्र की दृष्टि से अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। अत्यधिक शीत, घने जंगल, दलदल तथा व्यावसायिक साधनों के अभाव के कारण इस देश का अन्य देशों के साथ बहुत कम सम्पर्क रहा, इसीलिए सम्भवतः यहां की भाषा में कम से कम परिवर्तन

हुआ। लिथुआनी में आज भी संस्कृत की भांति द्विवचन का प्रयोग तथा वैदिक या ग्रीक की भांति उसमें स्वरों का प्रयोग होता है।

दो सप्ताह सोवियत संघ की जी-भरकर सैर की। सोवियत संघ इतना विशाल देश है कि दो सप्ताह में क्या देखा जा सकता है। फिर भी कुछ बातों की ओर लक्ष्य करने के लोभ को संवरण नहीं किया जा सकता।

(१) सबसे पहली बात भाषा सम्बन्धी है। जो लोग हिन्दुस्तान से सोवियत संघ जायें, उनके लिए रूसी का ज्ञान आवश्यक है। रूसी के अलावा, हिन्दी और उर्दू जाननी चाहिए। किसी को हिन्दी या उर्दू न आती हो तो उसकी मातृभाषा से भी काम चल सकता है। बहरहाल सोवियत रूस के लिए अंग्रेज़ी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा नहीं है।

(२) सोवियत संघ में स्वीकृत राजनीतिक पद्धति से भले ही कोई सहमत न हो, फिर भी मानना होगा कि सोवियत संघ ने समाजवादी अर्थ-व्यवस्था को स्वीकार कर वैज्ञानिक और औद्योगिक क्षेत्रों में आशातीत उन्नति की है। हिन्दुस्तान सोवियत संघ के अनुभवों से बहुत कुछ लाभ उठा सकता है।

(३) भले ही सोवियत सरकार देश की सभी समस्याओं को हल न कर पायी हो, फिर भी यहां की सामान्य जनता खुशहाल नजर आती है।

(४) लड़ाई-झगड़ा, हाथापाई, खून-खराबा, गाली-गलौज, आपाधापी देखने में नहीं आये। सब काम अनुशासनपूर्वक चलता है। मतभेदों को आपस में बातचीत करके दूर करने का प्रयत्न

किया जाता है। 'स्पशी बा' शब्द प्रायः सुनने में आता है।

(५) रूसी महिलाओं की उन्नति को देखकर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। जीवन का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जो उनसे अछूता बचा हो। सोवियत सरकार ने अपने देश की महिलाओं को हर तरह की सुविधाएं प्रदान की हैं। इसीलिए पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा भिड़ाकर काम करती हुई वे देखी जाती हैं।

(६) शिक्षा के क्षेत्र में सोवियत संघ ने खूब ही उन्नति की है। सुनियोजित शिक्षा-पद्धति होने से शिक्षितों की बेकारी का प्रश्न यहां पैदा नहीं होता। डाक्टरी चिकित्सा की भांति किंडर गार्टन से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा यहां मुफ्त दी जाती है।

(७) सड़क पार करने की शिक्षा शुरू से ही स्कूल के बच्चों को दी जाती है। इस सम्बन्ध में सड़क-पुलिस भी बहुत सावधानी रखती है। इसलिए सड़क-दुर्घटनाएं बहुत कम होती हैं।

(८) भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्ययन के क्षेत्र में यहां अभूतपूर्व कार्य हो रहा है। भारत की आधुनिक भाषाओं और साहित्य के प्रति रूसी विद्वानों में असाधारण अभिरुचि जागृत हुई है। सोवियत मित्रों से अलविदा।

तुम्हारा
जगदीशचन्द्र

❂